डा. करणीसिंह

—चन्द्रदान चारण एम ए

प्रकाशक
करणी रिसर्च इंस्टीटयूट
लालगढ़ पलेस बीकानेर

प्रथम संस्करण दिसम्बर १९८४

मूल्य बारह रुपये

मुद्रक
सांखला प्रिंटर्स बीकानेर

Dr Karni Singh *(Biography)*
By C. D Charan
Price 12 00

॥ श्री ॥

दो शब्द

बीकानर के महाराजा डा० करणीसिहजी की जीवनी प्रस्तुत है। लगभग एक युग तक महाराजा साहब के सान्निध्य में रहने से उनको निकट से देखने का अवसर मिला। पर जीवनी लिखन हेतु जो व्यापक जानकारी चाहिए थी, वह मुझे ज्ञात नहीं थी। फलस्वरूप स्वय डा० करणीसिहजी न तो पूरा सहायता एव माग-दशन प्रदान किया ही, ठा० प्रेमसिहजी ठा० आनन्दसिहजी, ठा० भीमसिहजी ठा० नारायणसिहजी आदि न भी अपना सहयोग दकर अनक नयी बाता की जानकारी दी तथा जीवनी को कलम-बद्ध करने मे सहायक बन। श्री दलीपसिहजी एव श्री मानसिहजी के सहयोग के बिना जीवनी का वतमान स्वरूप नही बनता। मैं इन सभी के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। जीवनी कैसी बन पडी है, इसका निणय तो सुधी पाठक ही करेंगे।

चन्द्रदान चारण
१९८०

अनुक्रमणिका

श्री करणी जी, बीकानेर के राज्य कुल की इष्ट देवी।

बीकानेर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कहा जाता है कि राजस्थान के उत्तरी व पश्चिमी भाग में कभी सागर लहराता था। इस क्षेत्र मे प्रद्ध पाषाण रूप मे परिवर्तित शख, सीप आदि के मिलने से भी यही सिद्ध होता है कि वहाँ कभी समुद्र था। प्राकृतिक कारणो से समुद्र का जल वहाँ से हट गया और रेतीली धरती निकल आयी। इस सम्बन्ध म आदिकवि वाल्मीकि ने लिखा है —[1]

"लका पर आक्रमण करने हेतु राम ने समुद्र से मार्ग माँगा पर उसके ध्यान न देने पर उन्होने अग्नि बाण चढाया। यह देख सागर ने क्षमा माँगते हुए उस अस्त्र को द्रुम कुल्य नामक उत्तरी भाग पर चलाने की प्रार्थना की। राम ने ऐसा ही किया। फलस्वरूप आग्नेयास्त्र के प्रभाव से द्रुम कुल्य का पानी सूख गया और वहाँ पर मरुदेश की उत्पत्ति हुई।'

प्राचीनकाल मे यह क्षेत्र जल मग्न था, इस तथ्य का अन्य कई विद्वानो ने भी समर्थन किया है। श्री राम किशन बरुआ[2] ने लिखा है— 'प्रागैतिहासिक युग म राजस्थान का अधिकतर भाग समुद्र के गर्भ में था।'' पर इस बात के भी प्रमाण मिलते हैं कि वर्तमान राजस्थान के उत्तरी पश्चिमी भाग मे ऋग्वेद काल म आर्य बसे हुए थे।[3] यहाँ सरस्वती नदी बहती थी और तट वासी ऋषियो ने वैदिक ऋचाओं से उसके किनारे को ध्वनित किया था। यही कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का मत्र गूँजा था जिसने दूर दूर तक आर्य सस्कृति के सन्देश को प्रचारित व प्रसारित किया।

राजस्थान में गगानगर के समीप काली बगा नामक स्थल से खुदाई कराई गई है। इसके द्वारा हडप्पा सभ्यता के पहले की सस्कृति का यहाँ पता चला है।[4]

महाभारत काल में यहाँ पर कौरवो का अधिकार था और यह क्षेत्र जांगल' कहलाता था—

---

१ वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड, सर्ग २२

२ राजस्थान स्टैण्डर्ड कलकत्ता [दीपावली विशेषांक २५ १०-७३] मे राजस्थान की सास्कृतिक धरोहर' शीर्षक लेख

३ डी सी जोसेफ गजेटियर ऑफ बाडमेर पृ० २१

४ ब्रज भारती मथुरा वर्ष २८ अक १ पृ० १९

'पश्य राज्य महाराज ! कुरवस्ते सजाङ्गला ।'[1]
'कच्छ-गोपालकक्षाश्च जाङ्गला कुरुवणका ।'[2]

उस समय द्वारका से इन्द्रप्रस्थ आने जाने का मार्ग जागल देश मे होकर था। सुभद्रा हरण के बाद अर्जुन ने इसी जागल प्रदेश में उससे विधिपूर्वक विवाह किया और इसकी स्मृति मे 'सुभद्रार्जुन' नाम का नगर बसाया।[3] यह अपभ्रंश होकर 'भाद्राजुन' कहलाता है।[4] विवाह की स्मृति म अर्जुन द्वारा सुभद्रार्जुन नगर बसाने की पुष्टि वही से प्राप्त एक प्राचीन शिलालेख से होती है।[5] बीकानेर से २४ मील दक्षिण मे जागलू नामक प्रदेश मे जागलू नामक एक स्थान है। कहा जाता है कि चौहान सम्राट पृथ्वीराज की रानी अजादे (अजयदेवी) दहियाणी न यह स्थान बसाया था। बाद मे साखलो ने इस पर अधिकार कर लिया और यहाँ एक किले का निर्माण करवाया जिसके प्राचीन अवशेष अब भी विद्यमान है।[6] 'करनी चरित्र'[7] के अनुसार यह जागलू ही प्राचीन काल के जागल-दश की राजधानी जागल' था। फलस्वरूप बाद मे बीकानेर के शासको को भी 'जागल देश के स्वामी' कहा जाने लगा।

महाभारत काल के बाद मौयवश की स्थापना तक इस प्रदेश का इतिहास ज्ञात नही है। श्री गोविन्द अग्रवाल का कहना है कि इस भू भाग पर चन्द्रगुप्त-मौय व अशोक का शासन था एव यह प्रदेश मौय साम्राज्य का एक अग था।[8] इसके बाद कुषाण वशी राजा कनिष्क का अधिकार इस प्रदेश पर रहा।[9] इसी कनिष्क ने सन् ७८ मे शक सम्वत् चलाया, जो आज भी प्रचलित है। उसके सिक्को से विदित होता है कि वह शिव का उपासक था[10], यद्यपि बाद मे उसका झुकाव बौद्ध मत की ओर हो गया था। ईसा की चौथी शताब्दी की रगमहल स

१ महाभारत उद्योगपर्व अध्याय ५४ श्लोक ७
२ महाभारत भीष्मपर्व अध्याय ९ श्लोक ५ ६
३ श्री सूर्यशकर पारीक सिद्ध-चरित्र पृ २
४ यह गाव जोधपुर मण्डल में है
५ डा किशोरसिंह बाहस्पत्य करनी-चरित्र पृ २
६ डा० गौरीशकर हीराचद ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास प्रथम खण्ड पृ ५४-५५
७ डा० किशोरसिंह बाहस्पत्य करनी चरित्र पृ ३
८ श्री गोविन्द अग्रवाल चूरु मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास पृ० २७ २८
९ प० विश्वेश्वरनाथ रेउ-मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ० ४
१० गौरीशकर हीराचद ओझा राजपूताना का इतिहास जिल्द १ पृ० १११ १२

प्राप्त एकमुखी शिवलिंग या उमा माहेश्वर की मूर्तियां इस क्षेत्र मे प्रचलित तत्कालीन शिवोपासना की ओर सकेत करती हैं।[1]

कुषाण वंशियो के पीछे सभवत शक जाति के पश्चिमी क्षत्रियों का इस प्रदेश पर अधिकार रहा।[2] महाक्षत्रप रुद्रदामन् के गिरनार के लेख से पाया जाता है कि क्षत्रियो मे वीर का खिताब धारण करने वाले यौधेयो को उसने नष्ट किया था। ओझा जी के अनुसार यौधेय से ही जोहिया शब्द बनता है तथा भूतपूर्व बीकानेर राज्य के कुछ भाग मे भी पहले जोहियो का ही निवास था।[3] रुद्रदामन् के के बाद गुप्तवंशी सम्राट् समुद्रगुप्त ने यौधेयो को अपने अधीन किया था। नागौर से लगभग २४ मील उत्तर पश्चिम मे दधिमती देवी के मन्दिर से मिले शिलालेख,' जो गुप्त सवत २८९ (वि स ६६४) का है, से यही सिद्ध होता है कि इस प्रदेश के कुछ भाग पर गुप्त राजाओं का अधिकार भी रहा होगा।[4]

गुप्त-काल में ही पश्चिमी उत्तर भारत की ओर से हूण आक्रमण आरम्भ हो गये थे। सम्राट् स्कन्दगुप्त ने हूणो को बुरी तरह पराजित किया।[5] पर हूणो के प्रबल दल निरन्तर आते रहे और अन्तत एरण की लडाई मे गुप्त हूणो से हार गये।[6] गुप्त-साम्राज्य के पश्चिमी भागो पर हूणो का अधिकार हो गया। राजस्थान मे हूणो ने बडा विनाश किया। उन्होने रगमहल, बडोपल तथा पीर सुलतान की थेडी (सभी गगानगर जिले मे) के मन्दिरो को निर्दयतापूर्वक नष्ट कर दिया।[7] मालवा के वीर यशोधमन ने हूण राजा मिहिर कुल को पराजित किया। यद्यपि कई हूण भारत से चले गये, पर बहुत से हूण राजस्थान मे बस गये। टॉड ने राजस्थान के ३६ राजकुलो मे हूणो की गणना की है।

प्रतिहारों का इस प्रदेश पर राज्य रहा या नही, इस विषय मे निश्चित रूप से कुछ भी नही कहा जा सकता। पर इसमे कोई सन्देह नही कि जोहियों, चौहानो, साँखलो (परमारो) भाटियो तथा जाटो का इस क्षेत्र पर अवश्य अधिकार रहा।

---

१ स० डा० कन्हैयालाल शर्मा—बीकानेर का हिन्दी साहित्य भूमिका पृ० ३

२ श्री गोविन्द अग्रवाल चूरू मण्डल का शोधपूर्ण इतिहास पृ० २९

३ गौरीशकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, पृ० २२ २३ की पाद टिप्पणी

४ प० विश्वेश्वरनाथ रेउ मारवाड का इतिहास प्रथम भाग पृ० ५

५ वासुदेव उपाध्याय गुप्त साम्राज्य का इतिहास पृ ११२-११५

६ डा० दशरथ शर्मा राजस्थान थ्रू दि एजेज जिल्द १ पृ ६१

७ डा० दशरथ शर्मा राजस्थान थ्रू दि एजेज जिल्द १ पृ ६१

जोहिये

इनकी कुछ चर्चा ऊपर की जा चुकी है। इनका सम्बध 'यौधेयो' से है जो भारत की प्राचीन क्षत्रिय जाति है। आरम्भ में ये लोग पजाब मे रहते थे। सतलज नदी के दोनो किनारो का कुछ प्रदेश अभी भी जोहिया-वार कहलाता है। राजस्थान के उत्तरी भाग पर भी इनका अधिकार था। राव बीका के बढते हुए प्रताप के समक्ष जोहिये नत-मस्तक हो गये। तभी से इस क्षेत्र के जोहियों की भूमि बीकानेर रियासत के अ तगत आ गयी।

चौहान

क्षत्रियो के ३६ वशों के सम्ब ध म यह दाहा प्रसिद्ध है —

दस वि तें दस चद तें, द्वादश ऋषि प्रमाण।
चार हुताशन सो भये, वस छत्तीस बखान॥

चौहानो को कोई सूयवशी, कोई च द्रवशी तथा कोई अग्नि-वशी मानते है। डा दशरथ शर्मा न बिजोलिया के शिलालेख के आधार पर बताया है कि प्रथम चौहान राजा अहिच्छत्रपुर का व स गोत्री विप्र अर्थात ब्राह्मण था।[1] चौहानो की मुख्य शाखाए २४ मानी जाती हैं।[2] पर इनम सबसे प्रसिद्ध सपाद लक्षीय चौहान हुए। ओझा जी क अनुसार चौहानो की पुरानी राजधानी नागोर (अहिच्छत्रपुर) थी।[3] सपादलक्षीय शाखा म ही पृथ्वीराज चौहान हुए जो भारत के अ तिम हि दू सम्राट माने जाते हैं। पृथ्वीराज रासो म इ ही की शौर्य गाथा है। भूतपूर्व बीकानेर रियासत के इलाके में चौहानो के कई शिला लेख और सिक्के मिले है। इनसे विदित होता है कि इस प्रदेश पर कभी चौहाना का शासन था। चौहानो की एक शाखा मोहिल है। छापर तथा द्रोणपुर के निकटवर्ती क्षेत्र पर मोहिलो का अधिकार होन के कारण इसे मोहिलवाटी कहा जाता था। राव जोधा और बीका के समय राठोडों के मोहिलो से कई युद्ध हुए। आपसी फूट के कारण अ त म मोहिल हार गये। राव बीका ने मोहिलवाटी विजय कर वह इलाका अपने भाई बीदा को दे दिया।

---

१ डा० दशरथ शर्मा क्याम खां रासो टिप्पणी पृ १०९

२ नैणसी मु हुता नणसी री ख्यात (स० बदरी प्रसाद साकरिया) भाग १ पृ ८९

३ डा० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास पहला भाग पृ ७०

साँखले [परमार]

इनके लिए वि स १३८१ के एक सस्कृत शिलालेख मे शखु कुल' शब्द का प्रयोग किया गया है ।[1] साँखलो की एक शाखा पहले रुण [जोधपुर सभाग] मे थी । बाद म ये लोग जागलू के इलाके मे रहने लगे और वहाँ अधिकार कर लिया । साँखलो के नाम से बसाये कई गाँव यहाँ हैं । बाद मे जब मुसलमानो के इस क्षेत्र पर हमले होन लगे तो असमथ होकर नापा साँखला राठोडो की शरण गया और बीका को नये राज्य की स्थापना मे तत्पर देख जागलू ले आया । जब जागलू पर बीका का अधिकार हो गया तो नापा ने उसका अधीनता स्वीकार कर ली ।

भाटी

भूतपूव बीकानर रियासत का पश्चिमोत्तर भाग राव बीका की राज्य स्थापना से पूव भाटियो के अधिकार म था । यह क्षेत्र जेसलमेर से आरम्भ होकर पजाब तक फैला हुआ था । भाटियो की राजधानी पूगल थी । राव बीका के समय वहा का शासक शेखा था । भटनेर (वतमान हनुमानगढ) के आसपास मट्टी मुसलमानो का अधिकार था । जब राव बीका ने कोडमदेसर म किला बनाना आरम्भ किया तो भाटियो ने इसका विरोध किया । करणीजी ने राव शेखा की कन्या से बीका का विवाह करा दिया था, अत उनके आदेशानुसार राव शेखा भाटियो की मदद मे लडने नही आया ।[2] फलस्वरूप भाटी हार गये । बीका की निरन्तर सफलताओ से प्रभावित होकर राव शेखा भी उसके अधीन हो गया तथा पूगल का इलाका बीकानेर राज्य म आ गया ।

जाट

जाट जाति की उत्पत्ति के बारे मे विद्वानो म बहुत मतभेद है । रिपोट मदु मशुमारी मारवाड[3] के अनुसार महादेव जी की जटा से जाट जाति के मूल-पुरुष की उत्पत्ति हुई । एक अन्य मत के अनुसार जाट और गूजर, शक (सिथियन) और हूणों के वशज हैं ।[4] इवटसन की मान्यता है कि जाट गूजर और राजपूत एक ही नृवश से सबध रखते है ।[5] पर जाट जाति को लोग राजपूत नही

---

१ डा० गौरीशकर हीराचद ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास पहला भाग पृ ७२
२ श्री किशोरसिंह बार्हस्पत्य–करनी चरित्र पृ १३३
३ रिपोट मदु मशुमारी मारवाड पृ ४७-४८
४ ताराचन्द-भारतीय स्वतत्रता आन्दोलन का इतिहास प ८५
५ ताराचन्द भारतीय स्वतत्रता आन्दोलन का इतिहास प ८५

मानते और न राजपूतो के साथ उनके कही वैवाहिक सबध ही पाय जाते है। पजाब मे इन लोगो को प्राय जिट कहा जाता है। टॉड का कथन है कि जिट (जाट) मुलतान के सीमाप्रदश मे रहते थे। ई सन् १०२६ मे जब महमूद गजनवी ने उन पर आक्रमण किया तो व हार गये और भागकर बीकानेर के क्षेत्र मे जाकर बस गय।[1] बाद म जब चौहान साम्राज्य का पतन हुआ तो अय कोई शक्तिशाली सत्ता न होन के कारण जाटो ने इस भू भाग पर अपने जनपद कायम कर लिये। डा० देशराज न अपने बृहद् जाट इतिहास' म जाट जाति की उत्पत्ति जाट-मीमासा एव जाट राज्य आदि के सम्बध मे विस्तार से लिखा है।[2] पर इसम ऐतिहासिक तथ्यो की ओर विशेष ध्यान नही रक्खा गया। फलस्वरूप उसमे इन जाट जनपदो के बारे मे प्रामाणिक जानकारी नही है।

दयालदास[3] के अनुसार बीकानर सभाग मे राठौडो के आने से पहले यहा जाटो के ७ मुख्य जनपद इस प्रकार थे —

नाम शाखा	नाम मुखिया	राजधानी	गाँवो की सख्या
गोदारा	पाडू	शेखसर व लाधडिया	३६०
सोहाग	चोखा	सूई	१४०
सोहुवा	अमरा	धाणसिया	८४
सारण	पूला	माडग	३६०
बेणीवाल	रायसल	रायसलाणा	३६०
कसवा	कवरपाल	सीधमुख	३६०
पूनिया	कान्हा	बडी लू दी	३६०

जाट इतिहास मे इनके अतिरिक्त भादू, भूकर, चाहर जाखड आदि शाखाओं का भी उल्लेख है। सारणपूला की पत्नी मलकी को लेकर उसका गोदारा जाट पाडू से झगडा हो गया। इसमे राव बीका न पाडू का समथन किया तथा पूला के समथक नरसिह को मार डाला। शेष जाट डर कर भाग गये। अत में उन्होंन राव बीका की अधीनता स्वीकार कर ली।[4]

बीकानेर की स्थापना करने वाले राव बीकाजी से लेकर सन् १९४९ म बीकानेर के राजस्थान में विलय तक इस क्षेत्र पर राठौडों का शासन रहा।

---

१ कनल जम्स टॉड दि अनल्स एण्ड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान भाग १ पृ १०८

२ डा देशराज—जाट इतिहास

३ दयालदास—दयालदास की ख्यात

४ डा गौरीशकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास

पूर्वज

दादो सा महाराजा गगासिह जी

थारो रुडो रूप, एकर जिण देरयो निजर ।
सो किम भूलै भूप, बो राठोडी तेज तप ॥

महाराजा गगासिह जी बहादुर का ज म वि स १६३७ आसोज सुदी १० (१३ अक्टूबर सन् १८८०) को हुआ था। जिस समय महाराजा गगासिह जी का जन्म हुआ और उसकी सूचना तत्कालीन बीकानेर नरेश महाराजा श्री डूगरसिह जी को दी गयी तो उस समय एक ज्योतिषी सभासद वहाँ उपस्थित थे। उन्होने तुरन्त कहा कि महाराजा लालसिह जी के पुत्र का ज म नही हुआ बल्कि बीकानेर के भावी राजा का ज म हुआ है।[1] आप ७ वष की छोटी उम्र मे बीकानेर के राज्यसिंहासन पर बैठे। २ फरवरी सन् १६४३ को प्रात ५-२५ पर अपने बम्बई के निवास स्थान पर आपका स्वगवास हुआ।

महाराजा गगासिह जी उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ व योद्धा, कुशल एव योग्य प्रशासक, प्रजा हितैषी, याय एव व्यवस्था प्रिय, दूरदर्शी व महान् देशभक्त नरेश थे। उनका व्यक्तित्व भव्य तथ प्रभावशाली था। डा ओझा ने लिखा है,[2] "महाराजा का वण गेहुआ कद ऊचा, वक्षस्थल चौडा, बाहु विशाल और शरीर बलिष्ठ है। इनकी मुख-मुद्रा से राजपूती शौय की आभा प्रकट होती है। य बड प्रभावशाली पुरुष हैं। एक बार जो कोई भी इनसे मिल लेता है, उस पर इनका प्रभाव पडे बिना नही रहता। यूरोप आदि के धुरधर राजनीतिज्ञो पर भी महाराजा के व्यक्तित्व की गहरी छाप जम गयी है और भारतीय नरेशो मे तो ये महान् राजनीतिज्ञ बलिष्ठ योद्धा और निर्भीक व्यक्ति माने जाते है। नरेशो मे बहुधा जो दुव्यसन पाये जाते है, उनसे ये सवथा मुक्त रह है। इनको यदि कोई व्यसन है तो वह यही कि य सदा राज्य-काय और सिपहगिरी मे तल्लीन रहते हैं और राज्य की उन्नति को ही अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य समझते हैं।"

पूव की आस्तिकता और पश्चिम के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का उनम अद्भुत सम वय था। पश्चिम की अच्छी बातो को ग्रहण करने का उ होने सदा समथन

---

१ सत्य विचार दिनाक २३ १ १९६९ ठा जसव तसिहजी दाऊन्सर का भाषण (स्व महा-राजा श्री गगासिहजी जय ती समारोह पर)

२ डा गौरीशकर हीराच द ओझा—बीकानेर राज्य का इतिहास दूसरा भाग पृ ६१४

किया। दिनांक २४ ४ १६१७ को लदन मे भाषण देते हुए उन्होने कहा [1] हम भारतीय मूख होगे, यदि इस देश मे आपके राजनतिक जीवन मे जो कुछ अच्छा है उसकी ओर गहरा ध्यान नही देंगे। यह और भी मूखता होगी यदि हम आपके राष्ट्रीय जीवन की अच्छी बातों को समझने के बाद भी जो कुछ आपकी सस्थाओ तथा प्रणाली मे अच्छाइया हैं, उनको हमारी परिस्थितियो के अनुसार हृदयगम करना नही चाहेगे।" इग्लण्ड के तत्कालीन प्रधानमत्री श्री लायड जार्ज तो महाराजा गगासिह जी से इतने अधिक प्रभावित हुए कि उन्हें 'पूरब के बुद्धिमान् श्रेष्ठ पुरुषो मे से एक[2] माना। भारत के तत्कालीन राज्य सचिव श्री आस्टिन चेम्बरलेन महाराज गगासिहजी की राजनीतिज्ञता से इतने प्रभावित हुए कि उन्होने उनसे भारत की समस्त महत्वपूण समस्याओ पर न्योरेवार विवरण लिखने का अनुरोध किया। इग्लैंड से भारत लौटते समय राम म उन्होने अपने विश्राम को त्याग कर अविलम्ब इस विषय पर एक नोट लिखकर ता १५ ५ १६१७ को श्री चेम्बरलेन को भेज दिया। यह नोट 'रोम नोट' के नाम से विख्यात हुआ। इसमे महाराजा ने भारत को स्वराज्य प्रदान करने का आग्रह करते हुए लिखा[3] इसमे विलम्ब करने स कोई प्रयोजन सिद्ध नही होगा। इसके विपरीत स्वराज्य प्रदान कर देने के अत्यन्त हितकारी परिणाम होगे तथा असन्तोष व आतक दूर हो जायेंगे। अत इन बातों को ध्यान मे रखते हुए यह और भी अधिक आवश्यक हो जाता है कि स्वराज्य की घोषणा तत्काल कर दी जानी चाहिए

इस प्रकार के निर्भीक शब्दो से भारतीय स्वतत्रता सग्राम के नेता, जिन्होने एक भारतीय नरेश से इतने दढ समथन की कदापि आशा नही की थी तथा इसी प्रकार साम्राज्य के समथनकारी लोग भी जो विश्वास करते थे कि कम स कम भारतीय नरेश भारत मे स्वराज्य का इतना प्रबल पक्षपोषण कदापि नही करेगा, दोनो स्तम्भित रह गये। यहाँ तक कि राष्ट्रवादी समाचार पत्रो ने भी इसको 'एक नूतन युग का अरुणोदय" कह कर उचित रूप से इसका अभिवादन किया।[4]

महाराजा गगासिह जी उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ थे। प्रथम विश्व युद्ध के बाद पेरिस मे जो सधि सम्मेलन हुआ उसमे वे भारत के प्रतिनिधि के रूप मे भेजे

---

१ (क) बीकानेर महाराजा के निजी सचिव के कार्यालय की फाइल सख्या २२७८/२६
(ख) द ग्राय आफ पोलिटिकल फोर्सेज इन इडिया पृ ६ भाग २ बी
२ पनीकर हिज हाइनेस द् महाराजा आफ बीकानेर ए बायोग्राफी पृ १७७
३ रोम नोट पृ ११
४ डा करणीसिह बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध पृ २५४

गय और उन्होंने संधि-पत्र पर इसी हैसियत से हस्ताक्षर किये। इसी प्रकार राष्ट्र संघ के अधिवेशन में पहली बार वे देशी नरेशों के प्रतिनिधि के रूप में सन् १९२४ में और दूसरी बार सितम्बर १९३० के अधिवेशन में नेता रूप में समस्त भारत का प्रतिनिधित्व किया। भारत के देशी राजाओं ने जब अपनी सभा 'नरेन्द्र मंडल' का गठन किया तो महाराजा गंगासिंह जी ही उसके सर्वप्रथम चांसलर बनाये गये। वे लगातार तीन बार चांसलर चुने गये।

भारत की भावी शासन पद्धति पर विचार-विमर्श करने हेतु नवम्बर १९३० में इंग्लैंड में गोलमेज सम्मेलन बुलाया गया। ता० १७ नवम्बर १९३० को सम्मेलन के पूर्णाधिवेशन में सर तेज बहादुर सप्रू ने भारत की ओर से वाद आरम्भ किया तथा भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने के पक्ष में अत्यन्त शक्तिशाली तर्क प्रस्तुत किये। ठीक इसके बाद भाषण देते हुए महाराजा गंगासिंह जी ने कहा[1] " राजा लोग भारतीय हैं तथा वे लोग अपने देश की उन्नति के पक्ष में हैं और समस्त भारत की अधिकतम समृद्धि एवं संतुष्टि में भाग लेने की व उसमें अपना योगदान करने की इच्छा रखते हैं।" महाराजा के भाषण को सुन कर लोग बहुत प्रभावित हुए। श्री तेज बहादुर सप्रू ने आकर उनसे हाथ मिलाया और कहा,[2] "यह बड़े गौरव की बात है कि हमारे देश में आप जैसा नरेश है। पर राजघराने में जन्म लेकर आपने हमारे व्यवसाय को पीछे छोड़ दिया है। जब हमारा देश स्वतन्त्र होगा तो आप हमारे प्रथम राष्ट्रपति होंगे।" महाराजा गंगासिंह जी ने मुस्कराते हुए प्रेम से अपना हाथ सर तेज बहादुर सप्रू के कन्धे पर रखा और कहा, "जब देश स्वतन्त्र होगा तो मुझे बड़ी खुशी होगी। उस समय मैं निश्चय ही सोचूंगा कि क्या मैं रक्षा विभाग स्वीकार करूँ।"

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी प्रमुख भारतीय राजनीतिक पार्टी द्वारा प्रथम गोलमेज सम्मेलन में सम्मिलित होने से इंकार कर देने का महाराजा गंगासिंह जी को खेद था, अतः द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में कांग्रेस के भाग ग्रहण को सुनिश्चित करने के लिए महाराजा ने प्रत्येक कदम पर भरसक प्रयत्न किये। १० जून १९३१ को महात्मा गांधी महाराजा से भेंट करने बम्बई में महाराजा के निवास स्थान 'देवी-भवन' गये तथा दोनों ने देर तक स्पष्ट ढंग से बातचीत की। इसी बातचीत के मध्य में महाराजा ने गांधी जी की इंग्लैंड यात्रा के

---

१ गोलमेज सम्मेलन के पूर्णाधिवेशन में महाराजा गंगासिंह का भाषण ता० १७-११-१९३०, गोलमेज सम्मेलन के पूर्णाधिवेशन की कार्यवाहियां १९३०-३१ पृ ३१ ३२

२ ठा भीमसिंहजी के अपने पिता साडवा राजा जोवराजसिंहजी से सुने विवरण के आधार पर

लिए अपनी देख-रेख में उचित व्यवस्था करने की इच्छा व्यक्त की और गांधी जी ने विनोद में महाराजा को वाष्प पोतो का रसदपूरक कहा। बाद में गांधी जी की इग्लैंड यात्रा का प्रबन्ध 'मुलतान' नामक जलयान की पीछे की छत पर, गांधी जी की पाकशाला के लिए विशेष सुविधा के साथ, वस्तुतः महाराजा के हाउस-होल्ड विभाग द्वारा ही किया गया।[1]

महाराजा गगासिंह जी गोपाल कृष्ण गोखले के गहरे मित्र थे। महाराजा ने वाइसराय तथा इस महान राष्ट्रीय नेता के बीच निकट सम्पर्क तथा अधिक सद्भाव बढ़ाया।[2] भारत की राष्ट्रीय प्रगति के लिए महाराजा की यह सेवा शानदार थी।

जब श्री जयनारायण जी व्यास को जोधपुर रियासत से निष्कासित कर दिया गया और महाराजा गगासिंह जी को उनकी विषम आर्थिक स्थिति का पता चला तो उन्होंने जोधपुर के तत्कालीन मुख्य मंत्री सर डी एम फील्ड को एक गोपनीय पत्र लिखा। २१-२-१९३७ को लिखे गये इस पत्र से महाराजा गगासिंह जी की दूरदर्शिता, उदारता और गुण ग्राहकता का पता चलता है। पत्र के कुछ अंश इस प्रकार हैं यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे सार्वजनिक जीवन में अत्यधिक असहिष्णुता है। इसी कारण श्री जयनारायण व्यास के लिए यह विश्वास करना कभी सभव नहीं हुआ कि उसके विरोधी भी उसके समान ही सच्चे और देशभक्त हो सकते हैं। यदि मैं यह बात कहूं कि यद्यपि श्री जयनारायण व्यास और उसके साथी सामान्य रूप से राजाओं के और विशेष रूप से मेरे विरुद्ध हलचलकारी बिना सोचे समझे और भद्दा प्रचार करते हुए बहुत कड़ा और जबरदस्त प्रहार करते रहे हैं तो भी श्री व्यास के प्रति मेरे हमेशा स्पष्ट रूप से उच्च विचार रहे है तो बहुत कम राजनीतिज्ञ इस पर विश्वास करेंगे।

सर डोनाल्ड ! मैं आपको बता दूं कि इन सर्वहारा उपद्रवियों के सामने न तो राजतन्त्र के शानदार स्तम्भ टिकेंगे और न साम्राज्यवादी शासन की ऊँची इमारत अपितु भारत में सदियो पुरानी प्रभुसत्ता का भार

---

१ बीकानेर के महाराजा के निजी सचिव के कार्यालय की फाइल सं० ९१४/२८ महाराजा गगासिंह का पत्र ता० ४ ७-२१

२ (क) महाराजा बीकानेर के निजी सचिव के कार्यालय की फाइल सं० ९५५-XVIII (२९१ A) ता० २५ २ १२ का महाराजा के नाम श्री गोखले का पत्र

(ख) डा० करणीसिंह बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध परिशिष्ट २९

इनके कंधों पर पड़ेगा और इस बात की पूर्ण सम्भावना है कि हममें से भी कुछ लोग न्याय और ठीक व्यवहार के लिए उनका मुंह ताकेंगे।

भारतीय रियासतों ने अधिकांशतः ऐसे नेता उत्पन्न किये हैं जो अपने आप नेता बन हैं या जिन्हें अपनी रियासतों से निकाल दिया गया था या किसी गम्भीर अपराध के लिए सजा दी गयी थी। ऐसे लोग चाहे पूर्ण रूप से न सही पर मुख्य रूप से राजाओं और रियासतों के विरुद्ध बदले की भावना से प्रेरित हैं। निःसंदेह जयनारायण व्यास भी राजाओं के राज का ऐसा ही कड़ा और क्रूर आलोचक है। पर ऐसा होते हुए भी वह पूर्ण ईमानदार भ्रष्ट न होने वाला और अपनी आत्मा व राजनैतिक मत के प्रति सच्चा है।

जब मैं सोचता हूं कि जयनारायण व्यास राजनीति से अलग होकर सिनमा में शामिल हो रहा है तो मेरे हृदय में बड़ा दुःख होता है मैंने उसे आर्थिक सहायता भी देनी चाही पर उसने साहस से इंकार कर दिया।

वह दिन तेजी से निकट आ रहा है जब हम अनुभव करेंगे कि हमारे हटने पर उत्पन्न रिक्तता को केवल वही भर सकेगा।"

महाराजा गंगासिंह जी निर्भीक व साहसी योद्धा थे। उन्होंने अनेक युद्धों में व्यक्तिशः भाग लिया और परम्परागत राठौड़ी शौर्य का प्रदर्शन किया। वे अचूक निशानेबाज थे। उन्होंने सकड़ों शेरों का शिकार किया। व पोलो के भी बहुत अच्छे खिलाड़ी थे।[2]

व एक कुशल एवं योग्य शासक थे। उन्होंने राज्य में शान्ति और व्यवस्था कायम की। एक बार जब महाराजा गंगासिंह जी देश दौरे पर पधारे तो एक जगह एक नागरिक ने आकर उनसे प्रार्थना की कि उसकी औरत को कोई भगाकर ले गया है और अपने घर में डाल ली है। महाराजा साहब ने तुरन्त पुलिस थानेदार को बुलाकर आदेश दिया कि वह प्रार्थी की औरत को पता लगाकर दूसरे दिन तक उसके हवाले करवा दे। फलस्वरूप दूसरे दिन की बात तो कहां, प्रार्थी को अपनी औरत उसी सन्ध्या तक मिल गयी।[3]

लोकसभा में 'लोक प्रतिनिधित्व [संशोधन] बिल पर हुई बहस में भाग

---

१ डा० करणीसिंह-बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध परिशिष्ट २७

२ बीकानेर के वीर, पृ० ९०

३ राज्य विचार ता० २-१०-६८ स्व० महाराजा श्री गंगासिंहजी जयन्ती समारोह पर डा० अमरसिंहजी शाऊन्तर का भाषण

लेते हुए ससद् सदस्य श्री यशपालसिंह ने स्व० महाराजा गगासिंह जी के शासन और व्यवस्था की प्रशसा करते हुए कहा —

"हमारे माननीय महाराजा गगासिंह जी ने राज्य किया था और ५६ साल तक उनके राज्य मे एक भी चोरी नही हुई। उनके राज्य म एक दफा भी डाका नहीं पडा। इतिहास इस बात का साक्षी है। आप इतिहास उठा कर देख लीजिये। ५६ सालो के अन्दर एक वाक्या ऐसा हुआ था कि एक गरीब जुलाहे की बीवी को गुडे उठाकर ले गये थे। महाराजा साहब न आई जी पुलिस को बुलाकर जो अग्रेज था कहा कि अगर २४ घटो के अन्दर जुलाही वापस नही आई तो मैं तुम्हारी मेम साहब का हाथ जुलाहे के हाथ म पकडवा दू गा। रेगिस्तान छान गये पहाड छाने गये और १८ घटा के अन्दर जुलाही वापस आगयी। और अब दिल्ली मे यह हालत है कि बीस लडकिया भगाई जाय, किडनैपिंग के केस हो और उनका पता न चले।[1] उनके समय रियासत मे चोरी डाके का नाम मिट गया। अपराधी सिद्ध होने पर व बडे से बडे व्यक्ति को भी दण्डित करने से नही चूकत थे। उन्होने विभिन्न न्याय अदालतों की स्थापना की। बीकानर म हाई कोट व लेजिस्लेटिव असेम्बली की स्थापना उनकी ही सूझ बूझ स हुई। उन्होने रियासत मे म्युनिसियल बोड और डिस्ट्रिक्ट बोड कायम किये। वे एक कमठ व्यक्ति थे और रोजाना १८ घटे काम करते थ। एक बार डा० करणीसिह जी (जो उस समय भँवर थे) बाहर मोटर मे घूमने जाने से पहले महाराजा गगासिह जी से मिले। यह मिलना नित्य का नियम था। उन्होंने पूछा, दादो सा आप क्या कर रहे हैं ? आप भी हमारे साथ चलें। महाराजा गगासिह जी न उत्तर दिया, मैं दस लाख (बीकानेर की तत्कालीन जन सख्या) का नौकर हू। अपनी रोटी कमा रहा हू।"

महाराजा गगासिह जी ने प्रजाहित के अनेक काय किये। वे गगनहर लाकर सचमुच मरुधरा के भगीरथ"[2] बन गय। यह ८० मील तक पक्की ककरीट की बनी है और ससार की ककरीट से बधी नहरो मे सबस बडी है। २६-१० २७ को गगनहर का उद्घाटन शिवपुर के पास भारत के तत्कालीन वाईसराय लाड इर्विन द्वारा किया गया। इस अवसर पर भाषण देते हुए महाराजा गगासिह जी ने कहा —जैसा सन् १९०५ की इस योजना की रिपोट मे उल्लेख है यदि इसका हैड वक्स नदी के और ऊपर हरिके मे बनाया जाता तो वतमान साधारण क्षेत्र

---

१ सत्य विचार ता० २६ १ ६५ पृ० ४

२ श्री गिरधारीदान—मरुधरा के भागीरथ (महाराजा गगासिंहजी)

गौमरेजा नेरे इलाके का एक बहुत बडा भाग इस नहर से सींचा जाता।[1] यह उल्लेखनीय है कि राजस्थान नहर भी उन्हीं के दिमाग की उपज है। द्वितीय युद्ध प्रारम्भ होने और अस्वस्थ हो जाने से वे इसे पूर्ण रूप नहीं दे सके। पीने के पानी का प्रबन्ध करने के लिए उन्होंने कुओं मे मशीनें बैठाई। आवागमन के लिए राज्य में रेल और सडकों का निर्माण हुआ। आज बीकानेर में अनेक भव्य इमारतें दिखायी पडती हैं। ये महाराजा गगासिह जी की ही देन है। तुलनात्मक दृष्टि से देखा जाय तो बीकानेर के अन्य सब राजाओं ने मिलकर भी लगभग साडे तीन सौ वर्षों में इतनी इमारतें नहीं बनवाई जितनी अकेले महाराजा गगासिह जी ने बनवाई। इनमें भी लोक-हित के लिए बनी हुई इमारतो की सख्या अधिक है।[1]

शिक्षा प्रसार के लिए उन्होंने राज्य मे अनेक स्कूल और कालेज खोले, कन्या पाठशालाएँ खोली और सबके लिए नि शुल्क शिक्षा की व्यवस्था की। उन्होने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निर्माण मे भी योग दिया। चिकित्सा के लिए उन्होंने नगर में स्त्री–पुरुषों के अलग अलग अस्पताल बनवाये और बडे बडे कस्बो म भी अस्पताल खुलवाये। सभी प्रकार की साज सज्जा से युक्त बीकानेर का अस्पताल, उत्तरी भारत के प्रमुख अस्पतालो मे से एक था।

महाराजा गगासिह जी क सिहासनारूढ होते ही छपना अकाल' के नाम से प्रसिद्ध भयकर अकाल पडा। इसका सबसे अधिक दुष्प्रभाव भी बीकानेर रियासत पर ही पडा। इसलिए जितनी तबाही बीकानेर रियासत मे हुई, उसका उदाहरण नहीं मिलता। साथ ही इस अकाल का सामना जिस साहस, निष्ठा और [illegible] स बीकानेर क युवक महाराजा गगासिह जी ने किया उसका उदाह [illegible] म नहीं मिलता। राहत कैम्प का निरीक्षण महाराजा [illegible] आकर सप्ताह म एक बार बारी बारी कर जाता था।[1]

महाराजा गगासिह जी को श्री करणीजी म भी [illegible] था। इनक प्रति उनकी अनन्य श्रद्धा थी। बीकानेर से [illegible] विन्न जान से पूव, वे इनके दशन करके ही जाते थे। [illegible] इनकी कृपा स उन्हें प्रत्येक काय मे निश्चित सफलता [illegible] बडे सकट का भी निवारण हो जाता है। [illegible]

---

१ उत्थान-चक्र (माच १९७५) राजस्थान [illegible]
नव

भी न थी। अन्य धर्मों के प्रति उनमे आदर और सहिष्णुता थी। फलस्वरूप बीकानेर रियासत मे हिंदू-मुस्लिम जन सिख ईसाई सभी परस्पर बडे प्रेम से रहते थे और एक दूसरे के धार्मिक त्योहारो मे सोल्लास भाग लेत थे।

महाराजा गगासिंह जी का हमेशा यह विश्वास रहा कि जिस राज्य की सरकार अपनी जनता का जितना ही भला करेगी उसकी स्थिरता और शक्ति उतनी ही अधिक होगी। यह बात बहुधा उन्होंने अपने भाषणो मे जोर देकर कही।[1] उन्होंने अच्छी सरकार के लक्षण बताते हुए निम्नलिखित सात बातों पर जार दिया —

१ शासक का निजी खच (प्रिवीपर्स) अच्छी तरह से निश्चित होना चाहिए।
२ जीवन और सम्पत्ति सुरक्षित होनी चाहिए।
३ कानून का शासन होना चाहिये।
४ राजकीय सेवाएँ स्थिर होनी चाहिए।
५ प्रशासन श्रेष्ठ और गतिशील रहना चाहिए।
६ सरकार को आम जनता की भलाई का ध्यान रखना चाहिए।
७ उसे लोगो को सन्तुष्ट रखना चाहिए।

ये सिद्धान्त आधुनिक राजा का आदश प्रकट करते हैं। ये आज भी एक अच्छी सरकार के माग दशक सिद्धान्त माने जाते हैं। महाराजा गगासिंह जी श्री मदन मोहन मालवीय के प्रति अगाध श्रद्धा रखते थे। हिंदू धम और हिंदू सस्कृति के प्रति अटूट अनुराग होने के कारण वे प्राचीन भारत के आदश राजाओ के जीवन का अनुसरण करते थे और उनके गुणो को चरिताथ करके दिखाने में जीवन का आदश मानते थे। उनके शासन की जयन्ती व स्वण जयन्ती बडे धूम-धाम से मनायी गयी पर उस समय भी उन्होंने प्रत्येक काय मे अपने कुल धम और सस्कृति के गौरव को ध्यान मे रखा।

महाराजा गगासिंह जी न अपने व्यक्तित्व एव कृत्यो से बीकानेर के नक्शे को बिलकुल बदल दिया। एक साधारण देशी रियासत से ऊपर उठकर बीकानेर की गणना भारत की प्रमुख रियासतो मे की जाने लगी। देशी रियासतो के अन्य नरेश उनका बडा सम्मान करते थे और उन्हें अपना माग-दशक मानते थे।

महाराजा गगासिंह जी तो चले गये पर अपने पीछे एक ऐसा इतिहास छोड

---

१ (क) बीकानेर सभा को स्थगित करते हुए महाराजा गगासिंह जी का ता २ १ १९२८ का भाषण
(ख) नरेन्द्र मडल मे ता २३ २-१९२८ को महाराजा गगासिंह जी का भाषण

गये जो स्वर्णाक्षरो मे लिखा जाने योग्य है। उनकी मृत्यु पर श्रद्धाजलि अर्पित करते हुए भारत के तत्कालीन वाइसराय लिनलिथगो ने कहा।"[1] महाराजा साहब ने अपने अनुपम गुणो और प्रभावशाली व्यक्तित्व से जीवन मे प्रसिद्धि का एक असाधारण स्थान प्राप्त किया। अपनी रियासत मे उन्होने प्रगति और समृद्धि के एक नये युग का सूत्रपात किया। नरेन्द्र मडल मे उन्होंने महान् कार्य किया जिसका भारतीय इतिहास मे अपना स्थान होगा। साम्राज्य और अन्तर्राष्ट्रीय मामलो के अधिक व्यापक क्षेत्र मे उन्होने केवल अपनी इज्जत ही नहीं बढाई बल्कि मातृभूमि के लोगो व राजाओ का भी सम्मान बढाया।" भारत के राज्य मन्त्री मि० एमरी ने कहा,[2] "बीकानेर के महाराजा की मृत्यु से भारत ने अपना सब प्रसिद्ध सार्वजनिक व्यक्ति तथा साम्राज्य ने प्रथम श्रेणी का एक सैनिक, राजनीतिज्ञ खो दिया है।" बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय मे एक शोक सभा हुई। भारत के भूतपूर्व राष्ट्रपति स्व० सर्वपल्ली राधाकृष्णन् उस समय हिन्दू विश्वविद्यालय के उपकुलपति थे। उन्होने उस शोक सभा मे कहा" इस विश्वविद्यालय मे उनकी असीम रुचि थी। जहा तक इस विश्वविद्यालय और हिन्दू आदर्शों के बढाने का प्रश्न था वे अपने उत्साह मे अद्वितीय थे। उनके रूप मे, हमने इस विश्वविद्यालय का एक महान् सरक्षक, एक महान मित्र जिसके प्रौढ निर्णय और मधुर अनुभव का हम हमेशा विश्वास कर सकते थे, खो दिया। उनका ऐसा उत्तराधिकारी पाना सरल नहीं होगा जो विश्वविद्यालय मे इतनी गहरी रुचि ले सके।"

टाइम्स ऑफ इडिया ने लिखा,[3] "महाराजा का जीवन वीरता और स्थायी उपलब्धियो का एक शानदार रेकार्ड था। अपने जीवन के ६३ वर्षों मे उन्होने अधिकाश एक आदर्श एकाग्रता से अपनी जनता की सेवा के लिए अपने देश की सेवा के लिए और ब्रिटिश राष्ट्र मडल की सेवा के लिए बिताया। ऐसा कर उन्होने बीकानेर को प्रसिद्ध कर दिया और स्वय भी विश्व मे प्रसिद्ध हो गये।"

डा करणीसिंह जी के पिता महाराजा सादूलसिंह जी का जन्म ७ सितम्बर सन् १६०२ (भादवा सुदी ५ सवत १६५६) रविवार को महारानी राणावत जी की कोख से हुआ। इस शुभ सवाद से सवत्र आनन्द छा गया। महाराजा गगासिंह जी ने इस अवसर पर उदारतापूर्वक हजारों रुपये दान एव उपहार आदि मे व्यय किये और राज्य में कई दिन तक बडी खुशी मनाई गयी।

महाराजा गगासिंह जी ने महाराज कुमार सादूलसिंह जी को मेयो

---

१ स्टेट्समन ता ४ २ १९४३

२ टाइम्स आफ इडिया ता ४-२ १९४३

३ टाइम्स आफ इडिया, ता ३ २ १९४३

कालेज अजमेर तथा यूरोप के विद्यालयों मे न भेजकर कुशल और योग्य अध्यापकों द्वारा अपनी देख रेख मे बीकानेर मे ही शिक्षा दिलवायी। उन्हें सनिक-शिक्षा भी दी गयी। फिर उनको राज्य के प्रत्येक विभाग मे काम सीखने का अवसर दिया गया। इससे उन्हें शासन सम्बन्धी कार्यों का आवश्यक ज्ञान हो गया। ई सन् १९१८ मे जब महाराजा गगासिह जी सधि सभा मे भाग लेने के लिए यूरोप गये तो महाराज कुमार को भी अनुभव वद्धि के लिए अपने साथ ले गये।

जब ये बालिग हुए तो महाराजा गगासिह जी ने ९ सितम्बर १९२० को विधिवत दरबार करके उन्हें मुख्य मन्त्री के अधिकार प्रदान किये। इस अवसर पर महाराज कुमार सादूलसिह जी को सम्बोधित कर महाराजा गगासिह जी ने जो बातें कही वे बडी ही महत्वपूर्ण और राजकुमारों के मनन करने योग्य हैं। उन्होने कहा[1] —" यदि मुझे अपना उपदेश एक वाक्य मे कहना पड तो मैं तुमसे अथवा किसी भी ऐसे व्यक्ति से, जिसे शासक होना है यही कहूँगा कि ईश्वर सम्राट राज्य प्रजा तथा स्वय अपने प्रति सच्चे रहो। बीकानेर राज्य का इतिहास धार्मिक असहिष्णुता के भावो से सवथा मुक्त रहा है। तुम्हारा ध्येय भी यही होना चाहिए कि धार्मिक विषयो मे सबके साथ समान रूप से स्वतत्रता के सिद्धान्त का पालन हो। शासन नीति के सम्बन्ध मे मुझे यह कहना है कि मैं कार्यों और शक्ति के विभाजन मे बडा विश्वास रखता हू। शासक के लिए सबसे जरूरी यह है कि उसे व्यक्तियो के स्वभाव का ज्ञान हो। स्मरण रखो कि तुम्हारे अफसर शासन यत्र के कल पुर्जे हैं। उनके भले बुरे होने के अनुसार ही शासन प्रबन्ध की प्रशसा अथवा बुराई होगी। साथ ही ऐसा प्रबन्ध करना जिससे तुम्हारे शासन के किसी भी विभाग में फिजूल खर्ची न हो। हमारा यह *कर्तव्य होना चाहिए कि हम देखें कि शासन जाती होने पर भी एक–सत्तात्मक* नहीं है और शासक तथा शासित का सबध घनिष्ठ है। हमेशा उदारता व्यवहार म लाओ। सबको खुश कर सकना असभव है। कहावत है कि जो लोकप्रिय बनना चाहता है वह शासन नही कर सकता। अन्त में मेरा यह कहना है कि कितना भी बुरा और असन्तोषपूर्ण क्यो न प्रतीत हो पर आवश्यकता के अनुसार अपने दृष्टिकोण में परिवतन करने में किसी प्रकार की

---

१ महाराजा बीकानेर के निजी सचिव के कार्यालय को फाइल स २२७८ XXVI, भाग २ की *महाराज कुमार सादूलसिह जी के बालिग होने पर ता ९ ९ १९२ को महाराजा* गगासिह जी का भाषण

देरी अथवा सकोच नही करना।   "

मुख्य मन्त्री का काय इ होने साढे चार वष तक किया।

ता १८ अप्रैल सन् १६२२ (वैसाख वदी ७ सवत् १६७६) को महाराज कुमार सादूलसिंह जी का विवाह रीवा नरेश वेंकटरमणसिंह जी की राजकुमारी (महाराजा सर गुलाबसिंह जी की बहिन) के साथ हुआ।[1] इस अवसर पर भारत के कितने ही राजा-महाराजा तथा उच्चाधिकारी बीकानर म उपस्थित हुए।[2]

२ फरवरी सन् १६४३ को महाराजा गगासिंह जी का स्वगवास होने पर वे बीकानेर के २२ वें शासक के रूप मे गद्दी पर बठे।

महाराजा सादूलसिंह जी का राज्य-काल लगभग ६ वष रहा। यह समय अनेक घटनाओ से भरा हुआ था। इस समय रियासतो और ब्रिटिश भारत मे महान राजनैतिक उथल पुथल और क्रान्तिकारी परिवतन हो रहे थे। स्वय बीकानेर रियासत मे सरकार के रूप को और अधिक जनतान्त्रिक बनाने के लिए अनेक कदम उठाये गये।[3] इसी अवधि म भारत को द्वितीय महायुद्ध के सकट मे से निकलना पडा। इसी समय देश का विभाजन हुआ और भारत ने स्वतन्त्रता प्राप्त की।

८ माच सन् १६४३ को महाराजा सादूलसिंह जी का राज्यारोहण हुआ। राजपूताना के रेजीडेंट ने उ हे वाइसराय का खरीता भेंट किया। इस अवसर पर महाराजा ने "प्रजाहित व्रतिनो वयम्" को अपना लक्ष्य और माग दर्शक सिद्धा त घोषित किया। उन्होने इस बात को दोहराया कि वधानिक सुधार लागू करने के मामलों मे अपने यशस्वी पिताजी का अनुसरण करूँगा। उन्होने यह प्रबल आशा प्रकट की कि राज्य की जनता राज्य के प्रशासन से उत्तरोतर अधिक सम्बन्धित हो।[4]

जब महाराजा सादूलसिंह जी गद्दी पर बिराजे तो द्वितीय महायुद्ध बडे जोरो से चल रहा था। उ होंने युद्ध मे जाने की इच्छा व्यक्त की और स्वीकृति

---

१ गनपतराम व्यास ज जगनधर बादशाह पृ० ३८ का दोहा

'रीवा नरेश की सुता मिली लक्ष्मी पर रानी।
जन्मे पुत्र प्रवीन दया सुख धर्म निशानी॥

२ डा गौरीशकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास दूसरा भाग पृ० ५६२

३ डा करणीसिंह बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध पृ० ३४५

४ महाराजा बीकानर क निजी सचिव के कार्यालय का फाइल स० ४१ XXVIII, भाग ता ८-३ १९४३ का महाराजा सादूलसिंहजी का भाषण

मिलने पर अपने द्वितीय पुत्र महाराजा कुमार अमरसिंह के साथ ता २६ अक्टूबर १९४३ को बीकानेर स रवाना हुए। उन्होने ईरान स्थित सादूल-लाइट इन्फेन्ट्री इराक स्थित बीकानेर की ४६ जी बी टी कम्पनी तथा अन्य रियासतो की सेनाओ, शाही सेना और मित्र राष्ट्र की सेनाओ का निरीक्षण किया। नवम्बर सन् १९४३ में वे भारत लौटे और बीकानेर लौटते समय मार्ग में उन्होंने गंगा रिसाले का निरीक्षण किया जो उन दिनो सिन्ध मे नियुक्त था।[1] नवम्बर सन् १९४४ मे महाराजा पुन आसाम बर्मा युद्ध मोर्चे पर गये। वहाँ बीकानेर विजय बैटरी जापानियो के विरुद्ध युद्ध रत थी। दिसम्बर सन् १९४४ मे महाराजा बीकानेर लौट आये। बीकानेर लौटते समय कलकत्ता में व्यापार के लिए बसे हुए बीकानेर के एक लाख से अधिक लोगो ने आपका भव्य स्वागत किया।

बीकानेर की जनता की भलाई और राज्य के प्रशासन के साथ उसे सम्बन्धित करने का अपना वचन महाराजा के ध्यान में हमेशा रहता था। बीकानेर का अधिकाश भाग 'थार' रेगिस्तान के अन्तगत है। यहा पानी सुलभ कराने और यहा के निवासियो के लिए पीने के पानी का प्रबन्ध करने के प्रश्न को महाराजा ने प्राथमिकता प्रदान की। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए सवप्रथम महाराजा ने सन् १९४३ मे सादूल जल प्रदाय और ग्रामीण पुनर्निर्माण कोष" बनाकर उसम ४० लाख रुपये दिए।[1] शिक्षा विस्तार हेतु आपने कई लाख रुपये छात्रवृत्तियो के लिए दिये।[2] औद्योगीकरण को भी बहुत बढावा मिला। उनके समय यातायात और सचार मे काफी सुधार हुआ। बीकानेर राज्य न कुछ वायुयान भी प्राप्त किये। स्वय महाराजा सादुलसिंह जी अपनी हवाई यात्रा के लिए 'डव' नामक एक अंग्रेजी वायुयान का प्रयोग करते थे।

बीकानेर के शासन को जनतान्त्रिक बनाने की दृष्टि से महाराजा न सविधान समिति की नियुक्ति[3], उत्तरदायी सरकार की स्थापना[4] और अन्तरिम मंत्री मडल[5] बनाने की घोषणा की। मिला जुला मत्रीमडल बना, पर कांग्रेस का असतुष्ट दल इसके पक्ष मे न था। फलस्वरूप वह राज्य के विरुद्ध आन्दोलन करने लगा। उन्होने अन्तरिम मत्रीमडल को भग करने व चुनावो को स्थगित

---

१ बीकानेर एण्ड दी वार (१९३९ ४५) पृ० ८

२ बीकानेर समाचार भाग ३ सख्या ४ पृ ३१

३ महाराजा सादूलसिह जी की दिनाक ३१ ८ ४६ की घोषणा

४ महाराजा सादूलसिह जी की दिनांक ४ १२ ४७ की घोषणा

५ महाराजा सादूलसिह जी की दिनांक १८ ३ ४८ की घोषणा

करने की माग की। जब महाराजा सितम्बर १६४८ में बीकानेर लौटे तो काग्रेस के मन्त्रियो ने त्याग-पत्र दे दिये थे। महाराजा के पास अब मन्त्रीमडल को भग करने के सिवाय कोई चारा न था। उन्होने चुनाव भी स्थगित कर दिये। बीकानेर हर तरह से अलग रहने योग्य इकाई थी। पर एकाएक नवम्बर सन् १६४८ मे रियासती मन्त्रालय और इसके प्रतिनिधि श्री वी पी मेनन द्वारा बातचीत चालू की गयी। सरदार पटेल और श्री मेनन के साथ ५ दिसम्बर और २१ दिसम्बर १६४८ को और आगे बातचीत हुई। केवल २ महीने बाद ही फरवरी १६४६ म एकीकरण का पूर्ण निश्चय कर लिया गया। ७ अप्रल सन् १६४६ को वृहद राजस्थान मे बीकानेर रियासत का एकीकरण हो गया।[1]

महाराजा सादूलसिंह जी के समय भारत मे क्रान्तिकारी परिवर्तन हो रहे थे। देश तेजी से आजादी की ओर अग्रसर हो रहा था। भारतीय रियासतो मे भी इसका प्रभाव परिलक्षित होने लगा। सन् १६४४ म नरेन्द्र मडल की स्थायी समिति न राजाओ की एक छोटी समिति बनायी। महाराजा सादूलसिंह जी इसके अध्यक्ष थे। इस समिति की रिपोर्ट पर बोलते हुए उन्होने कहा[2] —

"अब अलग थलग रहने के सिद्धान्त स चिपके रहना सभव नही। छोटी-छोटी रियासतें परस्पर मिलकर अथवा बडी रियासतो के साथ मिल कर इस प्रकार की इकाइया बनायें जो आधुनिक परिस्थितियो मे अनिवार्य आवश्यकताओ की पूर्ति करने मे समर्थ हो सके।" इसक शीघ्र बाद महाराजा ने अपने विचारो को राजाओं को भेजे गये एक गोपनीय परिपत्र म पुन दोहराया।

भारत को स्वतन्त्रता प्रदान करने हेतु मन्त्री मडलमिशन की नियुक्ति की गयी। १६ मई सन् १६४६ को इसकी योजना घोषित की गयी। रियासतो ने सर्व सम्मति से योजना को स्वीकार किया। इस योजना की स्वीकृति की प्रशसा करते हुए महाराजा सादूलसिंह ने इसे भारत की स्वतन्त्रता के लिए सबसे महान् कदम बताया।[3] मुस्लिम लीग ने पहले तो इन प्रस्तावो को स्पष्ट और सक्षिप्त रूप मे ग्रहण किया पर २७ जुलाई १६४६ को अपनी स्वीकृति वापस ले ली। १६ अगस्त का दिन सीधी कारवाई का दिन (Dirct Action Day) घोषित किया गया। फलस्वरूप कलकत्ता मे हिन्दुओ का कत्ले आम हुआ जिससे साम्प्रदायिक उन्माद की आग भडक उठी। अगले एक वर्ष मे यह भारत के उपमहाद्वीप मे फल

---

१ डॉ करणीसिंह—बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध- पृ ४१७

२ दिनाक ३० ९ १९४५ को राजाओं की स्थाई समिति की अनौपचारिक बैठक में महाराजा सादूलसिंह जी का भाषण

३ दिनाक २७ ७ ४६ को महाराजा सादूलसिंह जी का भाषण

गयी और सीमा के दोनो ओर लाखो पुरुष, स्त्रिया और बच्चे बबरता से कत्ल कर दिये गये।[1] लाड वेवल ने त्याग पत्र दे दिया और २४ माच १९४७ को लाड माउन्ट बटन ने उनका पद सभाला।

महाराजा ने विश्वास प्रकट किया कि उनके समूह[2] द्वारा विधान निर्मात्री सभा म सम्मिलित होने से नया शासन काफी मजबूत हो जायेगा।[3] भोपाल का नवाब इस बात पर जोर दे रहा था कि रियासतें अलग अलग कोई कारवाई न करें, बल्कि वे सब सामूहिक रूप स अध्यक्ष की सहमति से ही कारवाई करें।[4]

अप्रैल १९४७ मे राजाओ की स्थाई समिति की बठकें हुई। रियासतें कब विधान निर्मात्री सभा मे सम्मिलित हो, इस प्रश्न पर अध्यक्ष और महाराजा सादूलसिंह जी में मतभेद हो गया। यह देखकर कि राजाओ को समस्या की गम्भीरता अनुभव कराना उनके लिए सम्भव नही है, महाराजा ने अपना ऐतिहासिक बहिगमन (सभा त्याग) किया। महाराजा के इस ऐतिहासिक बहिगमन से एक तीसरी शक्ति बनाने का 'भोपाल के नवाब का खेल" खत्म हो गया। महाराजा की इस कारवाई की न केवल समाचार पत्रो[5] ने प्रशसा की, बल्कि ब्रिटिश भारत के प्रसिद्ध नेताओ ने भी सराहना की। सरदार वल्लभ भाई पटेल ने लिखा[6] "वे एक ऐसे व्यक्ति है जि होने बातचीत मे इतना महत्त्वपूण भाग लिया है जिससे राजाओ के भारतीय सघ मे मिलन का माग खुल गया। महाराजा ऐसे व्यक्ति है जो दृढ स्वामीभक्ति के साथ देश के साथ रहे।" महाराजा सादूलसिंह जी के स्वगवास के बाद उनके जन हितषी कार्यों को ध्यान मे रखते हुए बीकानेर की जनता ने धन राशि एकत्रित कर उनकी एक अश्वारोही मूर्ति चौतीना कुआ के पास मुरय सडक के बीच स्थापित की। इस अश्वारोही मूर्ति का अनावरण करते समय स्वतन भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा० राजेन्द्र प्रसाद ने महाराजा की देशभक्ति पूण कारवाई की भूरि भूरि प्रशसा की।

---

१ लियोनाड मोस्ले–दि लास्ट डेज आफ दि ब्रिटिश राज पृ ३३ ३५

२ बीकानेर जयपुर जोधपुर पटियाला और ग्वालियर

३ कम्बेल–मिशन विद माउन्ट बटन पृ ४४

४ वही, पृ ४७

५ दि टाइम्स आफ इण्डिया ता २ ४-४७ व ७ ४ ४७
नेशनल स्टण्डड ता ३-४-४७
दि बाम्बे कानिकल ता ४ ४ ४७
फ्री प्रेस जनल ता ३ ४ ४७

६ महाराजा सादूलसिंह जी के नाम सरदार पटेल का ता २७ १ ५० का पत्र

उन्होने कहा,[1] "अपने निजी हितो से ऊपर देश के हित को रख कर राजाओ ने भारत के एकीकरण मे एक स्मरणीय काय किया। इस सम्बन्ध मे स्वर्गीय महाराजा सादूलसिंह जी ने जो सहायता प्रदान की वह तत्कालीन रियासती मत्री और महान् भारतीय नेता सरदार वल्लभ भाई पटेल द्वारा कृतज्ञता से स्वीकार की गयी है। जब उस काल का इतिहास लिखा जायगा तो उसम उल्लेख होगा कि जब एक ओर भारत के समक्ष विभाजन का सकट था और दूसरी ओर इसके छोटे छोटे टुकडे होने की खतरनाक सभावना थी तो दूरदर्शिता और महान देश–भक्ति से प्रेरित होकर महाराजा सादूलसिंह चट्टान की तरह अटल रहे और उस सम्भावना को मिटा दिया।"

बीकानेर प्रथम रियासत थी जो भारतीय सघ मे सम्मिलित हुई। महाराजा सादूलसिंह जी के इस निणय से अन्य अनेक रियासतो ने भी भारतीय सघ मे सम्मिलित होने की घोषणा की। भारत के वाइसराय लाड माउ ट बटन ने इस सम्बन्ध मे महाराजा सादूलसिंह जी की प्रशसा करते हुए कहा,[2] ' बिना एक क्षण सन्देह किये महाराजा बीकानेर ने भारतीय सघ मे अपनी रियासत के शामिल होने की घोषणा करके जिस देश–भक्ति और कुशल राजनीति का परिचय देकर दूसरे राजाओ का पथ–प्रदशन किया वह कम प्रशसा की बात नही है।"

भारत विभाजन के समय सादूलसिंह जी ने न केवल बीकानेर रियासत के चुरू, सुजानगढ, गगानगर, अनूपगढ आदि नगरो के मुसलमानो की जान और सम्पत्ति बचायी, बल्कि पाकिस्तान जाने वाले बाहर के मुसलमानो के एक बहुत बडे काफिले को बीकानेर रियासत मे मे सुरक्षित पहुँचाने की व्यवस्था की। बीकानेर रियासत ने अपनी धार्मिक सहिष्णुता और धम निरपेक्षता की परम्परा कायम रखी। बीकानेर के लिए यह गव की बात है कि बिना किसी बुरी घटना के लाखो लोगो को सुरक्षित पाकिस्तानी सीमा तक पहुचाया गया।[3]

यह बात बहुत कम लोगो को ज्ञात है कि महाराजा सादुलसिंह जी के प्रयत्नो से फिरोजपुर जिले की तीन तहसीलें फिरोजपुर जोरा और फाजिलका तथा गगनहर का पूरा क्षेत्र व फिराजपुर हैड पाकिस्तान को न देकर भारत को दिये

---

१ ता २ ९ ५४ को बीकानेर म महाराजा की अश्वारोही मूर्ति का अनावरण करते समय डा राजेन्द्रप्रसाद का भाषण

२ बीकानेर म ता १५ १ ४८ को लाड माउन्ट बटन का भाषण

३ लियोनार्ड मोसले –दि लास्ट डज आफ ब्रिटिश राज पृ २४४

गये ।[1] भारत पाक की सीमा निर्धारण के लिए रैंडक्लिफ सीमा आयोग बनाया गया था। गगनहर की दृष्टि स बीकानेर रियासत के हितो की रक्षा हेतु राज्य के तत्कालीन मुख्य अभियता, सिचाई श्री कँवर सेन ने १८ जुलाई १९४७ को सीमा आयोग को एक ज्ञापन दिया। इसमे गगनहर तथा फिरोजपुर हैड को भारत मे रखने का औचित्य बताया गया था। भावलपुर रियासत की ओर से भी एक ज्ञापन दिया गया। भावलपुर की मांगो का अनौचित्य बताते हुए श्री कँवरसेन ने ३१ ७ १९४७ को एक प्रत्युत्तर युक्त ज्ञापन और पूरक टिप्पणी सीमा आयोग को प्रस्तुत की। पर इनका काई प्रभाव न पडा। श्री कँवरसेन को गुप्त रूप से ज्ञात हुआ कि फिरोजपुर हैड तथा फिरोजपुर जिले की उपयुक्त तीन तहसीलें पाकिस्तान को देने का निश्चय सीमा आयोग के प्रधान रेडक्लिफ ने कर लिया है। ज्योही यह रहस्य महाराजा सादूलसिंह जी को ज्ञात हुआ, उन्होने भारत के तत्कालीन वाइसराय लाड माउन्ट बटन को जिनसे उनके दोस्ताना सम्ब ध थे, एक तार १० ८ १९४७ को भेजा। साथ ही महाराजा ने अपना हवाई जहाज देकर श्री कवर सेन व राज्य के प्रधानमत्री श्री पनिकर को दिल्ली भेजा। उन्होने ११-८-१९४७ को वाइसराय से मुलाकात कर एक स्मरण पत्र दिया और सारी स्थिति समझाई। वाइसराय ने सीमा आयोग के निर्णयो की घोषणा कुछ दिन के लिए रुकवा दी। जब १७ ८ १९४७ को निर्णयो की घोषणा हुई तो फिरोजपुर हैड, फिरोजपुर जिले की उपर्युक्त तीनो तहसीलें तथा गगनहर का सारा क्षेत्र भारत को दिया गया। इस घटना का श्री कँवर सेन न अपनी पुस्तक मे विस्तार से उल्लेख किया है।

विश्व-प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ व निशानेबाज महाराजा सादूलसिंह जी का व्यक्तित्व अनेक गुणो से सम्प न होने क कारण इतना महान बन गया था कि वे लोगो को "नताओ क बीच म राजा तथा राजाओ मे नेता"[2] प्रतीत होने लगे थे।

१ डॉ कवर सेन-रेमिनिसेंसिज ऑफ एन इजिनियर पृ ८८ १२४

२ बीकानेर समाचार-भाग ४ सख्या ११ पृ १० श्री आर एल मेहता का भाषण

माता

डा० करणीसिंह जी की माता श्री सुदर्शन कुमारी जी का जन्म ५ सितम्बर सन् १६०६ को रीवा में हुआ। आपके पिताश्री वेंकटरमणसिंह रीवा के शासक थे। जब आप छोटी थी, तभी आपके माता पिता का स्वर्गवास हो गया। अत आपका पालन पोषण विमाताओं तथा सहोदर प्रसिद्ध देशभक्त महाराजा गुलाबसिंह जी की देख-रेख में हुआ। यद्यपि आपने नियमित रूप से उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की, पर योग्य विद्वानों के सान्निध्य में आपने हिन्दी अंग्रेजी, संस्कृत व उर्दू भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया। गीता और उपनिषदों के ग्रंथ को आप भली भांति समझ लेती थी। हिन्दी में ज्ञानेश्वरी गीता का विशेष पारायण आपके स्वाध्याय का एक अंग था।

१८ अप्रैल सन् १६२२ को आपका विवाह बीकानेर के युवराज सादुलसिंहजी के साथ हुआ। इस अवसर पर भारत के कितने ही राजा महाराजा तथा उच्चाधिकारी बीकानेर में उपस्थित हुए। महाराजा गंगासिंह जी अपने कितने ही प्रतिष्ठित मेहमानों के साथ रीवा पहुंचे। वहां उनका जोरदार स्वागत हुआ।[1]

बाघेली जी श्री सुदर्शन कुमारी जी १७ वर्ष की आयु में बीकानेर आयी। इनके तीन सन्तानें इस प्रकार हुई —

(१) बाई जी सुशील कुंवर जी—इनका जन्म २१ अप्रैल १६२३ को हुआ। इनका विवाह उदयपुर के युवराज भगवतसिंह जी से जो बाद में महाराणा बने हुआ।

(२) श्री करणीसिंह जी—इनका जन्म २१ अप्रैल १६२४ को हुआ। प्रस्तुत ग्रन्थ में इनकी विस्तृत चर्चा है।

(३) श्री अमरसिंह जी—इनका जन्म ११ दिसम्बर १६२५ को हुआ। वे म० विजयसिंह जी के गोद गये और आजकल जयपुर में रहते है।

बाघेली जी श्री सुदर्शन कुमारी जी ने युवरानी महारानी और राजमाता तीनों रूपों में बीकानेर के लोगों में अपनी उदारता कला प्रेम शैक्षिक साहित्यिक आध्यात्मिक सांस्कृतिक व दार्शनिक अभिरुचि की एक अमिट छाप डाली और सात्विक जीवन में लोकप्रियता प्राप्त की। आपका दृष्टिकोण बहुत व्यापक और उदार था।

---

१ डॉ गौरीशंकर हीराचन्द ओझा—बीकानेर राज्य का इतिहास दूसरा भाग पृ ५६२

विभिन्न कलाओ के प्रति आपका गहरा अनुराग था । साहित्यिक सस्कार तो आपको अपने पीहर (रीवाँ) स मिले थे जहा श्री विश्वनाथसिंह जू देव, श्री रघुराजसिंह जू देव आदि हिंदी के प्रख्यात साहित्यकार हो चुके थे । श्री सुदर्शन कुमारी जी बीकानेर के लम्बे इतिहास म पहली महारानी थी, जिन्होंने साहित्य-सृजन किया । इनकी रचनाओ मे गहन चिन्तन तथा अनुभूति के दर्शन होते हैं । राजस्थानी में लिखित आपके दोहे एव सोरठे बडे ही भावपूर्ण हैं । रीवा म आपने सगीत का नियमित अभ्यास किया था । चित्र कला तो धीरे धीरे आपका प्रिय विषय बन गया । आपके अधिकाश चित्र प्राकृतिक सौन्दय से सम्बन्धित हैं ।

आपके आध्यात्मिक एव दार्शनिक विचार बहुत ही स्पष्ट हैं । आप शकर के वेदान्त मत स बहुत प्रभावित थी और एक ब्रह्म म ही आपका दृढ विश्वास था । आपके आध्यात्मिक अनुभव 'मेरे विचार' नाम स प्रकाशित हैं । इनमे 'इच्छा-शक्ति और मनोबल वृद्धि' के जो उपाय बताये गये हैं, वे इतने सहज हैं कि प्रत्येक व्यक्ति उन्हें अपना सकता है ।

राजघराने से सम्बन्धित होकर राजनीति स आप कसे अलग रहती ? यो तो महाराजा सादुलसिंह जी ने कई बार अपनी विदश यात्रा के समय इन्हें बीकानेर के राजकाज को देखने तथा मत्री परिषद् की अध्यक्षता करने के लिए नियुक्त किया था, पर नये भारत मे डा० करणीसिंह जी आप से प्रेरणा लेकर ही राजनीति मे प्रवृत्त हुए । वे सदा बीकानेर के लोगो की कल्याण-कामना से युक्त रहती थी । १६ दिसम्बर सन् १६७१ को आपका स्वर्गवास हुआ ।

जन्म एवं बाल्यावस्था

डा० करणीसिंह जी का जन्म वि.स. १९८१ वैशाख कृष्णा २ सोमवार तदनुसार २१ अप्रैल सन् १९२४ को बीकानेर में हुआ। महाराजा गंगासिंह जी ने बोलवा (मनौती) की थी कि यदि मेरे भँवर (पौत्र) होगा तो मैं १०,०००) रुपये देवताओं के भेंट चढ़ाऊंगा। फलस्वरूप डा. करणीसिंह जी के जन्म पर बीकानेर रियासत में बहुत खुशियां मनायी गयी। इसका एक अन्य कारण भी था। बीकानेर के महाराजा सरदार सिंह जी के कोई सन्तान न थी। अतः डूंगरसिंह जी उनके गोद गये। महाराजा डूंगरसिंह जी भी निस्सन्तान थे। महाराजा गंगासिंह जी उनके गोद गये। अतः महाराजा गंगासिंह जी ने अपने पुत्र–महाराजा सादुलसिंह जी के जन्म पर खुशी मनायी। पर डा. करणीसिंह जी के जन्म पर उन्होंने इससे भी ज्यादा खुशी मनायी, क्योंकि उन्होंने अपने सामने ही भंवर (पौत्र) का जन्म देखा।

डा. करणीसिंह जी का बचपन बड़े ही लाड़ प्यार एवं वैभव में बीता। तत्कालीन रियासतों में राजगद्दी के उत्तराधिकारी के लिए जो जो ज्ञान आवश्यक था, वह उन्हें दिया गया। मेजर हैंडकाक को उनका संरक्षक नियुक्त किया गया। भारतीय संरक्षक ठा. गोपसिंह जी थे। उस समय राजकुमारों के लिए घुड़सवारी, सैनिक शिक्षा आदि का ज्ञान एक अनिवार्यता थी। फलस्वरूप ऐसे व्यक्ति नियुक्त किये गये, जो डा. करणीसिंहजी को इनका प्रशिक्षण दे सकें। प्रसिद्ध पोलो खिलाड़ी स्याणी (पड़िहार) बख्तावरसिंह जी ने इनको घुड़सवारी सिखायी। सैनिक शिक्षा (मिलिट्री ट्रेनिंग) के लिए सादुल लाइट इन्फेन्ट्री के हवलदार (बाद में सूबेदार) शेखावत बैरीसालसिंह जी को लगाया गया। डा. करणीसिंह जी ने साफा बांधने का अभ्यास भी सेना में ही किया। आपकी शिक्षा के बारे में अन्यत्र विस्तार से लिखा गया है।

एक बार जब ये किशोर थे इन्होंने अपनी मूंछों पर रेजर फेर लिया। सदा की भांति ज्योंही ये महाराजा गंगासिंह जी के पास गये तो उन्होंने देखते ही अप्रसन्नता का भाव बना लिया। उन्होंने ठा. गोपसिंह जी को बुलाया और भविष्य में ऐसा न होने देने के लिए सख्त ताकीद की।

ओझा जी ने अपने इतिहास में डा. करणीसिंह जी के बारे में निम्न प्रकार से लिखा है[1] —

---

1 डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास दूसरा भाग पृ ५९९ ६००

भवर करणीसिंह गभीर, मदुभाषी मलाप्रिय और प्रतिभाशाली होने के साथ ही मितव्ययी है। उसको क्षत्रियोचित वीरता के कार्यों से पूर्ण अनुराग है। वह अच्छा अश्वारोही और टेनिस का खिलाडी होने के साथ ही बदूक का निशाना लगाने में भी कुशल है। उसकी मुख-मुद्रा से राठोडोचित गौरव और कुलाभिमान की मात्रा स्पष्ट प्रकट होती है। वह धैर्यवान् और सहनशील है एव अपने पिता महाराज कुमार शार्दूलसिंह में सदा सद्गुणों से अलकृत है। उसके उत्तम आचरण और कर्म निष्ठा को देखते हुए बीकानेर निवासियों को उससे बहुत कुछ आशा है। अध्ययन में उसने अच्छी उन्नति की है।"

शिक्षा

डा० करणीसिंह जी के बचपन के समय भारत पर अग्रेजो का शासन था। राजघरानों में अग्रेजी सभ्यता प्रचलित थी। राजपरिवार के सदस्यो विशेषत राजगद्दी के उत्तराधिकारी के लिए अग्रेजी का ज्ञान अनिवार्य था। फलस्वरूप डा० करणीसिंह जी की प्रारम्भिक शिक्षा भी अग्रेजी अध्यापको द्वारा हुई। सर्व प्रथम मिसेज ई० एम० डेट ने, जो उनकी धाय थी, उनको शिक्षा दी। उसके बाद उन्हे पढाने वालों में मि० साद्रुग (जिन्हें स्थानीय लोग सद्रुर सा० कहते थे) मि बी ए इगलिश डा० दशरथ शर्मा, मि उरे मेजर हैंड बॉक आदि प्रमुख थे। मेजर हैंड बाक उनके सरक्षक भी थे। भारतीय सरक्षको में ठा० गोरसिंह जी व ठा नवलसिंह जी थे।

डा० करणीसिंह जी की शिक्षा के सम्बन्ध मे महाराजा गगासिंह जी ने गहरी रुचि ली। दिनाक ३० ३ ४० को जारी किये गये अपने एक नोट में उन्होंने डा० करणीसिंह जी की शिक्षा के बारे मे विस्तार से अपने विचार व्यक्त किये हैं और उनकी शिक्षा दीक्षा हेतु एक समिति का गठन कर उसे आवश्यक निर्देश दिये हैं। इस नोट के कुछ मुख्य बिन्दु इस प्रकार हैं —[1]

(१) पूर्ण विचार के बाद मैंने यह निर्णय किया है कि राजकुमारो (डा करणीसिंहजी व उनके अनुज श्री अमरसिंह जी) को शिक्षा हेतु मेयो कॉलेज, अजमेर भेजना वाछित नही।

(२) उनकी व्यवस्थित एव नियमानुसार शिक्षा के लिए आगामी कुछ वर्षों के लिए एक योजना बनायी जाय, ताकि अध्यापको द्वारा करायी जाने वाली

---

१ ठा जीवराजसिंह जी हरासर से प्राप्त उक्त नोट की प्रतिलिपि के आधार पर

पढाई के अतिरिक्त उन्हे भावी जिम्मेवारियो के लिए तयार किया जाय और जीवन म उनके पद को ध्यान म रखते हुए उनके चरित्र व व्यवहार का निर्माण किया जाय।

(३) यद्यपि मेरी इच्छा राजकुमारो को पुस्तकीय ज्ञान से लादने की नही है, फिर भी आज की परिस्थितियो को ध्यान मे रखते हुए उन्हें ऐसी शिक्षा दी जानी चाहिए जो मस्तिष्क को अनुशासन मे रखते हुए उसे प्रत्येक दिशा मे तत्पर करे। शिक्षा मे ये बातें उन्हें अवश्य बतायी जानी चाहिए —

(क) भारत व ब्रिटिश साम्राज्य का इतिहास

(ख) हिन्दी व सस्कृत के अलावा अग्रेजी भाषा व साहित्य का विस्तृत ज्ञान

(ग) हिन्दू धम की मुख्य बातो का ज्ञान व अन्य धर्मों का भी सामान्य ज्ञान

(घ) वतमान आर्थिक व राजनतिक समस्याओ का परिचय

(ङ) बीकानेर के इतिहास का ज्ञान

(च) सच्चे क्षत्रिय के गुण, राजा की जिम्मेवारियाँ

(छ) राजपूतो की परम्परा, रीति-रिवाज व उत्सवो का ज्ञान

(ज) अपने यहाँ के सर्वोत्तम को ग्रहण करे, पर बाह्य ज्ञान के लिए आँखे न मूदे

इन उद्देश्यो को दृष्टि मे रख कर महाराज गगासिह जी ने एक समिति का गठन किया, जिसके सदस्य इस प्रकार थे —

(i) महाराज मा भातासिह जी — अध्यक्ष

(ii) ठा हरिसिह जी सत्तासर

(iii) मेजर पनिक्कर

(iv) हरासर ठाकुर

(v) मि० उरे

इस समिति के लिए महाराजा गगासिह जी ने निम्नलिखित निर्देश दिये —

(१) समिति की महीने मे कम से कम एक बठक अवश्य हो और वह अध्यापको से राजकुमारो की शिक्षा के बारे मे रिपोर्ट लें।

(२) समिति राजकुमारो के साथ रहने वालो के नाम व समय तै करे तथा सरदारो एव अधिकारियो के उनसे मिलने (किस स्थिति म) के बारे मे

नियम बनाय ।

(३) समिति राजकुमारो के लिए उपयुक्त शौक (Hobbies) व अन्य रुचि के बारे म विचार करे और अवाछित आदतो स उन्हे निरुत्साहित करे ।

(४) समिति उन्हे उपयुक्त प्रशासकीय प्रशिक्षण देने व बीकानेर राज्य की समस्याओ स परिचित कराने के बारे म भी विचार करे ।

(५) समिति अध्यक्ष के माध्यम से मुझे नियमित सूचना (रिपोर्ट) दे और सभी महत्वपूर्ण बिन्दुओ पर मुझसे निर्देश ले ।

(६) वास्तव म प्राथमिक जिम्मेवारी मि० उरे की है पर समिति के अन्य सदस्य भी सामूहिक रूप मे व अलग अलग राजकुमारो से सम्पर्क रखें ।

डा० करणीसिंह जी ने आबू की सेंट मेरी हाई स्कूल मे सीनियर कैम्ब्रिज की तैयारी की और स्वयंपाठी के रूप म दिसम्बर १९४१ में वे इस परीक्षा म सम्मिलित होने वाले थे । पर नवम्बर १९४१ म उन्हे महाराजा गंगासिंह जी के साथ मध्य पूर्व (Middle East) के युद्ध मोर्चे पर जाना पड़ा । अत वे परीक्षा न दे सके । दिसम्बर १९४२ मे उन्होने माउंट आबू के लारेंस हाई स्कूल केन्द्र पर सीनियर कैम्ब्रिज की परीक्षा दी और सम्मानजनक द्वितीय श्रेणी प्राप्त की । इसके बाद उन्होने डा० दशरथ शर्मा स अध्ययन करते हुए प्राइवेट रूप स इंटर की तैयारी की । मार्च १९४४ मे उन्होने डूंगर कालेज केन्द्र पर इंटर की परीक्षा दी और द्वितीय श्रेणी म उत्तीर्ण हुए । यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि इंटर की परीक्षा उन्होने बिना किसी अवरोध के अपने विवाह के तीन सप्ताह बाद तथा अपने अनुज के विवाह से लौटने के ५ दिन बाद दी । साथ ही सीनियर कैम्ब्रिज के बाद इंटर का दो वर्ष का पाठय क्रम एक ही वर्ष मे पूरा करके एक साल बचा लिया ।

जुलाई १९४४ म उन्होने दिल्ली विश्वविद्यालय के त्रिवर्षीय डिग्री कोर्स के द्वितीय वर्ष म सेंट स्टीफेंस कालेज मे प्रवेश लिया । उन्होंने इतिहास म बी ए (आनर्स) पाठय क्रम लिया और सन् १९४६ मे द्वितीय श्रेणी म यह परीक्षा उत्तीर्ण की । यह उल्लेखनीय है कि इस परीक्षा म किसी ने भी प्रथम श्रेणी प्राप्त नही की थी और डा० करणीसिंह जी का इतिहास के आनर्स पाठय क्रम मे दिल्ली विश्वविद्यालय म दूसरा स्थान था ।

जून १९४६ म उन्होने पी एच डी के लिए हरास रिसर्च इंस्टीट्यूट से सम्बन्ध कायम किया और बम्बई के सेंट जेवियर्स कॉलेज में नाम दर्ज कराया ।

उनकी शोध का विषय था "बीकानेर राजघराने का मुगलों से सम्बन्ध"। पर उनके इस कार्य में कई वर्षों का व्यवधान पड़ गया। सन् १६४६ में रियासतों के एकीकरण तक तो वे बीकानेर रियासत के मामलों में व्यस्त रहे और सन् १६५२ के बाद वे लोक सभा सदस्य के रूप में राजनीति में अधिक व्यस्त हो गये।

कई वर्षों बाद उन्होंने अपना शोध-कार्य पुनः प्रारम्भ किया। उन्होंने अपने विषय का भी विस्तार किया। अब उनकी शोध का विषय था "बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध (सन् १४६५ से १६४६) सन् १६६४ में बम्बई विश्वविद्यालय ने डा० करणीसिंह जी को उनके शोध प्रबन्ध पर पी एच डी की उपाधि प्रदान की। अपने शोध-कार्य में डा० करणीसिंह जी को हेरास रिसर्च इन्स्टीटयूट के प्रोफेसर कोयलो श्री नाथूराम खड़गावत, डा० दशरथ शर्मा श्री राम सहाय आदि से महत्वपूर्ण निर्देश व सहयोग मिला। वास्तव में डा० करणीसिंह जी के शैक्षिक विकास में डा० दशरथ शर्मा का पूर्ण योगदान रहा है। डा० दशरथ शर्मा के अध्यापन, देख रेख व निर्देशन में ही यह सम्भव हो सका कि डा० करणीसिंह जी ने अपनी शैक्षिक मंजिल प्राप्त की।

यहाँ यह बात स्मरणीय है कि महाराजा गंगासिंह जी डा० करणीसिंह जी को प्रशासकीय प्रशिक्षण दिलाना चाहते थे और डा० करणीसिंह आगे शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे। अतः उन्हें आगे पढ़ने की छूट इस विशेष शर्त के साथ दी गयी कि वे प्रशासकीय प्रशिक्षण के बाद के घंटों में अपनी परीक्षा की तैयारी कर सकते हैं। यह आश्वासन देने के बाद ही उन्हें सीनियर कैम्ब्रिज की तैयारी करने की मंजूरी मिली थी।

युद्ध के मोर्चे पर

हाडा गायड बकडा, करतब-बका गोड।
बळ हठ-बका देवडा, रणबका राठाड़ ॥

द्वितीय महायुद्ध प्रारम्भ होते ही हिटलर की सेनाएँ यूरोप में कई पश्चिमी देशों पर अधिकार करने में सफल हो गयी। अफ्रीका के उत्तरी भाग में भी युद्ध की हलचल प्रारम्भ हुई और उत्तरोत्तर उग्र होती गयी। ब्रिटेन की आठवी सेना ने इटली के नौ डिवीजन निगल लिये। जनरल ओकेनूर ने मार्शल ग्रेजियानी की विशाल इतालवी फौज की धज्जियाँ बिखेर दी। अंग्रेजों को उम्मीद थी कि जल्दी ही अफ्रीका पूरी तरह उनकी मुट्ठी में होगा। पर सन् १६४१ की मध्य

फरवरी मे जब रोमेल ने अफ्रीका के तपते रेगिस्तान मे पर रखा तो शीघ्र ही लडाई के मदान का पासा पलटने लगा। जमनी के प्रसिद्ध जनरल रोमेल, जिसे 'रेगिस्तान का लोमड' कहा जाता है की सेनाएँ तेजी से आगे बढने लगी और तब्रुक को छोड कर लगभग सारे सिरेनाइका से अग्रेजो को हटना पडा।[1] अपनी स्थिति विषम जान तथा जमन सेनाओ को पूव में मिश्र की ओर बढते देख अग्रेजो ने उत्तरी अफ्रीका एव मध्य पूव के अनेक स्थानों पर भारतीय सेनाओ को तनात किया इनम बीकानेर का गगा रिसाला भी था जो उस समय अदन मे अवस्थित था।

अपनी वश–परम्परा के अनुसार युद्ध आरम्भ होते ही बीकानेर के तत्कालीन शासक महाराजा गगासिह जी ने अग्रेज सरकार से मोर्चे पर जान की अनुमति मांगी। अगस्त १९४१ मे महाराजा गगासिह जी ने वाइसराय से पुन प्राथना की कि उन्हे युद्ध भूमि मे जाने की आज्ञा दी जाय। डा० करणीसिह जी ने भी युद्ध भूमि मे जाने की तीव्र इच्छा दिखायी। महाराजा गगासिह जी व डा० करणीसिह जी दोनो ने मध्य–पूव के मोर्चे के लिए प्रस्थान किया। यहाँ यह उल्लेखनीय बात है कि उस समय डा० करणीसिह जी की अवस्था सिफ साढे सत्रह वष की ही थी।[2]

किसी भारतीय रियासत के वतमान इतिहास मे इस प्रकार का दूसरा उदाहरण दुलभ है जबकि किसी पोते ने अपन दादा के साथ लडने हेतु प्रयाण किया हो।[3] बीकानेर के राजघराने ने एक नया रेकॉड भी स्थापित किया। राजघराने के सभी पुरुष सदस्य—स्व० महाराजा गगासिह जी स्व० महाराजा सादूलसिह जी, डा० करणीसिह जी व श्री अमरसिह जी, द्वितीय महायुद्ध मे मोर्चे पर गये।[4] नवम्बर १९४१ म उन्होने मध्य पूव के युद्ध मोर्चे का निरीक्षण किया। इस यात्रा का महाराजा गगासिह जी के तत्कालीन ए डी सी कप्तान जगमाल सिह न अपनी डायरी मे तिथिवार बडा ही रोचक एव विस्तृत वणन किया है।

दिनाक २९ १०-४१ को य लोग बम्बई मे फिलिक्स रुसेल (Felix *Roussel) नामक फ्रेंच जहाज पर सवार हुए जो अगले दिन प्रात अपने गन्तव्य*

---

१ साप्ताहिक हिन्दुस्तान—१ जून १९७५ युद्ध कला विशारद पृ ४८
२ बीकानेर समाचार भाग १ सख्या १ पृ १९
३ बीकानेर एण्ड दि वार १९४४ का प्रकाशन
४ बीकानेर एण्ड दि वार १९४७ का प्रकाशन

की ओर रवाना हुआ। इस जहाज के साथ एक क्रूजर ग्लासगो 'Glasgow व एक अन्य जहाज वेस्टनलैंड 'Westernland' थे। जब यह दल अदन पहुँचा तो अंग्रेज सनिक अधिकारियो व गगा रिसाला क सेनापति ले कनल खेमसिंह ने इनका स्वागत किया। डा करणीसिंह जी ने अदन मे बादशाह सुलेमान (King Soloman) द्वारा निर्मित बताये जाने वाले तालाव दखे तथा हवाई जहाज मे उडते हुए तीन बार गगा रिसाला की बैरको पर गोते लगाये (उडानें भरी)। यह काय निश्चय ही उत्साहपूण था।

अदन से आगे की यात्रा प्रारम्भ हुई। ये लोग तीन विध्वसको के सरक्षण मे यात्रा कर रहे थे। जब जहाज लाल सागर मे प्रविष्ट हुआ तो समुद्र शान्त था। लालसागर विभिन्न प्रकार की मछलियो से भरा हुआ था और दृश्य बहुत रोचक था। इसके एक ओर अफ्रीका है तथा दूसरी तरफ अरब देश। कभी पर्वत माला और कभी रेतीली जगह दिखाई पड रही थी। दोनो ओर के किनारे नजर आते थे। कही कही तो ऐसा मालूम होता था मानो बडी नदी का ही पाट हो। लालसागर मे एक एकान्त सुरक्षित स्थान पर ये लोग उतर गये और स्वेज होते हुए मिश्र की राजधानी काहिरा पहुँचे।

रात मे काहिरा मे पूण ब्लक आउट था। एकाएक हवाई हमले की चेतावनी के साइरन बज उठे। जमन विमान नगर के ऊपर से गुजरे व कुछ मील दूर फायोइन (Fayoin) नामक स्थान पर बम गिराये। डा करणीसिंह जी बाद मे बमबारी के इलाको को दखने गये। काहिरा के निकट ही हवाई मुख्यालय था। डा करणीसिंह जी ने वहा विभिन्न प्रकार के सैकडो विमान देखे। उनके मन मे यह अभिलाषा उत्पन्न हुई कि किसी दिन मै भी विमान चालक बनकर अपना विमान उडाऊँगा। उसकी यह मनोकामना ८-९ वष बाद पूण हुई। काहिरा-निवास के समय ही इन्होने विभिन्न प्रकार के टैंक भी दखे और दल के दो सदस्यो के साथ टैंक पर सवारी की। पर उनकी असली जिज्ञासा तो वास्तविक युद्ध स्थल देखने की थी। दिनाक २९-११-४१ को उन्हे उसके भी दशन हुए जब महाराजा गगासिंह जी क साथ मोर्चे पर गये। प्रात हेलिपोटिस हवाई अड्डे (Helipotis Aerodrome) पर पहुँच कर यह दल कई सैनिक अधिकारियों के साथ Lockhead Budlon' हवाई जहाज से लडाई के असली मोर्चे के लिए रवाना हुआ। डेढ घटे म इनका विमान बागुश हवाई अड्डे Bagush Aerodrome पर पहुँचा। कुछ देर बाद ये पुन उड और प्रात लगभग ६ ३० बजे अग्रिम मोर्चे के निकट हवाई पट्टी पर उतरे। वे उतर कर निकट ही मुख्यालय की मेस H Q Mess मे गये जो थोडी जमीन खोद कर तम्बू की भाँति एक बस मे

बनाया गया था। इसमे केवल चाय ग्रादि मिलती थी। ये मेस मे ही थे कि एक जमन विमान ग्राया। विमान-भेदी तोपें गरज उठी। लेकिन विमान काफी ऊँचाई पर तथा तीव्र गति पर था ग्रत बच निकला।

जगल मे भोजन करन की भाँति दोपहर का खाना खाया ग्रौर लगभग १२ ३० बजे पुन हवाई ग्रड्डे पर ग्रपने हवाई जहाज के पास लौट ग्राय। इतने मे एक दूसरा जमन विमान ग्रा पहुँचा। पुन तोपें गरज उठी। विमान से निकली गोलियाँ बरसती गयी। एक गोली तो हवाई ग्रड्डे पर जहा इनका विमान खडा था उससे कुछ पीछे की ग्रोर लगभग ३ फीट दूर गिरी। इन लोगो के सिर पर लोहे के टोप भी नहीं थे। स्थिति खतरनाक थी। पर किसी ने भी धैय नही खोया ग्रौर बड साहस के साथ इस रोमाचकारी घटना को साक्षात् देखा। इस प्रकार मोर्चे पर व दृश्य देखे, जो बहुतो ने नहीं देखे थे।

कुछ दिन काहिरा मे बिताकर य लोग वापस भारत के लिए रवाना हुए। बगदाद मे इनके विमान म कुछ खराबी हो गयी, ग्रत रात भर वहाँ रुकना पडा। बगदाद स उडकर जब इनका विमान बसरा पहुँचा तो वहाँ सादुल लाइट इन्फन्ट्री द्वारा इ हे गाड ग्राफ ग्रानर दिया गया। वहाँ इ होने इन्फन्ट्री के ग्रफसरो स मुलाकात की व रात का भोजन उनक साथ खाया। दिनाक ६ १२ ४१ को यह दल कराची पहुचा। हवाई ग्रड्डे पर सेठ शिवरतन जी मोहता व कुछ ग्र य सेठो न इनका स्वागत किया ग्रौर मोहता पैलेस मे ले गय। कराची स स्पेशल टेन स रवाना होकर यह दल सोमवार ८ दिसम्बर १९४१ को बीकानेर लौट ग्राया जहा जनता न इनका भव्य स्वागत किया ग्रौर सकुशल लौट ग्राने पर खुशिया मनाई।

महाराजा गगासिह जी के साथ मध्यपूव के मोर्चे की इस यात्रा के दौरान डा करणासिह जी को कई उल्लेखनीय व्यक्तियो से मिलने का ग्रवसर मिला। इनम मध्यपूव के प्रधान सेनापति सर क्लाड ग्राकिनलेक (Claude Auchinlick), एडमिरल कनिघम एयर मार्शल टेडर (Air Marshal Teddar) ग्रादि के नाम उल्लेखनीय है।

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर विश्व के नेताओं के साथ महाराजा श्री गंगासिंह जी तथा लॉयड जॉर्ज प्रभृति।
→
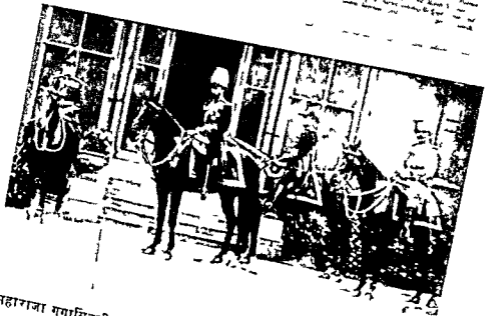
महाराजा गंगासिंहजी बीकानेर इंगलैण्ड के बादशाह किंग पंचम जॉर्ज के साथ घुड़सवारी करते हुए।

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर वर्साय संधि पर हस्ताक्षरकर्त्ता स्व० महाराजा श्री गंगासिंह जी वर्साई स्थित शीश-महल (Hall of Mirrors) में।

←

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर लंदन में आयोजित शाही युद्ध कॉन्फ्रेंस तथा शाही युद्ध मंत्री-मण्डल में सम्मिलित बीकानेर के स्व० महाराजा श्री गंगासिंहजी बहादुर।

↓

पितामह महाराजा श्री गगासिह जी के साथ म करणीसिह जी किशारावस्था म अपनी बडी वहिन प्रिसेस सुशील कवर जी व छोटे भाई प्रिस अमरसिह जी के साथ फौजी वर्दी पहन हुए। ←
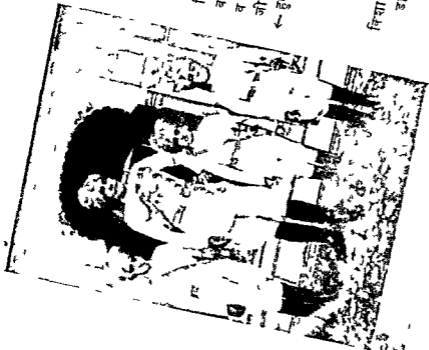
किशारावस्था म महाराजा डा करणीसिह जी →

अणुव्रत आन्दोलन के मंच पर आचार्य श्री तुलसी के साथ वार्तालाप करते हुए महाराजा डा करणीसिंहजी ।

भारत के तत्कालीन गृहमंत्री स्व लालबहादुर शास्त्री जी बीकानेर क्षेत्र की समस्याओं के बारे में Memorandum देने के बाद उनके साथ विचार विमर्श करते हुए महाराजा डॉ करणीसिंहजी ।

बीकानेर राज्य को हरा भरा बनाने वाली गंग कैनाल की Opening Ceremony के अवसर पर दिनांक 26 अक्टूबर 1927 को शिवपुर हैड पर पूजा करते हुए महाराजा श्री गंगासिंह जी बीकानेर।

हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति महाराजा गंगासिंह जी की अगवानी करते हुए डा० सर्वपल्ली राधाकृष्णन उप कुलपति, हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस के प्रांगण में सन् 1941 में जब वे वहां पर Convocation Address देने पधारे।

पितामह स्वर्गीय महाराजा श्री गगासिह जी की गाद म शिशु महाराजा डा० करणी सिह जी व पास म खड है पिताश्री स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिह जी 1924ई ←

पितामह स्वर्गीय महाराजा श्री गगासिह जी क साथ किशारावस्था म महाराजा डा० करणीसिह जी। →
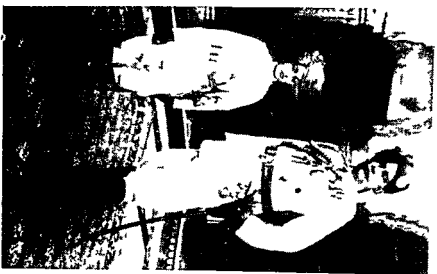
↑ सट स्टीफँस वाग्ज दिल्ली स बी ए की उपाधि प्राप्त वरन वे बाद महाराजा डा करणीसिंह जी (बायी ग्रार स वठे हुए द्वितीय) कक्षा क महयोगिया व अध्यापका व साथ।
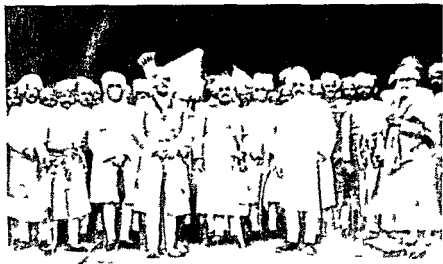
बी ए (आनस) की ल्ल्ली विश्वविद्यालय स उपाधि प्राप्त करते हुए महाराजा डा करणीसिंह जी। ←

सन् 1944 म शादी के समय महाराजा करणीसिंहजी अपने पिता स्व महाराजा श्री सादूलसिंह जी तथा अन्य वर यात्रियो के साथ।

महाराजा डा करणीसिंह जी का सन् 1950 राजतिलक करते समय लिया गया चित्र।

बीकानेर की राजमाता मान्विा श्रीमती सुदशनाकुमारी जी। ←

भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्व डा राजेन्द्र प्रसाद जी द्वारा महाराजा श्री सादूलसिंह जी की मूर्ति का बीकानेर मे अनावरण। ↓

भारत के प्रथम राष्ट्रपति ↑
डा राजेन्द्रप्रसाद जी के
साथ सभापण रत महा
राजा डा करणीसिंह जी।

महाराजा डा करणीसिंह जी
तत्कालीन केन्द्रीय गृहमन्त्री
श्री कलाशनाथ काटजू के साथ →

भारत के राष्ट्रपति स्वर्गीय ↑
डॉ राधाकृष्णन एवं राजस्थान
के मुख्यमन्त्री स्वर्गीय मोहनलाल
सुखाड़िया के साथ महाराजा
डॉ करणीसिंह जी।

लार्ड माउन्टबेटन भारत के
तत्कालीन वायसराय व
गवर्नर जनरल के साथ
वार्तालाप करते हुए महा
राजा डॉ करणीसिंह जी। →

← पितामह स्व महाराजा श्री गगासिह जी व साथ महाराजा डा करणीसिह जी जब व उनके साथ द्वितीय महायुद्ध मे भाग लेने गये। (सन् 1941 Cairo)

↑ स्वकीय विमान सचालन करत हुए महाराजा डा करणीसिह जी।

मन् 1957 म ममन्ीय चुनाव अभियान म बीकानर की जनना का अभिवादन म्वीकार करत हुए डा करणीमिहजी, जा मन् 1952 स मन् 1977 तक मसद मदम्य रह आर इमक बाद चुनावा स म्वय हट गए।

सन् 1957 मे ससदीय चुनाव अभियान म श्री गगानगर म जनता का अभिवादन स्वीकार करत हुए महाराजा डॉ करणीमिहजी।

आस्ला म सफल शूटिग करन पर नागरिक अभिन न्दन के समय भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री स्व प जवाहरलाल नहरू के करकमला स Salver ग्रहण करत हुए महाराजा डा करणीसिह। बीच म महारानी साहिबा श्री सुशीला कुमारीजी बठी हुई है।

राजकुमारी राज्यश्री कुमारी का आशीर्वाद देत हुए भारत के प्रथम प्रधानमन्त्री प जवाहरलाल नहरु क साथ महाराजा डा करणीसिहजी।

प्रथम भारतीय लोकसभा म निर्वाचित ↑ ससद सदस्य महाराजा डा करणीसिह आल इडिया रेडियो दिल्ली से भाषण करत हुए।

पी एच डी (बम्बई विश्वविद्यालय) उपाधि प्राप्त करत हुए महाराजा डा करणीसिह जी इनका शोधकाय विषय 'बीकानेर राजघरान का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध था। →

भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर जी शास्त्री द्वारा बुलाई गयी Leaders of Opposition की Meeting में भाग लेते हुए महाराजा डा करणीसिंहजी।

भारत के प्रधानमंत्री स्व लालबहादुर शास्त्री की अध्यक्षता में अखिल भारतीय मानव सेवा संघ के अधिवेशन में भाषण देते हुए महाराजा डा करणीसिंहजी।

प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति पर विश्व के ननाआ के साथ महाराजा श्री गगासिह जी तथा लायड जाज प्रभृति।
→

महाराजा गगासिहजी बीकानेर इगलण्ड के बादशाह किग पचम जाज के साथ घुडसवारी करत हुए।

अणुव्रत आन्दोलन के संचालक आचार्य श्री तुलसी के साथ वार्तालाप करते हुए महाराजा डॉ. करणीसिंहजी।

भारत के तत्कालीन गृहमंत्री स्व. लालबहादुर शास्त्री जी बीकानेर क्षेत्र की समस्याओं के बारे में Memorandum देने के बाद उनके साथ विचार विमर्श करते हुए महाराजा डॉ. करणीसिंहजी।

बीकानेर राज्य को हरा भरा बनाने वाली गंग कनाल की Opening Ceremony के अवसर पर दिनांक 26 अक्टूबर 1927 को शिवपुर हैड पर पूजा करते हुए महाराजा श्री गंगासिंह जी बीकानेर।

हिन्दू विश्वविद्यालय के कुलपति महाराजा गंगासिंह जी की अगवानी करते हुए डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन, उप कुलपति, हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस के प्रांगण में सन् 1941 में जब वे वहां पर Convocation Address देने पधारे।

↑ सेंट स्टीफेंस कालेज, दिल्ली से बी ए की उपाधि प्राप्त करने के बाद महाराजा डा करणीसिंह जी (बायीं ओर से बैठे हुए द्वितीय) कक्षा के सहयोगियों व अध्यापकों के साथ।

बी ए (आनर्स) की दिल्ली विश्वविद्यालय से उपाधि प्राप्त करते हुए महाराजा डा करणीसिंह जी। ←

सन् 1944 म शादी के समय महाराजा करणीसिंहजी अपने पिता स्व महाराजा श्री सादूलसिंह जी तथा अ य वर यात्रिया के साथ।

महाराजा डा करणीसिंह जी का सन् 1950 राजतिलक करते समय लिया गया चित्र।

बीकानेर की राजमाता साहिबा श्रीमती सुदर्शनाकुमारी जी । ←

भारत के प्रथम राष्ट्रपति स्व डा राजेन्द्र प्रसाद जी द्वारा महाराजा श्री सादूलसिंह जी की मूर्ति का बीकानेर में अनावरण । ↓

भारत के प्रथम राष्ट्रपति ↑
डा राजेन्द्रप्रसाद जी के
साथ सभापण रत महा
राजा डा करणीसिंह जी।

महाराजा डॉ करणीसिंह जी
तत्कालीन केन्द्रीय गृहमन्त्री
श्री कलाशनाथ काटजू के साथ →

← पितामह स्व महाराजा श्री गगासिह जी के साथ महाराजा डा करणीसिह जी जब वे उनके साथ द्वितीय महायुद्ध मे भाग लेने गये। (सन् 1941 Cairo)

↑ स्वकीय विमान सचालन करते हुए महाराजा डा करणीसिह जी।

सन् 1957 म ससदीय चुनाव अभियान म बीकानेर की जनता का अभिवादन स्वीकार करत हुए डॉ करणीसिहजी जो सन् 1952 स सन् 1977 तक ससद सदस्य रह और इसके बाद चुनावो स स्वय हट गए।

सन् 1957 मे ससदीय चुनाव अभियान म श्री गगानगर म जनता का अभिवादन स्वीकार करत हुए महाराजा डा करणीसिहजी।

आस्लो में सफल शूटिंग करने पर नागरिक अभिनन्दन के समय भारत के प्रथम प्रधानमंत्री स्व प जवाहरलाल नेहरू के करकमलों से Salver ग्रहण करते हुए महाराजा डा करणीसिंह । बीच में महारानी साहिबा श्री सुशीला कुमारीजी बैठी हुई हैं।

राजकुमारी राज्यश्री कुमारी को आशीर्वाद देते हुए भारत के प्रथम प्रधानमंत्री प जवाहरलाल नेहरु के साथ महाराजा डा करणीसिंहजी।

प्रथम भारतीय लोकसभा म निर्वाचित ↑ समद सदस्य महाराजा डा करणीसिंह आल इडिया रडिया दिल्ली से भाषण करते हुए।

पी एच डी (बम्बई विश्वविद्यालय) उपाधि प्राप्त करत हुए महाराजा डा करणीसिंह जी इनका शोधकार्य विषय बीकानेर राजघरान का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध था। →

भारन क तत्कालीन प्रधानमत्री श्री लाल्वहादुर जी शास्त्री द्वारा बुलाई गयी Leaders of Opposition की Meeting म भाग लेन हुए महाराजा डा करणीसिहजी ।

भारत के प्रधानमत्री स्व लालवहादुर शास्त्री की अध्यक्षता म अखिल भारतीय मानव सेवा सघ के अधिवशन म भाषण देते हुए महाराजा डा करणीसिहजी ।

सन् 1965 म भारत पाक युद्ध के समय भारत के तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्री लालबहादुर शास्त्री को युद्ध सामग्री के लिए अपना निजी सोना प्रदान करते हुए महाराजा करणीसिंहजी।

[illegible]

विवाह

डा० करणीसिंह का शुभ विवाह शुक्रवार ता० २५ फरवरी सन् १६४४ तदनुसार फाल्गुन कृष्णा २ के सम्वत् २००० को डूगरपुर के महारावल लक्ष्मणसिंह-जी की पुत्री राजकुमारी सुशील कँवर जी सा के साथ सम्पन्न हुआ। लगभग दो शताब्दी पूव बीकानर क एक शासक महाराजा सुजानसिहजी का विवाह भी डूगरपुर की एक राजकुमारी से हुआ था।[1] डा० करणीसिंहजी के विवाह के समय द्वितीय महायुद्ध चल रहा था, अत आपके पिताश्री स्व० महाराजा सादुलसिंहजी ने पेट्रोल की कमी व रेल्वे द्वारा यात्रा में कठिनाइयो को ध्यान मे रखते हुए विवाहोत्सव अपेक्षाकृत सादगी से मनाने का आदेश दिया। फलस्वरूप बीकानेर रियासत के सरदार जिलों के अधिकारी, मुसद्दी, सेठ-साहूकार एव जिलो के अन्य गण्यमान्य व्यक्ति विवाहोत्सव म भाग लेन के लिए आमन्त्रित नही किये गये।

दिनाक १६ २ ४४ को तीसरे पहर हाथ धान का दस्तूर जूनागढ में दवीद्वारे मे सम्पन्न हुआ। दिनाक २१ २-४४ को प्रात ११-५३ पर तोरण एव विनायक पूजन की रस्मे गढ मे की गई। इसके बाद माया जी के आगे धार्मिक विधिया की गइ। दिनाक २२ २-४४ को लालगढ मे करणी निवास के अगले कमर म रीवा राज्य की आर से प्रात माहेरा का दस्तूर भेंट किया गया।

दिनाक २३ २-४४ को सूर्योदय से पूव ही बीकानेर मे चहल पहल आरम्भ हो गयी। प्रात ७ ४५ से पहले ही गढ के चौगान में जलूस में भाग लेने वाली बीकानेर की सेना एव लवाजमा पक्तिबद्ध खड़े होगये और वर तथा विभिन्न रियासतों क अनेक शासकों के आने पर सलामी दी। वर सोन के हौदे वाले हाथी पर सवार हुए और जलूस के साथ बीकानेर रेल्वे स्टेशन की ओर प्रस्थान किया। यद्यपि वर्षा हो रही थी तथापि जलूस के माग के दोनों ओर बीकानेर की जनता की भारी भीड पक्तिबद्ध खडी थी। बहुरगी पोशाकें पहन स्त्रियो की भीड घरा की छतों पर जलूस देखने के लिए लगी थी।

जलूस एक मील लम्बा था।

बरात मध्यान्ह से पूव ११-१२ पर बीकानेर से स्पेशल ट्रेन स रवाना हुई

---

१ बीकानेर समाचार विवाह अक पृ० ८

ग्रोर १२ १२ पर देशनोक पहुँची। यहाँ श्री करणी जी [1] का प्रसिद्ध मन्दिर है। श्री करणी जी राठौड़ो की कुल देवी है और विपत्ति मे सदा उनकी सहायता करती है।[2] इनके अनेक चमत्कार प्रसिद्ध हैं।[3] डा करणीसिंह जी का नाम इस बात का द्योतक है कि बीकानेर राजघराने में श्री करणी जी के प्रति कितनी अधिक श्रद्धा है। वर तथा बारात मे चलने वाले राजाग्रो ने मंदिर मे जाकर श्री करणी जी को भेंट अर्पित की। रात को ८ बजे स्पेशल ट्रेन ने देशनोक से प्रस्थान किया। दिनाक २४ २-४४ को साय ५-५० वजे यह ट्रेन उदयपुर पहुँची। उदयपुर के महाराणा सा व उनके स्टाफ ने बरात का स्टेशन पर स्वागत किया।

विवाह के दिन अर्थात २५-२-४४ को सारे बीकानेर राज्य मे छुट्टी मनायी गयी और प्रात ८ बजे बीकानेर मे बन्दी मुक्त किये गये।

डूगरपुर से अनुमानतया दो मील की दूरी पर श्रीमान् महारावल साहब, डूगरपुर ने बरात का स्वागत किया। एक पंडित ने वर के तिलक किया। बरात का दर्शनीय जलूस मध्याह्न मे १२-३७ पर जनवासे की ओर चला तथा १-१० पर जनवासे पहुचा।

सायकाल ४-१७ पर बीकानेर के कई सरदार और अन्य सज्जन पाहला ओर बरी लेकर गढ म गये। तदनन्तर वीरेन्द्र भवन मे वर को लग्नपत्रिका भेंट की गयी।

सायकाल ७ १२ पर वरानुगमन के सुन्दर एव मनमोहक विशाल जलूस ने प्रस्थान किया। वर हाथी पर आरूढ थे। राजमहल के तोरन प्रोल पर वर ने तोरण बानने का दस्तूर किया और जनानी ड्योढी के सामने हाथी पर से अवरोहण किया। द्वारपूजा के पश्चात पुरोहितजी ने ड्योढी के बाहरी द्वार पर पेखना' और 'आरती' की। डूंगरपुर की महारानी साहिबा ने ऐसा ही ड्योढी के भीतरी द्वार पर किया।

वर वधू के चवरी मे बैठते ही तोपो की सलामी दी गयी। रात्रि मे १० २७ पर विवाह सस्कार हो जाने पर तास से ढका हुआ चाँदी का एक खासा जनाने मे लाया गया और वर एव वधू ने शाही जलूस मे जनवासे की ओर प्रस्थान किया। बरात के लोग आगे आगे चलते थे और डूगरपुर राज्य के

---

१ करनी चरित्र श्री किशोरसिंह बाहस्पत्य

२ भगवती श्री करनी जी महाराज (अंग्रेजी) कु० कैलाशदान एस० उज्ज्वल पृ० ७५

३ श्री करणी लीला श्री छगनलाल व प्रेमशंकर खत्री

उमराव खासे के दोनो ओर । जलूस जनवासे मे रात्रि ११ ४५ पर पहुचा । गढ तथा माग पर की राज्य की अ य इमारतो पर रोशनी की गयी ।

२६-२-४४ को प्रात काल डूगरपुर के महाराजकुमार जनवासे आये और वधू को प्राचीन राजमहलो मे वापस ले गये । मध्या ह मे १२ १५ पर बासी जुहारी के लिए प्राचीन राजमहलो मे गये । डूगरपुर महारावल साहब ने वर का स्वागत किया और उ हे दरबार हॉल मे ले गये जहा उ हे जुहारी दी गयी । जुहारी के पश्चात वर ने जनाने मे कलेवा किया और जनवासे लौट आये ।

२६-२-४४ को डूँगरपुर के राजमहल मे भोज हुआ । इस अवसर पर स्व महाराजा सादुलसिंह जी न अपने भाषण मे कहा— 'प्रात स्मरणीय हमारे पूज्य पिता और श्रीमान् महारावल साहब मे अत्य त घनिष्ठ एव हार्दिक व्यक्तिगत सम्ब ध था । श्रीमान् महारावल साहब द्वारा हमारे ज्येष्ठ पुत्र के प्रति किये कृपापूण एव प्रेमयुक्त निर्देश ने हमे अत्यधिक प्रभावित किया, जिसके लिए हम और हमारा पुत्र दोनो ही अत्य त आभारी हैं ।
हम लोगो ने अपने महामा य उदारचेता सत्कारकर्ता से उच्च कोटि की कृपा एव सम्मान प्राप्त किया है, जिनका निज का सचालन और प्रभाव हम लोगो की छोटी से छोटी आवश्यकता तथा आराम का प्रब ध करने में प्रत्येक कोने मे देखा जा सकता है और विभिन्न प्रबधो की पूणता स्वय ही अपने विषय मे बोल रही है । हम इस अवसर पर श्रीमान् महारावल साहब के भाइयो तथा डूँगरपुर के स्टाफ और अधिकारियो को भी हार्दिक ध यवाद देते है, जि होने हमारे निवास को और भी अधिक सुखमय एव आन दमय बनाने के लिए इतना परिश्रम किया है ।"

दिनाक २७-२ ४४ को प्रात काल प्राचीन राजमहलो के 'बड़ा महल' मे समधूनी की रस्म को गयी । मध्या ह मे जुलूस ने प्रस्थान किया । वर चाँदी के हौदे वाले हाथी पर थे और वधू जरी के कामदार पर्दे वाले चाँदी के खासे मे । बरात "विजय भवन" से मोटर गाडियो मे साय ४-३० बजे बिदा हुई और उदयपुर से स्पेशल ट्रेन द्वारा रात्रि मे ८ बजे प्रस्थान किया ।

दिनाँक २८ २-४४ को स्पेशल ट्रेन सायकाल देशनोक पहुँची । डा० करणीसिंह जी अपने पिताजी सहित श्री करणी जी के म दिर मे पधारे जहाँ आप लोगो ने धोक दी और भेंटें की । अ य मन्दिरो में भी भेंटें भेजी गयीं । स्पेशल ट्रेन देशनोक से रवाना होकर रात्रि मे ७ ५५ पर बीकानेर पहुची । स्टेशन पर सदा की भाँति सजावट की गयी थी । बरात का स्वागत करने हेतु स्टेशन पर राज्य के मत्री सैनिक व असैनिक अधिकारी तथा सेठ साहूकार

उपस्थित थे। स्टेशन के प्लेटफाम पर पूरी पोशाक मे गाड आफ ऑनर तथा सलामी देने वाली बटरी पक्तिबद्ध खडी थी। जुलूस के माग के दोनो ओर बीकानेर राज्य की सेना पक्तिबद्ध खडी थी और लवाजमा प्रतीक्षा कर रहा था।

जसे ही वर सैलून से उतरे,गाड ऑफ आनर न सलामी दी और बैंड न बीकानेर राज्य का गीत बजाया। साथ ही साथ तोपों की सलामी भी हुई। वर ने गाड आफ ऑनर का निरीक्षण किया और फिर सोने के हौदे वाले हाथी पर विराजे। जुलूस रवाना हुआ। वर के हाथी के ठीक पीछे 'स्टेट लण्डो' गाडी चल रही थी, जिसमे वधू अपनी परिचारिकाओ के साथ विराज रही थी। इसक पीछे डूगर लॉसस का दल, धौंसा, बैंड, लवाजमा और पल्टनें चल रही थी।

जुलूस का माग प्रधान स्टेशन से आरम्भ होकर मोहता धमशाला, डूंगर कालेज (वतमान फोट उच्च माध्यमिक विद्यालय), कस्टम और एक्साइज (आव कारी) के दफ्तर, रेल्वे क्रासिंग और के०ई०एम० रोड होता हुआ जूनागढ की जनानी ड्योढी पहुँचा। वर के हाथी के करण प्रोल द्वार मे प्रवेश करते ही तोपो की सलामी दी गयी। जब हाथी हजूर पैडियो के निकट पहुँचा और वर हजूर पडियो पर उतरे तो नरेशों तथा राजपरिवारो के सदस्यो ने वर पर निछरावलें की। चार घोडों वाली वधू की लण्डो गाडी जनानी ड्योढी को ले जायी गयी।

इसके बाद वर वधू गढ मे अनेक मन्दिरो म पधारे और भेटें कीं। धार्मिक विधियो के पश्चात् वर लालगढ पधारे और वधू श्री महारानी जी साहिब के साथ बगले पधारी, जहाँ पगे लागनी और 'हथ बोरना' की रस्म की गयी। तब श्री महारानी जी साहिब वधू सहित लालगढ पधारी।

दिनांक ४ ३-४३ को डा० करणीसिहजी क शुभ विवाहोपलक्ष मे लालगढ पैलेस मे एक भोज हुआ। उसमे मेहमानो का स्वागत करते हुए स्व० महाराजा सादुलसिंह जी ने कहा –' विवाहोत्सव के अनुपम और सुखप्रद अवसर पर नरेशों युवराजो एव समस्त अन्य मेहमानो का बीकानेर मे अत्यन्त हार्दिक स्वागत करते हुए हमे परम हष होता है। अपने आदरणीय शिक्षक प० चुन्नीलाल शर्मा को आज यहाँ उपस्थित देखकर हम परम प्रसन्न हैं। हमे विश्वास है कि आप समस्त सज्जन हमारे साथ भक्तिपूण प्राथना में सम्मिलित होंगे कि सव-शक्तिमान् परमात्मा हमारे दोनो पुत्रो तथा उनकी वधुओ को सवसम्भव सौरय एव सुन्दर स्वास्थ्ययुक्त सुदीघ एव समृद्धिपूण वैवाहिक जीवन कृपा पूवक प्रदान करें।'

इस अवसर पर कोटा महाराव साहिब पालनपुर नवाब साहिब एव रीवा नरेश ने भी अपनी मगल कामना प्रकट की।

विदेश यात्राएँ

बीकानेर महाराजा डा० करणीसिंह जी ने अनेक देशो की यात्राएँ की है। उनकी सर्वप्रथम विदेश यात्रा सन् १९४१ मे हुई जब कि वे महाराजा गगासिंह जी के साथ मध्य-पूर्व में गये। इसका विस्तृत वर्णन पहले किया जा चुका है। यूरोप की पहली यात्रा उन्होने सन् १९४६ मे की। उनके साथ महारानी साहिबा, महाराज अमरसिंह जी, रानी साहिबा ठा० भरतसिंह जी व आनन्दसिंह जी गये। यह यात्रा उन्होने वायुयान से की। बम्बई से वे जेनेवा गये। वहाँ से फ्रांस व इगलैंड होते हुए उन्होने नार्वे व स्वीडन का भ्रमण किया। वहाँ से लन्दन आकर वे भारत लौट आये। इसके बाद सन् १९५० म अपने पिताजी की तबियत ठीक न होने के कारण वे अकेले लन्दन गये। यह यात्रा केवल दस दिन की थी।

लगभग दस वर्ष के बाद उन्होने विश्व-भ्रमण का निश्चय किया। सन् १९५९ मे उन्होंने ७० दिनों मे विश्व भ्रमण का कार्यक्रम बनाया। साथ मे महारानी साहिबा व ठा० आनन्दसिंह जी थे। बम्बई से वायुयान द्वारा वे पेरिस गये। फिर जेनेवा व रोम जाकर वे लन्दन आ गये। यहाँ से साऊथम्पटन से न्यूयार्क तक की यात्रा उन्होने विशाल जल पोत "क्वीन मेरी" से की और अटलांटिक महासागर को पार किया। जब जहाज अमेरिकन तट से कुछ दूर था तो न्यूयार्क की गगन चुम्बी अट्टालिकाए वहा से काली काली लकीरो की भाति दृष्टिगोचर हो रही थी। न्यूयार्क से ये लोग वाशिंगटन, मियामी, लॉस एजीलस, सन फ्रांसिस्को आदि स्थानों पर गये। फिर ये मैक्सिको गये। मैक्सिको की यात्रा कर ये पुन अमेरिका से वायुयान द्वारा हवाई द्वीप होते हुए जापान की राजधानी टोकियो पहुँचे। उस समय जेट हवाई जहाज का प्रचलन आरम्भ हुआ ही था। अत उन्होने प्रथम बार टोकियो से हागकाग तक की यात्रा जेट हवाई जहाज से की। वहाँ से फिर ये बम्बई लौट आये। इस यात्रा के विभिन्न देश, उनके भिन्न भिन्न प्रकार के व्यक्ति दृश्य, रहन-सहन, खान-पान आदि को उन्होने न केवल अच्छी तरह से देखा और समझा, बल्कि इस सम्पूर्ण यात्रा की लगभग ढाई घटे की फिल्म भी तैयार की। वह फिल्म आज भी एक धरोहर के रूप मे उनके पास सुरक्षित है और देखने पर उन देशो के दृश्यो की अनेक स्मृतियाँ जाग्रत कर देती है।

इसके बाद डा० करणीसिंह जी की विदेश यात्राओ का जो सिलसिला

प्रारम्भ हुआ वह प्राय निरन्तर बना रहा। इनमे से अधिकाश यात्राएँ इन्होने निशानेबाजी प्रतियोगिता म भाग लेने हेतु की। इन यात्राओ का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है —

सन् १९६०–रोम ओलम्पिक मे निशानेबाजी प्रतियोगिता मे गय। रोम से म्यूनिख, जेनेवा लन्दन आदि का भ्रमण कर भारत लौट आये।

सन् १९६१–ओसलो (नार्वे की राजधानी) मे आयोजित विश्व निशानेबाजी प्रतियोगिता मे सम्मिलित हुए। वहाँ से स्वीडन, डेनमार्क होते हुए स्वदेश लौटे।

सन् १९६२–काहिरा (मिश्र की राजधानी) म हुई विश्व निशानेबाजी प्रतियोगिता मे गये। शूटिंग की दृष्टि से सन् १९६२ की काहिरा यात्रा को डा० करणीसिंह जी महत्त्वपूर्ण मानते हैं। इन्होंने यहा विश्व का रजत पुरस्कार (पदक) जीता तथा स्वर्ण पदक के लिए ट्राई किया। यहाँ आपका प्रदर्शन काफी अच्छा रहा।

सन् १९६३–टोकिओ (जापान की राजधानी) मे प्रि ओलम्पिक प्रतियोगिताए हुइ। इसमे डा० करणीसिंह जी भारतीय टीम के कप्तान बन कर गये। लौटते समय उन्होंने हागकाग, सिंगापुर बैंकाक आदि की यात्रा की।

सन् १९६४–टोकियो ओलम्पिक मे निशानेबाजी प्रतियोगिता मे भाग लेने हेतु गये। वापसी मे कम्बोडिया की राजधानी नामपेन्ह गय एव अंकोरवाट क विश्व प्रसिद्ध हिन्दु मन्दिर के दर्शन किये। बर्मा म हजारो राजस्थानियों ने उनका तथा महारानी साहिबा बीकानेर का स्वागत किया। हिन्दुस्तानी नागरिको की समस्या को जो कि बर्मा मे सरकार पलटने पर पैदा हुई थी, लोकसभा म तुरन्त रखने का आश्वासन दिया। भारत लौटते ही उन्होंने विभिन्न मन्त्रियो को भारतीयो की दयनीय स्थिति से अवगत कराया। बर्मा होते हुए भारत लौट आये।

सन् १९६५–क्रिसमस के समय बड़ बाई साहिबा श्री राज्यश्री कुमारी जी को साथ लेकर हॉंगकाग की यात्रा की।

सन् १९६६–विजवाडन जर्मनी मे हुई निशानेबाजी प्रतियोगिता मे भाग लिया और यूरोप का भ्रमण कर लौटे। भारतीय टीम का प्रतिनिधित्व किया।

सन् १९६७–जापान मे आयोजित प्रथम एशियन निशानेबाजी प्रतियोगिता मे भाग लेने गये। बड़े बाई साहिब राज्यश्री कुमारी जी भी साथ थी। वहा राजश्री कुमारी जीं ने शूटिंग मे ख्याति प्राप्त की

सन् १९६७–इटली मे बोलोनिया म आयोजित विश्व शूटिंग चैम्पियनशिप प्रतियोगिता मे सम्मिलित हुए।

सन् १९६८–मैक्सिको ओलम्पिक म भाग लिया। यहाँ भी इनका परिणाम महत्वपूर्ण रहा। वापसी मे लन्दन, यूरोप आदि का भ्रमण कर भारत लौटे ।

सन् १९६९–स्पेन मे सैन सैबेस्टियन मे आयोजित विश्व शूटिंग चैम्पियनशिप प्रतियोगिता मे भारतीय टीम के कप्तान के रूप मे गये । उल्लेखनीय हैं कि यहाँ आयोजित निशानेबाजी प्रतियोगिताओ मे बडे बाई साहिब राज्यश्री कुमारी जी ने १६ वर्ष की छोटी आयु मे महिलाओ मे विश्व मे आठवा स्थान प्राप्त किया।

सन् १९७०-७१–डा० करणीसिंह जी लन्दन की यात्रा पर गये। महारानी साहिबा के अतिरिक्त बडे बाई साहिब राज्य श्री कुमारी जी तथा छोटे बाई साहिब मधूलिका कुमारी जी को भी साथ ले गये।

१९७१–दक्षिणी कोरिया की राजधानी सियोल मे आयोजित एशियन शूटिंग चैम्पियनशिप मे भाग लिया और क्लेपिजन शूटिंग मे स्वर्ण–पदक प्राप्त किया। भारत की क्लेपिजन टीम जिनके वे कप्तान थे, और बडे बाईसाहब राज्यश्री कुमारी जी इत्यादि ने क्लेपिजन टीम मे भारत के लिए Bronze पदक जीता

सन् १९७२–म्यूनिख ओलम्पिक मे भाग लिया। महारानी साहिबा, बडे बाई साहिब तथा छोटे बाई साहिब भी साथ गयी।

सन् १९७३– के बाद महिने-दो महिने के लिए वे इग्लैंड जाते रहे है। बडे बाई साहिब राज्यश्री कुमारीजी का विवाह होने के बाद वे अपने पति के साथ इग्लैंड म रहने लग गयी, अत वहाँ उनसे मिलने गये ।

सन् १९७४–बडे बाई साहिब मे मिलने इग्लैण्ड गये। वहा से यूरोप के कुछ अन्य देशो का भी भ्रमण किया।

सन् १९७४–यूरोप स भारत आकर फिर ईरान की राजधानी तेहरान मे आयोजित एशियन शूटिंग चैम्पियनशिप मे भाग लेने हेतु गये। इसमे भारत को प्रथम मेडल मिला। भारतीय टीम के कप्तान थे। ट्रेप म सिल्वर मैडल व स्कीट मे Bronze मडल प्राप्त किया।

सन् १९७५–इगलड से भारत लौटने के पाँच दिन बाद ही एशियन शूटिंग चैम्पिनशिप मे भाग लेने हेतु क्वालालम्पुर (मलेशिया की राजधानी) गये और ट्रेप शूटिंग मे रजत पदक प्राप्त किया। इस दौरे मे ये भारतीय टीम के कप्तान भी थे।

सन् १९७७–आपने इगलैंड की यात्रा की और महारानी साहिबा को साथ लेकर बडे बाई साहिब राज्यश्री कुमारी जी से मिलने गये।

डा० करणीसिंह जी सिद्धान्त साम्यवाद के विरुद्ध हैं। सन् १६५६मे विश्व भ्रमण के समय उन्होने चीन जाने की मजूरी मागी, पर यह मजूरी उन्हें विश्व यात्रा के बाद भारत लौटने के उपरान्त मिली। सन् १६६६ मे जब वे यूरोप गये थे तो उनका वायुयान खराब हो गया और विवश होकर उसे चेकोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग के हवाई अड्डे पर उतरना पड़ा। एग्रर इडिया का अधिकारी उन्हें प्राग घुमा कर लाया। उन्होने देखा कि हवाई अडडे व अन्य सभी स्थानो पर बन्दूक तथा मशीनगन लिए हुए व्यक्ति खडे हैं। यद्यपि प्राग मे वे केवल पाँच घटे ही रुक, पर इस स्थिति को देखकर उनका दम घुटने लगा। इसी प्रकार दो बार वे मास्को से होकर गुजरे। वे हवाई अड्डे के लाऊज मे गये। वहाँ भी उन्होने वही स्थिति पायी, जो प्राग मे थी। डा० करणीसिंह जी स्वतन्त्र विचारों के जनतान्त्रिक व्यक्ति हैं और उनकी मान्यता है कि साम्यवादी देशो के साथ भारत की विचारधारा नहीं मिलती। सन् १६७७ मे हुए आम चुनावो ने यह स्पष्ट कर दिया है कि यहाँ के लोग जनतन्त्र चाहते हैं। अत भारत को लोकतान्त्रिक देशो से ही घनिष्ठ सम्बन्ध रखने चाहिए। डा० करणीसिंह जी का कहना है कि सन् १६७७ के चुनावो के बाद विदेशो मे भारत की प्रतिष्ठा बढी है। विश्व के जनतान्त्रिक देश यह मानने लगे हैं कि भारत के लोग चाहे निरक्षर हो, पर वे नासमझ नही और आवश्यकता पडने पर वे सत्ता को भी बदल सकते है। सन् १६७७ व १६८० के चुनाव इसके प्रतीक हैं।

डा० करणीसिंह जी ने अधिकाश विदेश यात्राएँ वायुयान से ही की हैं। उनका कहना है कि जलपोत से यात्रा मे खर्च अधिक होता है व समय भी ज्यादा लगता है। केवल खूब धनवान् व्यक्ति ही आराम करने की दृष्टि से आज के जमाने में जलपोत (जहाज) से यात्रा करते है। सामान्य व्यक्ति की यात्रा का साधन तो अब वायुयान ही है। अब एक भारतीय पाँच दस हजार रुपयो मे वायुयान से अमेरिका जाकर वापस आ सकता है। वायुयान के किराये मे भी आजकल भ्रमण (Excursion) युवा (Youth) समूह (Group) आदि के नाम पर छूट मिलने लगी है। डा० करणीसिंह जी स्वय वायुयान यात्रा को ज्यादा पसन्द करते हैं, क्योकि समय कम लगने के साथ साथ वायुयान मे सफाई काफी रहती है। यो रिटायर होने के बाद वे जलपोत (जहाज) की यात्रा को लाभ दायक मानते हैं।

इन विदेश यात्राओ के समय डा० करणीसिंह जी अनेक उल्लेखनीय व्यक्तियो से मिले। इनमें ब्रिटेन की साम्राज्ञी, मिसेज कनेडी, अमेरिका के राष्ट्रपति आइजन हावर तथा रिचड निक्सन, जोर्डन के शाह हुसैन अमेरिका के

स्वराज्य प्राप्ति और राजस्थान का एकीकरण

सन् १९४६ म बी० ए० आनस की परीक्षा उत्तीण कर डा० करणीसिंह जी दिल्ली से बीकानेर लौट आये। उस समय सारे देश मे आजादी प्राप्त करने का सकल्प दृढ़ता से दोहराया जा रहा था। भारत की जन-भावना को समझते हुए ब्रिटिश सरकार ने माच सन् १९४६ मे मत्री मडल मिशन की नियुक्ति की। इस मिशन का उद्देश्य एक ओर तो अग्रेजो और भारतीयो तथा दूसरी ओर काग्रेस व मुस्लिम लीग के बीच गतिरोध को दूर करने का पूण प्रयत्न करना था। अग्रेजो ने भारत को स्वतत्र करने का जो वचन दिया था, उसकी ईमानदारी का भारतीयो को विश्वास दिलाने के लिए मिशन को मौके पर ही निणय करने का अधिकार दिया गया। २३ माच सन् १९४६ को यह मिशन भारत आया।

१६ मई सन् १९४६ को मत्री मडल मिशन की योजना घोषित की गयी। इस योजना मे यह प्रस्ताव किया गया था कि भारत मे एक ही सरकार होगी जो केवल सुरक्षा, विदेशी मामले और सचार के लिए उत्तरदायी होगी। अन्य बातो के लिए देश तीन वर्गों मे विभाजित किया जायेगा — अ' वग मे हिन्दू बहुल भाग 'ब' वग मे मुस्लिम बहुल भाग और स' वग म वह भाग होगा, जहाँ मुसलमानो का बहुमत अल्प हो। मुस्लिम लीग ने पहले तो योजना के पक्ष मे अपनी सहमति प्रकट की, पर २७ जुलाई सन् १९४६ को अपनी स्वीकृति वापस ले ली। १६ अगस्त का दिन सीधी कारवाई का दिन घोषित किया गया। फलस्वरूप कलकत्ता मे हिन्दुओ का कत्लेआम हुआ, जिससे साम्प्रदायिक उन्माद की आग भडक उठी। अगले एक वष मे यह भारत के उपमहाद्वीप म फैल गयी और सीमा के दोनो ओर लाखो पुरुष, स्त्रिया और बच्चे बबरता से कत्ल कर दिय गये।

२ सितम्बर सन् १९४६ को केन्द्र में अन्तरिम सरकार न शपथ ग्रहण की। ९ दिसम्बर सन् १९४६ से विधान निर्मात्री सभा काम करन लगी। २०फरवरी सन् १९४७ को ब्रिटिश प्रधानमत्री एटली ने हाउस आफ कामन्स म घोषणा कर दी कि जून १९४८ तक भारत की एक उत्तरदायी सरकार को सत्ता

हस्तांतरित कर दी जायेगी। लार्ड वेवल ने भारत के वाइसराय पद से त्याग पत्र दे दिया और २४ मार्च सन् १९४७ को लार्ड माउन्ट बैटन ने उनका पद संभाला। भारत में जो परिवर्तन हो रहा था उसका प्रभाव देशी रियासतों में भी परिलक्षित होने लगा। बीकानेर के तत्कालीन नरेश स्व० महाराजा सादूलसिंह जी ने भावी स्थिति को समझने में अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया। उन्होंने नरेन्द्र मंडल के अध्यक्ष भोपाल के नवाब के षड्यन्त्र को विफल कर दिया और देशी रियासतों के भारतीय संघ में मिलने के कार्य का नेतृत्व किया।

१५ अगस्त सन् १९४७ को भारत स्वतंत्र हुआ। स्वतन्त्रता प्राप्ति पर सारे देश में जो खुशियां मनायी गयी, वे बीकानेर में पूर्ण उत्साह के साथ मनायी गयी। बाद में स्व० महाराजा सादूलसिंह जी ने देश के विभिन्न नेताओं से रियासतों के भविष्य के बारे में जो बातचीत की, उससे डा० करणीसिंह जी भी अवगत थे। सन् १९४८ में जब स्व० महाराजा सादूलसिंह जी अपने इलाज के लिए इंग्लैंड गये तो उनकी अनुपस्थिति में डा० करणीसिंह जी को युवराज होने के नाते, अपनी माता—स्व० राजमाता सुदर्शना कुमारी जी—की सलाह से राज्य का कार्य देखना पड़ा। यह प्रबन्ध भी कर दिया गया था कि महाराजा के तत्कालीन सलाहकार श्री मेहरचन्द महाजन की सलाह भी उनको उपलब्ध हो सके।

बीकानेर में उस समय मिली जुली सरकार थी। कांग्रेस मन्त्रियों ने कानून नियम पद्धति की शीघ्र ही उपेक्षा करनी आरम्भ कर दी। एक कांग्रेसी मंत्री ने एक विभागाध्यक्ष को मौके पर तुरन्त बर्खास्त कर दिया। यह कार्य नियमानुसार नहीं था, अतः डा० करणीसिंह जी ने यह मामला अपने पिता जी के पास इंग्लैंड भेजा। बाद में पूर्ण जाँच करवाने बाद उस अफसर को उसके पद पर पुनः स्थापित कर दिया गया।

यह घोषणा कर दी गयी थी कि बीकानेर राज्य में आम चुनाव २३ सितम्बर सन् १९४८ और उसके बाद के दिनों में होंगे। चुनाव की तैयारी का काम ठीक प्रकार से चल रहा था। पर अगस्त १९४८ में स्टेट कांग्रेस कमेटी ने चुनावों को स्थगित करने की मांग की। महाराजा सादूलसिंह जी उस समय विदेश में थे। डा० करणीसिंह जी ने उन्हें इस मांग से अवगत कराया। उनके पास चूंकि महाराजा के स्पष्ट आदेश थे कि निश्चित तिथि पर उत्तरदायी शासन सौंपने का कार्य किसी भी कारण से रुकने न दिया जाय अतः उन्होंने कांग्रेस की मांग स्वीकार नहीं की। इसके बाद राजस्थान कांग्रेस के नेता श्री हीरालाल शास्त्री और श्री गोकुल भाई भट्ट बीकानेर आये और चुनाव स्थगित करने के प्रश्न पर उन्होंने डा० करणीसिंह जी से लम्बी बातचीत की।

डा० करणीसिंह जी अपने पिता जी को बराबर स्थिति से अवगत कराते रहे। महाराजा सादूलसिंह जी जब विदेश से लौटे और सरदार पटेल से मिले तो चुनाव के बारे मे उन्हें राजस्थान कांग्रेस के नेताओं से बात करने को कहा गया। अन्त मे चुनाव स्थगित करने पड़े।

सन् १९४८ में महाराजा सादूलसिंहजी को अनेक बार दिल्ली जाना पड़ा। वे लगभग प्रति मास दिल्ली जाते थे और ऐसे अवसरों पर डा० करणीसिंह जी भी उनके साथ गये। कुछ अवसर पर तो महाराजा को लाने के लिए वाइसराय ने अपना वायुयान भी भेजा। जून सन् १९४८ में फरीदकोट के शासक के विरुद्ध आरोपों की जांच के सम्बन्ध में ग्वालियर, बीकानेर जयपुर और पटियाला के राजाओं को दिल्ली बुलाया गया था। डा करणीसिंह जी भी अपने पिता के साथ थे। इस बैठक मे बाद में गवनर जनरल बनने वाले चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य भी उपस्थित थे।

जब देश के अन्य भागो में रियासतों के एकीकरण का कार्य आरम्भ हुआ तो राजपूताना इससे बच नही सका। इसका एकीकरण चार सोपानों में पूरा हुआ।

(१) संयुक्त राजस्थान राज्य—इसका उद्घाटन २५ मार्च सन् १९४८ को हुआ। इसमे दक्षिण पूर्व की नौ छोटी रियासतें थी। कोटा के महाराव भीमसिंह इसके राजप्रमुख बने और कोटा इस संघ की राजधानी बनायी गयी। थोड़े समय बाद मेवाड़ (उदयपुर) के महाराजा भूपालसिंह ने भी इस राजस्थान संघ मे सम्मिलित होने की इच्छा प्रकट की। मेवाड़ (उदयपुर) राजपूताना की सबसे प्राचीन और बड़ी ऐतिहासिक रियासतों में से एक थी और एक पूर्ण इकाई थी।

(२) राजस्थान संघ—इसका उद्घाटन १८ अप्रैल सन् १९४८ को हुआ। मेवाड़ के महाराणा इसके आजीवन राजप्रमुख बने और कोटा के महाराव वरिष्ठ उप राजप्रमुख बनाये गये। उदयपुर इस नये संघ की राजधानी बना।

(३) मत्स्य—इसका उद्घाटन १८ मार्च सन् १९४८ को हुआ। इसमे अलवर भरतपुर, धौलपुर और करौली ये चार रियासतें थी। धौलपुर के महाराजा मत्स्य संघ के राजप्रमुख हुए और भरतपुर राजधानी बनायी गयी। १५ मई सन् १९४९ को मत्स्य संघ को वृहद राजस्थान मे मिला दिया गया।

(४) राजस्थान ३० मार्च सन् १९४९ को सरदार पटेल ने इसका उद्घाटन किया। इसमें उपर्युक्त तीनों संघों की रियासतों के अतिरिक्त जैसलमेर, जयपुर जोधपुर और बीकानेर की प्राचीन, बड़ी और अलग रहने के लायक रियासतें भी सम्मिलित

हो गयी। उदयपुर के महाराणा इसके आजीवन महाराज प्रमुख बने। यह पद, जिसका कि कोई काय न था, केवल महाराणा के लिए ही बनाया गया था। जयपुर नरेश इसके आजीवन राजप्रमुख बने। जयपुर राजस्थान की राजधानी बनी।

जब बीकानेर और अन्य बडा रियासतो को मिलाकर राजस्थान बनाने की बात दिल्ली में श्री वी पी मेनन और इन रियासतो के शासको के बीच चल रही थी, तब डा० करणीसिंह जी भी अपने पिता जी के साथ इनम से अधिकाश बठको मे सम्मिलित हुए। ७ अप्रैल सन् १९४९ को बीकानेर रियासत का प्रशासन राजस्थान की नई सरकार को सौंप दिया गया। इस अवसर पर नये बने राज स्थान को बीकानेर रियासत द्वारा ४ करोड ८७ लाख रुपये की नकद पोते बाकी सँभलाई गयी। यह रकम राजस्थान की सभी रियासतो द्वारा दी गई रकमो से सर्वाधिक थी। इसके अतिरिक्त केन्द्रीय सरकार को बीकानेर स्टेट रेलवे की सारी सम्पत्ति रेलवे लाइन रेल के डिब्बे, इजन आदि-जो लगभग एक करोड रुपये की थी भी सौंप दी गयी।

इस प्रकार राजस्थान का एकीकरण सम्पन्न हुआ। शासको को जो प्राप्त अधिकार, विशेषाधिकार और एक निश्चित प्रिवीपस देने का समझौता किया गया था, वह समय प्रवाह के साथ मन्द पडता गया और अन्त मे य सभी समाप्त कर दिये गये। महाराजा सादूलसिंह जी के स्वगवास के बाद डा० करणीसिंह जी को भारत के राष्ट्रपति द्वारा जो उत्तराधिकार स्वीकृति पत्र मिला था, वह इस प्रकार है। —

राष्ट्रपति भवन
नई दिल्ली
ता १८ अक्टूबर सन् १९५०

मेरे सम्मानित मित्र,

श्रीमान् को लिखते हुए मुझे बहुत खुशी है कि मेरे द्वारा बीकानेर रियासत की गद्दी पर आपका उत्तराधिकार मान लिया गया है। इस अवसर पर मैं श्रीमान् को अपनी हार्दिक बधाई प्रेषित करता हू।

अधिक भावना के साथ मैं हू

भवदीय
ह राजेन्द्र प्रसाद
भारत का राष्ट्रपति

हिज हाईनस महाराजाधिराज
राज राजेश्वर शिरामणि महाराजा
श्री करणी सिंह जी बहादुर
महाराजा बीकानेर

राजनीति में

१५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ। देश में आजादी के सूर्य का उदय हुआ। विधान निर्मात्री परिषद् को देश के लिए एक नया संविधान बनाने का जो महान उत्तरदायित्व सौंपा गया था, उसके फलस्वरूप नया संविधान तैयार हुआ और २६ जनवरी १९५० को लागू किया गया। संविधान को प्रभावशाली बनाने के लिए देश में आम चुनाव की आवश्यकता हुई, जिससे मतदाता अपने प्रतिनिधि चुन सकें।

महाराजा सादुलसिंहजी का स्वर्गवास तारीख २५ सितम्बर १९५० को होने पर डा० करणीसिंह जी को उत्तराधिकार प्राप्त हुए। उस समय आप युवावस्था के प्रथम चरण में प्रवेश कर रहे थे। आपकी उम्र उस समय केवल २६ वर्ष की थी। देश में राजनीति का जो नया दौर आरम्भ होने जा रहा था, उसने सभी को प्रभावित किया पर महाराजा डा० करणीसिंहजी की राजनीति में दिलचस्पी न थी। यह बात भी न थी कि राजनीति से अनभिज्ञ थे। भारतीय विश्वविद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के कारण कई वर्षों तक समाज की प्रत्येक श्रेणी व स्तर से आने वाले विद्यार्थियों से आपका घनिष्ठ सम्पर्क रहा, जिसके फलस्वरूप आप समस्त राजनैतिक सिद्धान्तों से अवगत हो चुके थे। पर सक्रिय राजनीति में प्रवेश की आपकी उस समय इच्छा न थी।

सन् १९५२ के आम चुनाव में खड़े होने का आपका विचार न था। राजस्थान क्लब यूनियन की जयपुर में बैठक होने वाली थी। एक दिन जोधपुर के तत्कालीन नरेश महाराजा हणवन्तसिंहजी का टेलिफोन आया कि मेरा वायुयान खराब है, तुम अपना विमान लेकर जोधपुर आजाओ और हम यहाँ से जयपुर साथ साथ चलेंगे। डा० करणीसिंह जी अपने विमान से जोधपुर पहुँचे। वहाँ से जब वे जयपुर के लिए विमान में रवाना हुए तो जोधपुर जयपुर के बीच महाराजा हणवन्तसिंह जी ने राजनीति और चुनावों सम्बन्धी काफी बातें कीं तथा डा० करणीसिंहजी को बीकानेर से चुनाव में खड़ा होने को कहा तथा प्रेरणा दी। उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ना। इस प्रकार सन् १९५१ के अन्त व सन् १९५२ के आरम्भ में डा० करणीसिंहजी की राजनीति में दिलचस्पी पैदा हुई। चुनाव की तिथि घोषित होते ही हजारों नागरिक उनके पास लालगढ़ पैलेस में गये और उनसे लोकसभा का चुनाव लड़ने का अनुरोध किया।

जन-कल्याण की भावना तो उनमें वंश-परम्परा से थी ही। बीकानेर राज्य की स्थापना के समय से ही यहाँ के शासकों और लोगों में परस्पर प्रेम-पूर्ण सम्बन्ध रहा है। इसका प्रधान कारण यह है कि 'प्रजाहित' बीकानेर राज परिवार का मूलमंत्र और जीवनव्रत रहा है। स्व० महाराजा गंगासिंह जी ने एक बार कहा था—"दैवी इच्छा से मैं बीकानेर राज्य का शासक हूँ परन्तु यह कदापि नहीं भूल सकता कि साथ ही साथ मैं राज्य व प्रजा का सबसे बड़ा सेवक भी हूँ।" इसी उद्देश्य को स्व० महाराजा सादुलसिंह जी ने भी अपनाया और 'प्रजाहित व्रतिनो वयम्' को अपना लक्ष्य बनाया। अपने पूर्वजों के पद-चिन्हों पर चलते हुए डा० करणीसिंह जी ने भी अपना जीवन जन सेवा को समर्पित किया।

लोकसभा के लिए अपने को उम्मीदवार घोषित करने से पूर्व वे दिल्ली में श्री सी० एस० वेंकटाचारी, जो पहले बीकानेर के प्रधानमंत्री रह चुके थे और अब रियासती मंत्रालय के सचिव थे, तथा रियासती मंत्रालय के केन्द्रीय मंत्री श्री गोपालास्वामी आयंगर से मिले। दोनों ने डा० करणीसिंह जी को निर्दलीय रूप में चुनाव लड़ने की सलाह दी।

ज्योंही आपने सन् १९५२ के आम चुनाव में लोकसभा के लिए खड़े होने की घोषणा की, लोग भारी संख्या में आपके पास आये और आपको पूर्ण समर्थन देने का विश्वास दिलाया। डा० करणीसिंह जी ने अन्य बातों के अलावा सच्चे जन प्रतिनिधित्व पर जोर दिया और कहा "मैं प्रयत्न करूंगा कि मैं जनता का शब्द के सही अर्थ में सच्चा प्रतिनिधि बन सकूं और देश की विशेषतः अपने निर्वाचन क्षेत्र की उन्नति में पूर्ण योग दे सकूं।"

सन् १९५२ के आम चुनाव हुए। डा० करणीसिंह जी के निर्वाचन क्षेत्र में कुल १,८७,६८२ वोट पड़े। विभिन्न उम्मीदवारों द्वारा प्राप्त वोटों की संख्या इस प्रकार है —

डा० करणीसिंह जी १,१७,९२६। इतनी अधिक संख्या में वोटों का मिलना आपके प्रति जनता के गहन विश्वास व प्रेम का द्योतक था। जब आप लोकसभा के सदस्य चुने गये तो आपकी आयु २८ वर्ष से कम थी। आप उस समय भारतीय संसद् में सबसे कम उम्र वालों में से एक थे।

सन् १९५२ से सन् १९७७ के जनवरी तक लगभग २५ वर्षों तक वे लोकसभा के सदस्य रहे हैं। इतने लम्बे समय तक लोकसभा का निरन्तर सदस्य रहना किसी के लिए भी महान् गौरव की बात होती है। यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि सन् १९६२ और १९६७ की सत्ताधारी कांग्रेस पार्टी ने उनके विरुद्ध अपना उम्मीदवार खड़ा

नही किया। यह बात विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि डा० करणीसिंह जी के चुनाव क्षेत्र की सीमा मे प्रति बार परिवर्तन होता रहा है। उनका चुनाव क्षेत्र प्रथम आम चुनाव मे बीकानेर चूरु नागौर, दूसरे मे सिवाय सुजानगढ तहसील के समस्त बीकानेर डिवीजन का द्वि सदस्यीय क्षेत्र तीसरे में बीकानेर और चूरू था। चौथे म रतनगढ व सुजानगढ नगरो को उनके चुनाव क्षेत्र म से निकाल दिया गया। पाँचवें आम चुनाव के समय भी कुछ परिवर्तन किया गया। पर जनता के अगाध स्नेह और विश्वास के कारण वे अपने प्रतिद्वन्द्वियो को पराजित कर बराबर सफल होते रहे। आपने जनतत्र की परम्पराओ म विश्वास रखते हुए यह सदा प्रयत्न किया है कि जो भी व्यक्ति उनके सामने चुनावो म लडे, उनके साथ सदा मैत्री का सम्बन्ध बना रहे। सिद्धान्ततया उन्होंने कभी भी किसी अपने प्रतिद्वन्दी के खिलाफ अपने भाषणो म कुछ नही कहा—

आपने अच्छे शासन के लिए निम्नलिखित बातें आवश्यक मानी हैं —

१ न्याय

२ नागरिको के जान व माल की सुरक्षा एव व्यक्तिगत स्वतन्त्रता

३. सरकार की स्थिरता व पूर्णता

४ बेकारो को काम दिलाने के लिए देश के साधनो के उपयोग में समानता व देश का आर्थिक विकास

५ औद्योगीकरण

६ जनता के लिए नि शुल्क अनिवार्य शिक्षा व डाक्टरी सहायता

७ जनता का जीवन स्तर ऊँचा उठाना

८ भ्रष्टाचार को मिटाना

सन् १९५२ से सन् १९६७ तक आपकी नीति पूर्णत निर्दलीय रही। सन् १९६७ से सन् १९७१ तक आप कांग्रेस के कड़े विरोधी रहे। कांग्रेस के इस कड़े विरोध का कारण राजस्थान म राष्ट्रपति शासन लागू करना तथा कई जगह पुलिस द्वारा निर्दोष नागरिको पर गोली चलाना था। सन् १९६७ के विधान सभा चुनावो में राजस्थान म कांग्रेस को बहुमत नही मिला। वह अल्पमत में थी और सरकार बनाने मे असमर्थ थी। अत कांग्रेस ने विपक्ष के सदस्यो को फोडना आरम्भ किया और कुछ सदस्यो को लाभ देकर अपनी ओर मिला लिया। विरोधी दल का बहुमत होते हुए भी विधान सभा मे शक्ति परीक्षण नही होने दिया और राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया। जब विरोधी दलो के नेताओ ने दिल्ली म सम्वाददाता सम्मेलन बुलाया तो वे उनके साथ थे। जब राजस्थान विरोधी दलों के नेताओ का प्रतिनिधि मडल राष्ट्रपति से मिला, तब डा करणीसिंह

भी उनके साथ गये । डा० करणीसिंह जी के मतानुसार दल-बदलाव के द्वारा किसी अल्पमत को बहुमत म बदल कर शासन चलाना अनैतिक है।

सन् १९७१ के ससद् के तथा सन् १९७२ के विधान सभा चुनावो मे जब काग्रेस को स्पष्ट बहुमत मिल गया तो जन भावना की कद्र करते हुए डा० करणीसिंह जी ने पुन अपना निदलीय का स्वरूप धारण कर लिया। उनके भाषण को ससद् मे सुनकर तत्कालीन प्रधानमत्री श्रीमती इदिरा गाँधी को भी कहना पडा कि विरोधी दलो मे यदि किसी का भाषण समझदारी का था तो वह डा० करणीसिंह जी का था।

रबात म होने वाले मुस्लिम सम्मेलन के बारे मे काग्रेसी सरकार का समथन किया जाय या नही इस बारे मे विचार विमश हेतु डा० करणीसिंह जी के दिल्ली स्थित निवास स्थान (१०, पृथ्वीराज रोड) पर निदलीय सदस्यो की एक बैठक की गयी। काफी बहस मुबाहिसे के बाद सरकार का समथन करने का निणय लिया गया क्योकि विरोधी दल एक स्थायी और मजबूत सरकार नही बना सका था। इस समय डा० करणीसिंह जी सयुक्त निदलीय दल" के सह नेता थे। कुछ लोगो का विचार है कि राजाओ के निजी भत्ते' ब द होने पर डा० करणीसिंह जी ने काग्रेस का विरोध करना आरम्भ किया, परयह बात गलत है। निदलीय होते हुए उ होने काग्रेस का १९६७ के बाद कडा विरोध इसलिए किया कि राजस्थान मे १९६७ क चुनाव के बाद विरोधी पक्ष को एक वोट का कथित बहुमत था-बहुमत सदन मे परीक्षण का मौका नही दिया जो कि जनतान्त्रिक प्रणाली के लिए अनिवाय था तथा राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया। १९७१ मे जब काग्रेस न बहुमत से चुनाव जीता तो डाक्टर करणीसिंह जी ने फिर से जनता का Mandate स्वीकार करते हुए उन्होने अपना निदलीय रोल वापिस अपनाया। १९७२ के राजस्थान विधानसभा के चुनाव के बाद एक बहस पर उन्होने स्पष्ट किया कि १९७२ के विधानसभा चुनाव निष्पक्षता से लडे गये बिना सरकार के दबाव के-जवाब देते हुए प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने कहा एक अच्छा भाषण है। १३ माच १९६७ को जब राजस्थान मे राष्ट्रपति शासन लागू होन की घोषणा हुई तो उ होने उसी दिन एक प्रेस वक्तव्य जारी कर के इस पर गहरा खेद प्रकट किया। १८ माच १९६७ को जनसघ के नेता श्री अटलबिहारी वाजपेयी द्वारा राजस्थान में राष्ट्रपति शासन के विरुद्ध लोकसभा मे अविश्वास प्रस्ताव पेश किया गया । उक्त बहस मे भाग लेते हुए डा० करणीसिंह जी ने कहा—' इस समय जब कि लोकतन्त्र की हत्या हो रही है

जबकि जन भावना का पूर्णत अनादर हो रहा है ऐसी स्थिति मे प्रत्येक नाग
का जो स्वाधीनता व जनतत्र म विश्वास रखता हो, खून उबल पडेगा। श्री च
के शब्दो में मैं यही कहूगा—यह लोकतत्र को दूषित करना है, यह सविधान
साथ धोखा है।" जब सन् १९७१ के चुनावो में काग्रेस भारी मत से जीती
लोकमत का आदर करते हुए उन्होने काग्रेस-विरोधी का दृष्टिकोण छोडकर
निर्दलीय रूप धारण कर लिया। भूतपूर्व नरेशो के लिए 'निजी भत्ता' (प्रिवीप
उस समय भी एक ज्वलत समस्या थी।

डा० करणीसिंह जी सन् १९५२ से सन् १९७६ तक अर्थात लगभग २५
तक निरतर ससद्-सदस्य के रूप मे सक्रिय राजनीति मे भाग लेते रहे।
अवधि मे उन्होने राजनीति के अनेक उतार-चढाव देखे। पर उन्होने कोई सरक
पद स्वीकार नही किया। इसका कारण यह है कि सरकारी पद काग्रेस दल
सम्मिलित होने से ही मिल सकता था, पर जनता का उनमे 'निर्दलीय सदस्य'
रूप म ही विश्वास था और ना कभी Defection किया अत वे पद से दूर रहे।
भी पद के प्रति उनके मन म तृष्णा नही थी। निस्वार्थ-भाव से जनता की से
ही उनका प्रमुख लक्ष्य था। यह बात उनके वश मे पीढियो से चली आ रही
व २५ वर्ष तक निरतर ससद्-सदस्य रहे। इसे वे अपने प्रति जनता का ग
विश्वास मानते हैं और अपने व अपने घराने के लिए बहुत बडी बात समझते
उन्होने चुनाव मे जीत को कभी अपनी व्यक्तिगत जीत नही माना और उन लो
के साथ भी सदा सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध रखा जो चुनाव मे उनके विरुद्ध खडे हुए
और जो बहुधा उनके कार्यों की आलोचना करते थे। पर साथ ही अब उन
यह दृढ विचार हो गया है कि जनतत्र म ससद् के सदस्यो क लिए १० साल का
होते हैं। उन्हें १० वर्षों के बाद अन्य व्यक्तियो को इसका अवसर देना चाहिए
नया खून देश के नव निर्माण मे अधिक सहायक हो सकता है। इसी चिन्तन
परिणाम था कि वे सन् १९७७ के लोकसभा चुनावो मे खडे नही हुए। बीकाने
की परम्परा के अनुसार उन्होन चुनाव मे किसी का पक्ष नही लिया, क्यों
उनका सभी दलो से अच्छा सम्बन्ध था। पर कुछ व्यक्तियो ने यह प्रचारित क
दिया कि वे काग्रेस के उम्मीदवार क समर्थक हैं। फलस्वरूप उन्होंने एक प
निकाल कर इस बात का खण्डन किया।

वे जनतत्र क बहुत प्रबल समर्थक हैं। हर प्रकार की आजादी मे उन
गहरा विश्वास है। लोकतत्र समाजवाद और धर्म निरपेक्षता का उन्होंने स
समर्थन किया है। दो दलीय पद्धति की बात तो वे प्रारम्भ से ही पूरी ताकत के सा
कह रहे हैं। उनकी मान्यता है कि विरोधी दल मजबूत होने से ही जनत

सुरक्षित रह सकता है। उन्होंने विरोधी दलों के एक व संगठित होकर चुनाव लड़ने पर जोर दिया। ज्योंही छठे चुनाव के समय पार्टी बनी पासा पलट गया। यदि विरोधी दल एक न होते तो यह कभी संभव न था। विरोधी दलों को एक करने के डा० करणीसिंह जी के सतत प्रयासों की अन्यत्र विस्तार से चर्चा की गयी है। उनका विश्वास है कि जनता दल का गठन भारत के भविष्य एवं जनतंत्र के भविष्य के लिए अच्छा है। जब तक जनतंत्र में जनता बागडोर नहीं हिलाती, तब तक जन प्रतिनिधि अनियन्त्रित हो जाता है। भारत में दो मजबूत दल—जनता पार्टी व कांग्रेस बन गये, यह हमारे देश के लिए एक शुभ लक्षण था पर जनता व कांग्रेस की आपस की फूट को भी वे जनतंत्र के लिए खराब समझते है। उनका यह भी कहना है कि संसद् व विधान सभाओं में चुनाव जीतने के बाद जनता पार्टी के लिए यह बहुत जरुरी है कि मँहगाई गरीबी आदि को शीघ्र दूर करने का प्रयत्न किया जाय।

जब देश में आपातकालीन स्थिति की घोषणा की गयी तो डा० करणीसिंहजी ने इसका समर्थन नहीं किया। उन्होंने कांग्रेस शासन की निरंकुशता का पूर्वाभास कर लिया था। और यह चेतावनी दी थी कि हिटलर की तरह भारत में तानाशाही प्रवृत्ति बढ़ती गयी तो जेलें भर जायेगी और फिर जर्मनी की तरह हमारे यहाँ गैस चेम्बर्स भी बन सकते हैं। आपातकालीन स्थिति की घोषणा के बाद हमारा देश किस प्रकार एक बहुत बड़ी जेल बन गया था, उससे डा० करणीसिंह जी की भविष्यवाणी की सत्यता स्वतः सिद्ध हो जाती है।

संसद् सदस्य के रूप में डा० करणीसिंह जी ने अन्य बिलों के अतिरिक्त निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिल प्रस्तुत किये —

१ सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्ति के सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री के अधिकार सीमित करना
२ संसद् से सदस्यों को वापस बुलाना (बाद में लोकनायक श्री जयप्रकाश नारायण ने भी यही बात कही)
३ गरीबों को मुफ्त कानूनी सहायता—कानून मन्त्री ने इसे सिद्धान्ततः स्वीकार कर लिया था।
४ सभी को निःशुल्क प्रारम्भिक शिक्षा
५ बेकारी भत्ता
६ वृद्धावस्था (बीमा) सहायता
७ राजस्थानी भाषा—यह बिल दो बार प्रस्तुत किया गया।
८ संसद् सदस्यों की आय पर कर लगाया जाय—इस बिल को प्रारम्भ में ही दबा दिया गया।

अकाल

पग पूगल धड कोटडै, बाहू बायडमेर ।
फिरतो–घिरतो बीकपुर, ठावो जेसलमेर ।।[1]

अकाल कहता है मेरे पैर पूगळ मे, धड कोटडे मे और भुजाएँ बाडमेर में रहती हैं, घूमता घामता बीकानेर भी पहुचता रहता हू पर जेसलमेर मे तो निश्चित रूप से मिलता हू । "

भारत के अन्य भागो की तुलना में राजस्थान में वर्षा कम होती है । राजस्थान के बीकानेर और जोधपुर डिवीजन मे तो वर्षा का औसत और भी कम है । अधिकाशत इन भागो के वर्षा पर निभर होने से यहाँ प्रति ३-४ वष के बाद अनावृष्टि के कारण अकाल पड जाता है। वि०स० १९५६ (ई०स० १८९९–१९००) में भूतपूर्व बीकानेर राज्य में भीषण अकाल पडा ।[2] इसे छपना अकाल भी कहा जाता है । यह अकाल वैसे तो भारत के अधिकाश भागो मे था किन्तु राजस्थान के निवासी सबसे अधिक इसकी चपेट मे आ गये थे । केन्द्रीय मौसम विभाग के निदेशक के अनुसार इस वष (वि०स०१९५६) समूचे भारत मे वर्षा इतनी कम हुई थी कि जिसका पिछले दो सौ वर्षों म रिकाड नही मिलता । लेखक होलडरनेस का कहना है कि इतने भयकर अकाल का उदाहरण भारत मे पहले नही मिलता । अमेरिकन क्रिश्चियन हेराल्ड के गुजरात स्थित सवाददाता डा० कैल्पक ने इस अकाल स हुई तबाही के बारे मे लिखा है कि सारा भारत एक बहुत बड कब्रिस्तान मे परिवर्तित हो गया है ।[3] छपने अकाल का सबसे अधिक कुप्रभाव यदि किसी रियासत पर पडा तो वह बीकानेर थी । इसलिए जितनी तबाही बीकानेर रियासत में हुई, उसका उदाहरण नही मिलता । साथ ही इस अकाल का सामना जिस साहस, निष्ठा और जवाँमर्दी से बीकानर के युवक महाराजा गगासिहजी ने किया उसका उदाहरण भी इतिहास मे नही मिलता । राहत कम्प का निरीक्षण महाराजा स्वय ऊटों पर आकर

---

१ नरोत्तमदास स्वामी - राजस्थान रा दूहा पृ० १२०

२ डा० गौरीशकर हीराचन्द ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास दूसरा भाग पृ० ५०४

३ श्री पुरुषोत्तम नवले - हिस्ट्री आफ १०० इयस आफ फैमिन्स इन वेस्टर्न राजस्थान

सप्ताह मे एक बार बारी-बारी कर जाते थे ।[1]

राजनीति मे प्रवेश के बाद डा० करणीसिंह जी ने वश-परम्परागत रीति के अनुसार अकाल के समय पीडितो के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए उन्हें आवश्यक सहयोग देने और दिलाने की चेष्टा की। सन् १९५३ म राजस्थान में भयकर अकाल पड़ा। अकाल पीडित लोगो की करुणाजनक स्थिति देखकर डा० करणीसिंह जी को अत्य त वेदना हुई। उन्होने अकाल पीडितो की राहत के लिए बीकानेर मे एक ऊनी गलीचे का उद्योग आरभ किया और लोक सभा मे बहुत ही मार्मिक शब्दो मे दश के प्रतिनिधियो का ध्यान इन अकाल पीडितो की दुदशा की ओर आकर्षित किया,[2] "इस समय राजस्थान के अकाल की हालत बहुत बुरी है। उत्तरी राजस्थान मे अकाल पडने का यह दूसरा साल है। इस साल टिड्डियो का हमला इतना तेज था कि मैंने अपनी उम्र मे इतना घना टिड्डियों का जाल पहले कभी नही देखा था। बीकानेर, जोधपुर और जेसलमेर के बहुत बडे हिस्से इन टिडडयो के हमले के शिकार बने।"

हिन्दुस्तान टाइम्स[3] मे एक खबर छपी —"जोधपुर से ८० मील दूर चाम्पासर के गाँव के पटवारी ने जोधपुर के कलक्टर को रिपोट दी है कि चार सदस्यो का एक कृषक परिवार भूख से मर गया।" इस खबर का उल्लेख करते हुए डा० करणीसिहजी ने कहा कि मैं आशा करता हू कि यह (खबर) सत्य न हो, पर यदि यह सत्य है तो हमे लज्जित होना चाहिए। साथ ही उन्होंने भारत सरकार से अनुरोध करते हुए कहा,[4] 'अकाल का सामना करने के लिए जो मदद की जाये वह किसी भी हालत मे पुरानी रियासतो की मदद से कम नही होनी चाहिए। सन् १९३९-४० मे जब बीकानेर और जोधपुर मे अकाल पडा था तो अकेले बीकानेर ने ४५ लाख रुपयो की मदद की थी। इस साल राजस्थान सरकार बीकानेर डिवीजन पर मुश्किल से एक लाख से कुछ अधिक खच कर रही है। दूसरे, अब राजस्थान के लोग बात बात मे 'पैसा नही, पैसा नही" सुनते सुनते ऊब गये हैं।"

---

१ उत्थान चक्र - [माच १९७५] –राजस्थान अकाल रक्षा विशेषाक मे श्री पुरुषोत्तम केवले का 'राजस्थान के १९ वी सदी तक के अकाल एक विवेचन शीषक लेख

२ प्रकाशन सख्या ३ दिनाक १६ २–५३ को लोक सभा मे भाषण

३ हिन्दुस्तान टाइम्स नई दिल्ली - दिनाक १३ २ १९५३

४ प्रकाशन सख्या ३, दिनाक १६-२ ५३ को लोक सभा मे भाषण

डा० करणीसिंहजी के इस भाषण और कई स्मृति-पत्र भेजने के बाद राज्य सरकार को लगभग ३५ लाख रुपये की धनराशि राहत कार्यों के लिए स्वीकार करनी पड़ी, जब कि पहले वह इसी काम के लिए केवल ३ लाख रुपय ही द रही थी।

सन् १६५८ मे जब बीकानेर मे एक बार फिर भयकर अकाल पड़ा तो डा० करणीसिंहजी ने दिनाक २१-८ ५८ को लोकसभा मे सरकार का ध्यान इस विकट परिस्थिति की ओर आकर्षित करते हुए कहा[1], 'ऐसा अकाल गत ५० वर्षों मे कभी नही पड़ा" उन्होने माग की कि अकालग्रस्त क्षेत्र मे शीघ्र ही मनुष्यो के लिए अनाज व पशुओ के लिए चारे की व्यवस्था की जाय ताकि उन्हें भूख से व्याकुल हो अन्य निकटवर्ती राज्यो मे न जाना पड़े।

सन् १६६३ म बीकानेर क्षेत्र क सूखे की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए डा० करणीसिंह जी ने लोकसभा मे केन्द्रीय खाद्य एव कृषि मन्त्री से अल्पावधि प्रश्न पूछा[2] क्या सरकार को मालूम है कि राजस्थान के बीकानेर एव जोधपुर जिलो में असमान (कम) वर्षा एव अनावृष्टि के कारण अभाव की स्थिति उत्पन्न होगयी है और उसे दूर करने के लिए अविलम्ब पशुओ के लिए चारे की व्यवस्था तथा लागो को काम दिलाने के लिए राहत कार्यों को आरम्भ करने की व्यवस्था की जानी चाहिए'। दिनाक ३ १२ ६३ को लोकसभा मे डा० करणीसिंहजी ने इस क्षेत्र के अकाल पीडितो की राहत के लिए सरकार द्वारा दी गयी सहायता का वास्तविक रूप बताते हुए कहा[3] अभावग्रस्त स्थिति से प्रभावित इस क्षेत्र के २ ५० ००० लोगो मे से केवल १२०० व्यक्तियो को राहत मिल सकी है और इसके बावजूद सरकार लोक कल्याणकारी होने का दम भरती है।"

दिनाक ६-१२ ६३ को डा० करणीसिंहजी ने राजस्थान मे घास व चारे की कमी के सम्बन्ध म केन्द्रीय कृषिमन्त्री को कृषि-भवन, नई दिल्ली म एक स्मरण-पत्र दिया और उसम बीकानेर के अकाल ग्रस्त लोगो व पशुओ की दशा सुधारने हेतु कई ठोस सुझाव दिये।[4]

दिनाक १६ ११ ६५ को बीकानेर म राजस्थान क जनप्रतिनिधियो की

---

१ प्रकाशन सख्या ४४ दिनाक २१ २ ५८ को लोक सभा मे भाषण

२ प्रकाशन सख्या ७९

३ प्रकाशन सख्या ८१

४ प्रकाशन सख्या ८१

अनौपचारिक विकास कांफ्रेंस की विशेष बैठक डा० करणीसिहजी की अध्यक्षता में हुई। इसमे सरकार का ध्यान इस क्षेत्र के सूखे की ओर आकर्षित करते हुए अकाल पीडित लोगो को रोजगार देने के लिए शीघ्रातिशीघ्र राहत काय शुरू करने इस क्षेत्र मे नियमितरूप से खाद्यान्नो की सप्लाई का प्रबंध करने तथा पिछले अकाल के समय अधूरे छोड गये कामो को पूरा करने की माग की गयी।[1]

दिनांक १४ ३ ६६ को डा० करणीसिह जी ने लोकसभा मे भाषण देते हुए सरकार स अनुरोध किया कि वह अकाल का सामना करने के लिए पहले से ही सही कदम उठाये, ताकि जनता को कष्ट न उठाना पड़े।[2]

सन् १९६८ मे जब बीकानेर जिला एक बार फिर अकाल से पीडित हुआ तो डा० करणीसिह जी ने १३-८ ६८ को राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया को एक पत्र लिखकर शीघ्र राहत की मांग की। उन्होंने लिखा[3], "बीकानेर तहसील म जो वर्षा हुई है वह अपर्याप्त तथा न होने के बराबर है। ऐसे ही कोलायत तहसील का ३/४ भाग, लूनकरनसर का आधा भाग तथा नोखा तहसील का १/४ भाग वर्षा के अभाव से ग्रसित है। मगरा मे तालाब सूखे पडे है, पशु धन मर रहा है। यहां पर गत चार वर्षों से लगातार अकाल चलता आ रहा है। मैं आपस अपील करता हू कि अकाल ग्रस्त क्षेत्र मे तत्काल राहत देने के आदेश प्रदान करें।"

दिनाक २९ ८-६८ को लोक-सभा मे देश के अकाल ग्रस्त क्षेत्रो पर बहस के समय डा० करणीसिह जी ने अपन भाषण मे कहा "मरे विचार मे इस वष की स्थिति बडी भयकर है। आज सुबह के पत्रो मे आपन राजस्थान म सूखा पड जाने के बारे मे पढा होगा। उसी के आधार पर मैंने एक 'ध्यानाकषण" नोटिस रखा था। मैं सरकार से अपील करता हू कि वह अपने सम्पूण साधनो सहित मदान म उतर आये और इस समस्या को हल करे।"

दिनाक ३ ९ ६८ को उन्होने तत्कालीन प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट की और राजस्थान के भयकर अकाल पर शीघ्र ध्यान देने हेतु एक विस्तृत ज्ञापन दिया। उन्होने २८-९-६८ को श्री सुखाडिया को पुन पत्र लिखा और बताया,[4] "यहाँ कई अकाल पड चुके हैं, लेकिन ऐसा भयकर अकाल कभी देखन

---

१ सत्य विचार, दिनाक २३-११-६५

२ सत्य-विचार दिनाक १७ ३ ६६

३ श्री मोहनलाल सुखाडिया को लिख गय पत्र का अ श

४ श्री मोहनलाल सुखाडिया को २८ ९ ६८ को लिखे पत्र का अ श

मे नही आया । मैं इन क्षेत्रो के मनुष्या और पशुओ की प्राण रक्षा के लिए आप जसे दूरदर्शी मुख्यमन्त्री को समय रहते सहायता करन के लिए अपील करता हूँ ।"

डा० करणीसिह जी ने एक नागरिक की हैसियत से अकाल पीडितो की सहायता के लिए स्वय १०,००० रुपय दान स्वरूप दिये । इसके अतिरिक्त आपने १००,००० रुपये अपने निजी कोष से देकर एक अकाल राहत कमेटी का गठन किया। इस कमेटी के अध्यक्ष इनके सुपुत्र श्री नरेन्द्रसिह जी थे। इस कमेटी ने चारा खरीद कर लागत मूल्य पर बिना मुनाफा लिए अकाल ग्रस्त क्षेत्रो मे देने की व्यवस्था की । इसका काय बहुत महत्वपूर्ण रहा । स्वय श्री नरेन्द्रसिहजी ने अनेक स्थानो पर जाकर अकाल पीडित पशुओ की सहायता की व्यवस्था की ।

दिनाक २७ ११ ६८ को राजस्थान म अकाल पर बहस के समय भाग लेते हुए डा० करणीसिह जी ने कहा, लोगो का कहना है कि यह अभूतपूव अकाल है और पिछले ५० वर्षो म सबसे भयकर है ।" उन्होन राठी नस्ल की गायो को नष्ट होने से बचाने, सरकारी सहायता बढाने हर दस मील पर एक राहत कम्प खोलने, अकाल राहत कैम्पो के मजदूरो को साप्ताहिक मजदूरी का चुकारा करने की भी माग की । उन्होन तत्कालीन केन्द्रीय खाद्यमन्त्री श्री जगजीवनराम को कई पत्र लिखकर यह अनुरोध किया कि व बीकानर के अकाल ग्रस्त क्षेत्रो का स्वय दौरा करें और केन्द्र द्वारा अकाल राहत के लिए राज्य सरकार को दी जाने वाली धन राशि बढाए ।

दिनाक ६-३ ६९ को लोकसभा मे भाषण देते हुए डा० करणीसिह जी ने भारत सरकार तथा राजस्थान के पडौसी राज्योके प्रति अकाल के समय सहायता देने के लिए आभार प्रकट किया और माग की कि राहत कम्पो म मजूरी का चुकारा जल्दी किया जाय और यह प्रयत्न किया जाय कि अकाल–पीडित कोई व्यक्ति बिना काम के व बिना मजूरी के न रह ।

इस भयकर अकाल के समय डा० करणीसिहजी न बीकानेर और चूरू जिले के अकाल-पीडित क्षेत्रो का व्यापक दौरा किया। उन्होने राज्य मे दुर्भिक्ष होने के कारण अपनी ४६ वी वषगाठ पर किसी प्रकार का आयोजन नही किया ।

लोकसभा मे खाद्य व कृषि मन्त्रालय की अनुदान मागों पर बहस के समय दिनाक १० ४-६९ को भाग लेत हुए डा०करणीसिहजी ने कहा, 'हम लोग एक ऐसे अकाल का सामना कर रहे हैं जो पिछले सौ सालो मे अपनी मिसाल है । यह अकाल राजस्थान राज्य को आगामी १५ वर्षों के लिए पगु बना देगा । उन्होंने अकाल राहत कार्यों को बढाने तथा अधिक केन्द्रीय सहायता देने की माग

को। साथ ही उन्होने अकाल क्षेत्रों मे आवास तथा चिकित्सा एव चार की उचित व्यवस्था करने की मांग की तथा ३ ५ ६६ को तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इदिरा गाँधी को एक ज्ञापन दिया।

दिनांक २५-११-६६ को डा० करणीसिहजी ने लोक सभा मे पश्चिमी राजस्थान की अकाल-स्थिति व सूखे पर भाषण दिया। उन्होंने बताया कि लगातार अकालो के कारण राजस्थान म जनता की आर्थिक दशा बहुत ही विषम हो गयी है। उन्होने सरकार से निम्न बातो की माग की —

१ राजस्थान कैनाल पर जान मे असमथ लोगो के लिए, मानवीय दृष्टि स, अकाल राहत काय गाँवो के पास शुरू किये जाय।

२ जहाँ पानी विराइजना हो और जहाँ पानी की कमी हो, वहाँ ट्रको द्वारा पेय जल पहुँचाये जाने को उच्च प्राथमिकता दी जाय।

३ अकाल पीडित लोगो के बच्चो को भोजन व शिक्षा मुफ्त दिये जाने के लिए सरकार प्रब ध करे।

४ मजदूरी प्रति सप्ताह बिना नागा चुकाई जाय तथा मजदूरी चुकाने मे अकाल राहत कैम्पो मे भ्रष्टाचार निमू ल किया जाय तथा किसी बिचौ लिए की जरुरत न रखी जाय। अकाल राहत शिविरो के निरीक्षण क समय लोगो ने यह बात बार-बार डा० करणीसिह जी के ध्यान म लायी कि मजदूरी का भुगतान नियमित रूप से नही होता। इसे एक बहुत बडा अन्याय मान कर डा० करणीसिहजी ने इस मसले को उठाया और उनके निर तर प्रयत्न करने से मजदूरी का भुगतान नियमित रूप से होने लगा।

५ राजस्थान नहर का काय जल्दी से पूरा किया जाय।

६ लिफ्ट चैनल के काय को शीघ्र पूरा किया जाय।

७ राजस्थान नहर की भूमि की नीलामी ब द की जाय व अकाल पीडित लोगो को भूमि दी जाय तथा खेती करने के लिए तकावी दी जाय।

इस सम्ब ध मे डा० करणीसिह जी न अकाल राहत कम्पो पर काय करने वाले श्रमिको की कठिनाइयो तथा तकलीफो का अध्ययन करन के बाद उन्हे दूर करने के लिए तत्कालीन प्रधानमन्त्री श्रीमती इ दिरा गाँधी खाद्य एव कृषि मन्त्री श्री जगजीवनराम मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाडिया आदि को पत्र लिखे।

डा० करणीसिह जी के जन सम्पक अधिकारी ने चुरू जिले के अकाल ग्रस्त क्षेत्रो का दौरा किया। वहाँ के राहत कैम्पो मे काम करने वाले मजदूरो की

ग्रोर डा० करणीसिंह जी न २८-६ ७० को राजस्थान के मुख्यमत्री को पत्र लिख कर ध्यान ग्राकर्षित किया —

१ हफ्ता चुकाने म देरी

२ पीने के पानी का कोई प्रबन्ध नही।

३ विश्राम के लिए छाया का कोई प्रबन्ध नही है।

४ ग्रौरतो से पत्थर तुडवाने का सख्त काम करवाया जाता है।

चीनी आक्रमण : भविष्यवाणी सत्य

भारत की ग्राजादी के दो वर्ष बाद सन् १९४९ में चीन में साम्यवादी शासन की स्थापना हुई। भारत पहला देश था जिसने न केवल चीन के नये साम्यवादी शासन को मान्यता ही दी बल्कि ग्रन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे जगह जगह उसकी वकालत की। चीन ने बढ कर तिब्बत पर ग्राधिपत्य जमा लिया, पर भारत कुछ न बोला। पता नही उस समय हमारे बहुत से राष्ट्रीय नेताग्रों ने देश के खतरे को क्यो नही पहचाना। चाहे हमारे देश के ग्रन्य कर्णधार चीन के विस्तारवाद को ठीक से न समझ सके हो, पर डा० करणीसिंहजी ने ग्रपनी दूरदर्शिता से भारत के इस भावी सकट को जान लिया था। दिनांक १२ ९ ५९ को लोकसभा म भारत–चीन सीमा विवाद पर चर्चा के समय उन्होने कहा,[1] "पिछले सालो मे हमने हिन्दी चीनी भाई भाई' के बारे म बहुत कुछ सुना है। सच पूछिय तो मेरा इससे सदा मतभेद रहा है क्योकि मैंने महसूस किया है कि एक ही विचारधारा वाले राष्ट्र साथ रह सकते हैं। इस मामले मे केवल हमारे जसे लोकतन्त्रीय देश ही हमारी तरह सोच सकते हैं।" डा० करणीसिंहजी ने देश की सेनाग्रो को तैयार रखने की सलाह देते हुए बातचीत से विवाद हल न होने पर बल प्रयोग का समर्थन किया।

चीन के विस्तारवाद के सम्बन्ध मे देश को पुन चेतावनी देते हुए डा करणीसिंहजी ने दिनाक २६ ११ ५९ को लोकसभा मे कहा,[2] "साम्यवादी देश केवल शक्ति की भाषा को ही समझता है। दुर्भाग्य से हमारे प्रधानमन्त्री के दोस्ती

---

१ प्रकाशन सख्या ५०

२ प्रकाशन सख्या ५२

के हाथ को उ होंने गलती से हमारी दुबलता समझ ली। यदि आप चीनी लोगो की प्रसार (विस्तारवादी) योजना का अध्ययन करें तो आपको पता चलेगा कि यह कितनी अच्छी तरह से सोच समझ कर तैयार की गयी है।"

डा० करणीसिहजी ने इस बात मे स देह प्रकट किया कि चीन के विरुद्ध भारत को रूस से कोई सहायता मिल सकती है। उन्होने सुझाव दिया कि बिना किसी शर्तो के ब धन के भारत अ य देशो से सैनिक सहायता प्राप्त करे। कोई भी राष्ट्र केवल अधिक आबादी से मजबूत नही बनते बल्कि वहाँ के लोगो के सगठन से बलवान बनता है। इस सत्य को डा० करणीसिहजी ने जनवरी सन् १९६१ मे गगानगर जिले के दौरे के समय भाषण देते हुए इस प्रकार प्रकट किया,[1] 'यदि हम चाहते हैं कि हम विदेशी आक्रमणकारियो को हमारी सीमा से हटा सकें तो इसका एक ही उपाय है कि हम भारतवासी पूण रूप से सगठित हो क्योकि सगठित राष्ट्र ही विदेशी आक्रमण के खतरे का मुकाबला कर सकता है।"

जब भारत-चीन सीमा वार्ता बिना किसी समझौते के भग होगयी और यह सवाल ससद् के सामने आया तो दिनाक २० २-६१ को लोकसभा मे डा० करणीसिह जी ने चीन के प्रति भारत सरकार की ढिलमिल नीति की कडी आलोचना की। उन्होने चीन की प्रसारवादी नीति का विश्लेषण करते हुए राष्ट्र को शक्तिशाली बनाने पर जोर दिया तथा तत्कालीन प्रधानमत्री स्व० जवाहर लाल नेहरू से अनुरोध किया कि व ऐसी पेचीदा स्थिति मे नौजवान पीढी के किसी होनहार व्यक्ति का रक्षामत्री चुन और देश के सामने स्पष्ट कायक्रम प्रस्तुत करे।[2]

भारत की उत्तरी सीमा पर चीन ने अपनी सैनिक गतिविधि बढा दी और भडकाने वाली एव शत्रुतापूण कारवाई करने लगा तो डा० करणीसिहजी ने देश को सैनिक दृष्टि स तैयार करने की बात पुन कही। प्रधानमत्री के प्रस्ताव पर लोकसभा में बोलते हुए दिनाक १३ ८ ६२ को उन्होने कहा,[3] 'इसमे कोई स देह नही कि चीन विस्तारवादी है। वहा के शासक निरकुश हैं।
अगर हम चीन और इस खतरे का सामना करना चाहते हैं तो हमें सैनिक दृष्टि से पूरी तरह तैयार होना चाहिए।"

आजकल अधिकाश राजनीतिज्ञो की दृष्टि केवल वतमान पर ही रहती है

---

१ प्रकाशन सख्या ५४

२ प्रकाशन सख्या ५५

३ प्रकाशन सख्या ६७

इसलिए वे अपने समाज और देश के सुदूर भविष्य की प्राय उपेक्षा कर देते हैं। अत उनकी दृष्टि अधिक दूर तक नही जाती। डा० करणीसिंहजी ने अपने समाज और देश के हित को सदा सर्वोपरि स्थान दिया है। इसीलिए चीनी खतरे की बात वे अनक वर्षों स कहते रहे और देश को सावधान करते रहे। उन्होंने जिस दूरदर्शिता का परिचय दिया वह विरल है। उनकी भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई। २० अक्टूबर सन् १९६२ को अपनी पूरी ताकत से भारत पर आक्रमण करके चीन न अपने विस्तारवाद का नग्न प्रमाण दे दिया। इस हमले से चौंक कर सारा भारत सोये स जागा। काश्मीर स कुमारी अन्तरीप, आसाम से राजस्थान तक, सारा देश इस विश्वासघात का जवाब देने के लिए एक हो गया। शांति-प्रिय भारत पर युद्ध के काले बादल मडराने लगे। ससद् मे प्रतिनिधियों और लोकतत्र के रक्षको न प्रधानमत्री के भारत-चीन सीमा स्थिति प्रस्ताव पर राष्ट्र की अखण्डता तथा स्वतत्रता की रक्षा का दृढ सकल्प लिया। उस समय दिनांक १०-११ ६२ को डा० करणीसिंहजी ने उक्त प्रस्ताव पर लोकसभा मे भाषण देते हुए पहाडी डिवीजन बनाने का सुझाव दिया।[1] "हिमालय की सीमाओ पर हमने जो पाठ सीखा है, उसको ध्यान मे रखते हुए मैं यह सुझाव देना चाहता हू कि हम जगल की लडाई, बर्फीले स्थानो की लडाई आदि के लिए विशेष प्रकार की सेना के बारे म सोचना चाहिए और उन्हें ऐसे स्थानो पर स्थायी रूप से रखना चाहिए ताकि भविष्य मे ऐसी कठिन परिस्थितियो मे लडने वाले लाग भी तयार मिलें '

इसी अवसर पर आगे बोलते हुए डा० करणीसिंह जी ने इस बात का भी सकेत किया कि हमारे सनिको के पास चीनी सनिको जस ही बढिया हथियार होने चाहिए। तभी हमारी रक्षा व्यवस्था दृढ होगी। उन्होने कहा[2] 'अगर हम दूसरे देश स, विशेषत आक्रमणकारी देश से हथियारा म घटिया हैं तो मैं नही सोचता कि हम रक्षा की दृष्टि से तैयार हैं।' यहाँ पर उल्लेखनीय है कि डा० करणीसिंह जी की चीन सम्बन्धी सही और वास्तविक दृष्टि को समझकर पडित नेहरू उन्हें, चीन युद्ध सम्बन्धी कुछ चुने हुए सासदो की जो बठकें करते थे, उनमें बुलाने लगे।

परिस्थितियो से विवश होकर २० नवम्बर १९६२ को चीन न युद्ध बन्द करने की घोषणा की। चीनी सेनाएँ वापस लौट गयी फिर भी भारत का काफी इलाका चीन ने अपना बताकर उस पर अधिकार जमाये रखा। दोनो देशों में

---

१ प्रकाशन सख्या ७०

२ प्रकाशन सख्या ७०

शान्ति कराने के कोलम्बो प्रस्तावो का भारत न तो माना, पर चीन ने उन्हे स्वीकार नही किया। युद्ध के बन्द हो जाने से देश मे एक प्रकार की शिथिलता सी दिखायी पडने लगी। डा० करणीसिंह जी ने जनता और जन प्रतिनिधियो को पुन सावधान किया और चीन अधिकृत क्षेत्र को वापस लेने की प्रेरणा दी। दिनाक १३-३-६३ को उन्होंने बजट पर हुई बहस मे लोकसभा मे बोलते हुए कहा [1]- लडाई की मौजूदा ढील ने देशवासियो को शिथिल एव बेखबर कर दिया है। मैं अपने बन्धु नागरिको से केवल यही कहना चाहूगा कि लडाई तब ही समाप्त हो सकती है, जबकि देश की एक एक इच भूमि आक्रमणकारियो से खाली करवाली जायेगी। चीन के इकतरफा युद्ध विराम से लडाई समाप्त हो गयी है ऐसा सोचना गलत है, क्योकि भविष्य मे अभी बहुत से परीक्षणो एव कष्टो का सामना करना है। हमें शान्ति द्वारा अथवा युद्ध द्वारा लद्दाख का वह भाग वापस लेना है जिसे जबर-दस्ती हमसे छीन लिया गया है।' उन्होने चीनी दस्य से लडने के लिए नवीनतम हथियारो का महत्त्व समझते हुए देश मे ही ध्वनि की गति से तिगुन तेज चलने वाले विमान, इलक्ट्रोनिक व सिद्धा तो से स्वत अपने लक्ष्य पर मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र रडार आदि बनाने पर जोर दिया।

सितम्बर १९६५ के भारत पाक सघर्ष मे अपने साथी पाकिस्तान को बुरी तरह पिटते देखकर चीन ने कुछ चौकियों के तथाकथित गैर कानूनी निर्माण और भेडो का बहाना बनाकर भारत को अल्टीमेटम दिया। भारत के तत्कालीन प्रधानमत्री स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री ने इस अल्टीमेटम का मुह तोड उत्तर दिया। चीन की धमकी नाकाम रही। ३० सितम्बर १९६५ का बीकानेर क रतन बिहारी पार्क म तथा १ अक्टूबर १९६५ को गगानगर की विशाल सभा मे भाषण देते हुए डा० करणीसिंह जी ने इसका उल्लेख किया और कहा[2] 'चीन की धमकी कोई नयी बात नही है। हमे इस बात पर गर्व है कि हमारे प्रधानमत्री जी ने यह साफ साफ कह दिया है कि यदि पाकिस्तान अथवा चीन या दोनो मिलकर आक्रमण करत हैं तो हम हमारे देश की सुरक्षा के लिए अवश्य लडेंगे। हम हमारे प्रधानमत्री जी को यह आश्वासन देते हैं कि देश की रक्षा के निमित्त हम सभी पचास करोड भारतवासी उनके साथ एक लोहे की दीवाल की भाति हैं।"

डा० करणीसिंह जी का यह दृढ मत है कि अणुशस्त्रों से युक्त चीन जस

१ प्रकाशन सख्या ७८

२ प्रकाशन सख्या १००

देश का पूरी तरह से मुकाबला करने के लिए हमे दूसरे दशो से अणुशस्त्रो की सहायता का भरोसा नही करना चाहिए और स्वय को अणुबम बनाना चाहिए। उ होने कहा[1] हमारी सुरक्षा के लिए और इसलिए भी कि कोई हमारे ऊपर आख न उठावे, यह जरुरी है कि हम एटमबम बनाए ।"

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि भारत पर चीनी आक्रमण के समय डा० करणीसिह जी न पचास हजार रुपये राष्ट्रीय सुरक्षा कोष मे दिये तथा ५,००० रुपये चीफ मिनिस्टर डिफेंस सरविसेज फड म व ५०१ रुपये राष्ट्रीय सुरक्षा सहायक समिति बीकानेर को दिये और दिनाक ६-११-६२ को राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमत्री श्री मोहनलाल सुखाडिया को पत्र लिख कर आपातकालीन अवधि म जूनागढ का किला सरकारको आर ए सी ट्रेनिग हेतु देने का प्रस्ताव किया। इनके अलावा डा० करणीसिह जी न शस्त्र खरीदने के लिए केन्द्रीय सरकार को सोना दिया तथा विदेशी मुद्रा भी भेंट की ।

भारत पाक सघर्ष

पाकिस्तान का जन्म साम्प्रदायिकता और घृणा पर आधारित दो राष्ट्रो के सिद्धान्तो के अनुसार हुआ था। वहाँ के नेताओ ने हमेशा देश काल का ध्यान रख कर भारत क विरुद्ध विष वमन किया। पाकिस्तान के नेता अपनी जनता को हमारे देश के विरुद्ध बरगलाते और भडकाते रहे। अप्रैल १९६५ मे पाकिस्तान ने कच्छ के रन को विवाद ग्रस्त क्षेत्र बताकर टैंको की सहायता से कुछ भारतीय क्षेत्र (चौकियो) पर अधिकार कर लिया। भारत ने भी इसका उत्तर दना चाहा पर इगलैंड की मध्यस्थता पर भारत इस सवाल को शान्ति स हल करने के लिए एक ट्रिब्यूनल (पच न्यायालय) को सौंपने को सहमत हो गया। पाकिस्तान न भी इस समझौते पर हस्ताक्षर किय, केवल भारत को धोखा दने और उसके साथ विश्वासघात करन क लिए। डा० करणीसिह जी को पाकिस्तान की इस दुरभिसन्धि का कुछ आभास हो गया। उ होने ७ मई १९६५ को भारत के तत्कालीन प्रधानमत्री स्वर्गीय श्री लाल बहादुर शास्त्री रक्षामत्री श्री यशव तराव चव्हाण तथा गृहमत्री श्री गुलजारी लाल न दा को गोपनीय पत्र लिखकर उनका ध्यान राजस्थान सीमा की पूरी तरह से सुरक्षा के लिए आकर्षित किया। यदि उनकी

---

[1] प्रकाशन सख्या १०

सूचना और पत्र पर ध्यान देकर तत्काल उचित कारवाई की जाती तो शायद राजस्थान की सीमा पर वह दृश्य देखने को न मिलता जो भारत पाक सघर्ष के समय कुछ स्थानो पर दिखायी पड़ा।

अगस्त १९६५ के आरम्भ मे ही यह बात स्पष्ट हो गयी कि पाकिस्तान ने काफी घुसपैठियो को काश्मीर म भेज दिया है। लोकसभा म शास्त्री सरकार के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव ᳚ᴨा गया। इस पर हुई बहस क अवसर पर दिनांक २३ ८ ६५ को डा० करणीसिहजी ने भाषण देते हुए सन्तुलित दृष्टिकोण अपनाया तथा देश की निरतर बिगडती जा रही दशा के लिए काग्रेस एव विरोधी दलो दोनो को जिम्मेवार ठहराया। उ होने राष्ट्रीय एकता की अपील करते हुए कहा,[1] "मेरे विचार से यह समय अविश्वास का प्रश्न उठाने के लिए बिलकुल उपयुक्त नही है। इस समय हमारे देश के सामने पाकिस्तान के आक्रमण का सकट है। ऐसी हालत मे हमे अपने दुश्मनो को यह बताना चाहिए कि हममे कितनी एकता हैं एव हमारी ससद एकनिष्ठ है, न कि हमारी ससद मे फूट है।"

डा० करणीसिह जी ने यह मान कर कि हमे चीनी और पाकिस्तानी सकट का सामना अगले १०० वर्षों तक करना है भारत के दोस्तो से मदद लेने व स्थिति का दृढ़ता से मुकाबला करने की बात कही[2] फिर भी हमे स्थिति का सामना करना ही है। जितनी दृढता से हम यह यह सामना करते है देश के लिए उतना ही अच्छा होगा।"

काश्मीर मे घुसपठियो की दुर्गति होते देख पाकिस्तान ने अमरीका स प्राप्त पैटन टैंक और सैबर जेटो के घमड मे चूर होकर भारत पर ५ सितम्बर १९६५ को खुला और दुराग्रहपूर्ण आक्रमण किया। भारत के वीर जवानो ने इस हमले का दृढता से मुकाबला किया। पैटन टैंको और सैबर जेटो की धज्जियां उडने लगी। भारतीय सेना लाहौर और स्यालकोट के मोर्चे पर आगे बढकर शत्रु का सफाया करने लगी। कारगिल और हाजी पीर दर्रे पर हमारे बहादुर सैनिको ने अधिकार कर लिया। इस सघर्ष क समय डा० करणीसिहजी न देशवासियो को उनके फर्ज समझाते हुए भारत की विजय मे दृढ विश्वास प्रकट किया[3] — "मैं अपने देशवासियो से अनुरोध करुगा कि वे इस सकट की घडी मे प्रधानमत्री जी को पूर्ण सहयोग द और सरकार के

१ प्रकाशन सख्या ९७ सत्य-विचार दिनाक ३१-८-६५
२ प्रकाशन सख्या ९७, सत्य विचार दिनाक ३१-८-६५
३ प्रकाशन सख्या ९९

प्रति पूर्ण वफादारी कायम रखें। हम लोगों में से जो मनिक सेवाओं मे नही है उनसे मैं यह अनुरोध भी करूगा कि वे मोर्चे पर जूझने वाले वीरो के घरो का तथा उनके बाल बच्चो का पूर्ण रूप से ध्यान रखें जिससे कि मोर्चों पर हमारे बहादुर सैनिक शा त चित्त से लडाई मे पूरी शक्ति लगा सकें।

लोग कोई ऐसा काम न करें जो हमारे प्रयासो मे बाधक हो, जैसे कि जमाखोरी, मुनाफाखोरी काला बाजारी, झगड बाजी गलत अफवाहें फैलाना इत्यादि अथवा कोई अन्य ऐसा काय न करें, जिससे हमारी सरकार के लिए बाधाए उत्पन्न हो।

निश्चित रूप से विजय हमारी ही होगी। हम दृढता के साथ इस उद्देश्य की प्राप्ति म एक होकर जुट जाना चाहिए।"

पाक हमले के कारण उन्होंने चिली (दक्षिणी अमेरिका) की निशानेबाजी की प्रतियोगिता मे भाग लेन का अपना कायक्रम रद्द कर दिया।

पाकिस्तानी आक्रमण के विरुद्ध देश की रक्षा व्यवस्था सुदृढ बनान हेतु डा० करणीसिंहजी ने पचास हजार रुपये राष्ट्रीय सुरक्षा कोष मे दिये पच्चीस हजार रुपये के मूल्य के बराबर विदेशी मुद्रा दी तथा आठ हजार ग्राम सोना प्रधानमंत्री स्वर्गीय शास्त्रीजी को देकर स्वर्ण बौंड खरीदे। भारत पाक सघर्ष के समय डा० करणीसिंहजी दिल्ली म थे पर उनका मन अपने क्षेत्र के लोगो के लिए चिंतित था। अपनी इस विवशता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने दिनाक ३०-९ ६५ को बीकानेर तथा १ १० ६५ को गगानगर की आमसभा म भाषण देते हुए कहा[1] ससद् के अधिवेशनो मे भाग लेने के लिए मेरे दिल्ली मे होते हुए भी मेरा मन हमेशा आप लोगो मे लगा हुआ था, क्योंकि मैं अनुभव करता था कि इस सकटकाल म मुझे आपके मध्य होना चाहिए जिसमे कि यदि यहा पर बम गिरे तो मैं भी आपके अनुभवो में भाग ले सकू। लेकिन चू कि माननीय प्रधामत्री जी प्राय विरोधी दलो के साथ विचार विमर्श करने के लिए मीटिंग करत रहते थे, इस लिए मैं ऐसा करने म असमय रहा। फिर भी जिस दिन ससद का अधिवेशन समाप्त हुआ, उसी दिन मैं बीकानेर के लिए रवाना हो गया।'

उक्त अवसर पर देश म व्याप्त एकता की भावना के प्रति सन्तोष व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा[3] पाकिस्तान के साथ युद्ध होने के कारण हम लोग फिर एक सूत्र म बध गये है। हमने ससार को दिखा दिया है कि हम

१ प्रकाशन सख्या १

२ प्रकाशन सख्या १००

विपत्ति के समय एक होने की क्षमता रखते है । सभी वर्गों व दलो ने प्रधानमन्त्रीजी का साथ दिया है । इससे अवश्य ही पाकिस्तान व चीन को बडा धक्का लगा है, क्योंकि वे सोच रहे थे कि भारतवासी कभी एक मत नही हो सकते ।"

उन्होने राष्ट्र की रक्षा मे रक्त बहाने वाले वीरो तथा देश के सभी लोगो की प्रशसा करते हुए पाकिस्तान पर विजय के लिए उन्हें बधाई दी तथा आगे के लिए एक चेतावनी भी । उन्होने कहा, 'हिन्दू, मुस्लिम, सिख ईसाई, पारसीइ त्यादि सब लोगो ने मिलकर देश की रक्षा के लिए खून बहाया है । प्रधानमन्त्रीजी, सेनाध्यक्षो स्थल जल तथा वायु सेना को और मजदूर सघ, रेल्वे कर्मचारी, छात्रवग विशेषकर एन सी सी, आकाशवाणी इत्यादि को बधाई । हमे एक होकर प्रधानमन्त्री श्री शास्त्रीजी के हाथ मजबूत करने हैं । युद्ध-विराम युद्ध का अन्त नही है । हमे सदा तैयार रहना होगा ।"

वास्तव मे ही युद्ध विराम इस उपमहाद्वीप मे स्थायी शान्ति न ला सका । थोडे ही समय बाद पाकिस्तान ने अपने सैन्य-बल को बढाने का अभियान आरम्भ कर दिया । चीन और अमेरिका से भारी मात्रा मे शस्त्र पाकर भी पाकिस्तान सन्तुष्ट न हुआ । उसने ईरान, सऊदी अरब आदि देशो से सहायता लेकर फ्रास, इगलैंड, आदि देशो से भी काफी हथियार खरीद । अयूब खाँ के बाद याहिया खाँ ने भी भारत के प्रति शत्रु–भाव ही रखा । पूर्वी पाकिस्तान मे हिन्दुओ पर अत्याचार आरम्भ हुए । फलस्वरूप बहुत बडी सख्या मे शरणार्थी भारत चले आये । सैनिक तानाशाही के अत्याचार बढते गये । यहाँ तक कि पूर्वी पाकिस्तान क मुसलमान भी सनिक जुल्म क शिकार होन लगे । विरोध बढता गया । पूर्वी पाकिस्तान के लोगो ने अपनी आजादी का निश्चय किया । पाकिस्तानी सेना ने भारत के सीमावर्ती इलाकों मे लूट पाट और मार काट की घटनाएँ आरम्भ कर दी ।

३ दिसम्बर १६७१ को पाकिस्तान ने भारत पर एकाएक बडे पैमाने पर हवाई हमला करके युद्ध की घोषणा कर दी । भारत भी सोया न था । उसने इट का जवाब पत्थर से दिया । भारतीय सेना ने पूर्वी पाकिस्तान म प्रवेश किया और दो सप्ताह के युद्ध मे ही राजधानी ढाका पर अधिकार कर लिया । पाकिस्तान क लगभग ६० ००० (नब्बे हजार) सैनिको न भारतीय सेना के सामने आत्म समपण किया । अमेरिकन समुद्री बेडा कुछ न कर सका । भारत चाहता तो पश्चिमी पाकिस्तान को भी परास्त कर सकता था । पर हमारे देश की नीति हमेशा शान्ति स्थापना की रही है । भारत न अपनी ओर से युद्ध बन्द करने की

इकतरफा घोषणा कर दी। इस प्रकार पाकिस्तान को पुन मुह की खानी पडी। याहिया खाँ का पतन हुआ। पूर्वी पाकिस्तान एक नये राष्ट्र 'बागलादश' के नाम से उदय हुआ। इस प्रकार सन् १९६५ के भारत पाक सघष के बाद की गयी डा० करणीसिंह जी की यह भविष्यवाणी "युद्ध विराम युद्ध का अन्त नही है। हमे सदा तैयार रहना होगा" सत्य सिद्ध हुई।

सपना साकार

विरोधी दलो का एकीकरण

राजनीति का प्रत्येक विद्यार्थी इस बात से भली भाँति परिचित है कि किसी भी जनतत्र की सफलता तभी सभव है जब वहाँ कम से कम दो मजबूत राजनीतिक दल अवश्य हो। अमेरिका, इगलैड–किसी भी जनतत्र का उदाहरण लें, वहाँ शासकीय दल के साथ एक शक्तिशाली विरोधी दल भी है, जो शासकीय दल को मनमानी नही करने देता तथा उसकी गलत नीति एव कार्यों पर एक प्रकार का अकुश रखता है।

भारत एक सव-प्रभुत्व सम्पन्न लोकतन्त्रात्मक गणराज्य है। हमारे देश के गणतन्त्र की सफलता इस बात मे निहित है कि यहाँ एक सशक्त विरोधी दल है। डा० करणीसिह जी प्रारम्भ से ही इस सिद्धात के समथक रहे हैं। सशक्त विरोधी दल की आवश्यकता और महत्ता बताते हुए दिनाक २०–२–६१ को उन्होंने लोकसभा मे कहा[1] 'यदि आपको प्रजातन्त्र-सिद्धान्तों पर आधारित ससदीय जनतात्रिक प्रणाली मे विश्वास है तो ऐसी प्रणाली तभी सफल हो सकती है, जब आप द्विदलीय प्रणाली मे विश्वास करते हो। इसलिए मैं अपने बुजुर्गों और अपने जमाने के सदन के हम-उम्र दोस्तो से निवेदन करता हूँ कि हमे प्रजातात्रिक समाजवादी विरोधी दल बनाने के बारे मे सोचना और चेष्टा करनी चाहिए। मुझे इस बात की चिन्ता नही है कि सत्ता किसके हाथ मे है। हमे बडी खुशी होगी यदि काग्रेस हमेशा सत्तारूढ बनी रहे, किन्तु हम इस बात पर निश्चित रहना चाहते हैं कि एक शक्तिशाली विरोधी दल द्वारा हम सदा काग्रेस को सजग रख सकें।"

---

१ प्रकाशन सख्या ५५

डा० करणीसिंह जी ने इस दिशा में अपने द्वारा किये गये प्रयत्नो पर प्रकाश डालते हुए दिनाक ४-२-६२ को बीकानेर की एक सावजनिक सभा मे कहा,[1] 'सच्चे जनतन्त्र को चलाने के लिए यह जरूरी है कि सगठित शक्तिशाली विरोधी दल होना चाहिए क्योंकि सत्तारूढ दल को पथ-भ्रष्ट होने से और भ्रष्टाचार से रोक थाम करने की शक्ति सिर्फ विरोधी दल के अन्दर ही होती है। इसलिए गांधी जी के विचारो के अनुसार जनतन्त्र मे एक Democratic Soscialistic type की सरकार पर रोक थाम व अकुश रखने के लिए विरोधी दल जरूरी होना चाहिए। इसी भावना से प्रेरित होकर मैंने दिल्ली मे सभी राजनैतिक दलो के नेताओं से परामर्श किया, परन्तु अफसोस है कि किसी तरह यह योजना United front की क्रियान्वित नही हो सकी और आज तीसरे चुनाव म विरोधी दल छोटी पार्टियों मे विभाजित होकर अपनी शक्ति को खो रहे हैं।"

दिनाक ५-३-६३ को स्वण नियम पर हुई बहस के अवसर पर डा करणीसिंह जी ने लोकसभा मे कहा,[2] ' सत्ता सुरा की भाति मनुष्य के मस्तिष्क पर हावी हो जाती है, पर मेरे विचार से सरकार को इससे प्रभावित नही होना चाहिए। साथ ही मैं समझता हूँ कि देश में एक सशक्त विरोधी दल होना चाहिए जो कि सरकार को सजग रख सके। इसके अभाव म सरकार यह समझती है कि वह चाहे जो कर सकती है।"

ससद् मे सशक्त विरोधी दल न होने के लिए विभिन्न विरोधी दलो को जिम्मेवार ठहराते हुए डा० करणीसिंह जी न दिनाक ३-१२-६३ को लोकसभा मे कहा[3] 'मेरे वे माननीय मित्र जो विरोधी दलो म है जब सरकार के किसी काय की आलोचना करते हैं तो मुझे इस बात पर हैरानी होती है कि क्या किसी हद तक वे स्वय दोषी नही है। विरोधी दल यदि छोटे छोटे गुटो मे न बटे होते, जैसा कि आजकल है और इसीलिए जिनकी कोई आवाज नही है-तो अवश्य ही वह सशक्त होता और सरकार को मनमानी करने का अवसर नही मिल पाता। इसलिए भविष्य मे जब भी विरोधी दल सत्तारूढ दल की आलोचना करें तो पहले यह देखलें कि क्या वे तो एक हैं?"

दिनाक २६-१-६५ को गणतन्त्र दिवस के अवसर पर डा० करणीसिंह जी

---

१ दिनाक ४-२-६२ को बीकानेर म लक्ष्मीनारायण जी के मन्दिर में दिये गये भाषण म से
२ प्रकाशन सख्या ७४
३ प्रकाशन सख्या ८१

ने बीकानेर मे दम्माणियों के चौक मे एक सार्वजनिक विशाल सभा में इस बात पर बल दिया कि लोकतन्त्र को मजबूत बनाने के लिए छोटे छोटे विरोधी दलो का merge होना बहुत ही जरूरी है। देश की गंभीर समस्याओं का उल्लेख करते हुए यह मत भी व्यक्त किया कि जब तक मजबूत विरोधी दल तैयार नही हो जाता, सत्तारूढ दल को कमजोर करना बुद्धिमता नही।[1]

लोकसभा मे शास्त्री सरकार के विरुद्ध रखे गये अविश्वास प्रस्ताव पर हुई बहस के अवसर पर दिनांक २३ ८ ६५ को भाषण देते हुए डा० करणीसिंह जी ने सन्तुलित दृष्टिकोण अपनाया तथा देश की निरन्तर बिगड़ती जा रही दशा के लिए कांग्रेस एव विरोधी दलो-दोनो को जिम्मेवार ठहराया। उन्होंने कहा,[2] "मेरे विचार से यह समय अविश्वास प्रस्ताव उठाने के लिए बिलकुल उपयुक्त नही है और यही कारण है कि ससद् के इण्डिपेन्डेन्ट पार्लियामेन्टरी ग्रुप के सदस्यो ने विपक्षी दल मे होते हुए भी विपक्षी दलो के साथ इस विषय मे सहयोग नही दिया है। कारण स्पष्ट है। इस समय हमारे देश के सामने पाकिस्तान के आक्रमण का सकट है। ऐसी हालत मे हम अपने दुश्मनों को यह बताना चाहिए कि हममे कितनी एकता है एव हमारी ससद् एकनिष्ठ है, न कि हमारी ससद् में किसी तरह की फूट है।

मैं पहले ही कह चुका हू कि कांग्रेस दल या कांग्रेस सरकार का अस्तित्व सिर्फ विरोधी दलों की कृपा से है और यही स्थिति आज भी है। हम जानते हैं कि कांग्रेस बहुत ही कम वोटो से विजयी हुई है फिर भी सभी विरोधी दल वस्तु स्थिति को नही समझ रहे हैं और आपस मे झगडते हैं। तीन चुनाव हो चुके हैं लेकिन विपक्षी दलों के सदस्यो की सख्या मे कोई विशेष अन्तर नही आया है।"

डा० करणीसिंहजी ने पहले सरकार की गलत नीतियों की, जिनके कारण देश के सामने विभिन्न समस्याएँ उत्पन्न हुई, आलोचना की और उसके बाद विरोधी पक्षो की कमजोरियाँ बताते हुए उनसे सीधा प्रश्न पूछा[3] — क्या विरोधी दल एक सयुक्त मोर्चा बना सकते हैं? क्या देश में दो मजबूत पार्टियो की नीति, जो लोकतन्त्र की मजबूती के लिए आवश्यक है, अपनाकर हम ऐसा विरोधी दल बना सकते हैं जो समाजवाद तथा लोकतन्त्र म विश्वास रखता हो? इन

---

१ प्रकाशन सख्या ९२ सत्य-विचार दिनाक २-२-६५

२ प्रकाशन सख्या ९७ सत्य विचार दिनाक ३१-८ ६५

३ प्रकाशन सख्या ९७ सत्य विचार दिनाक ३१ ८ ६५

सवालो के जवाब मे मेरा जवाब है, "नही" क्योंकि यहाँ तो हर व्यक्ति प्रधान मत्री बनना चाहता है।"

डा० करणीसिहजी ने भारत की राजनतिक स्थिति के सम्ब ध मे भविष्य-वाणी करते कहा,[1] "यह तो निश्चित ही है कि काग्रेस पार्टी आगामी १० वर्षों तक शासन करेगी। इसके बाद हम चाहें या न चाहें, कम्युनिस्ट पार्टी सत्तारूढ हो जायेगी। यदि इस स्थिति स हम बचना चाहते हैं तो बेहतर हो कि विरोधी दल पहले अपना घर सँभालें और एक होकर एक नयी पार्टी बनायें जिसकी लोकतत्र तथा समाजवाद में पूण आस्था हो।"

दिनाक १-५-६६ को बीकानेर म साले की होली पर आयोजित सावजनिक सभा मे भाषण देते हुए डा० करणीसिहजी ने इस सम्बन्ध म फिर कहा,[2] 'मुझे इस बात मे पूण विश्वास है कि देश में सफल जनतन्त्र स्थापित करने क लिए सुदृढ तथा सुसगठित विरोधी पक्ष की बहुत आवश्यकता है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि विरोधी पार्टियो का झुकाव एकता-सगठन की ओर हो नही तो शासक दल अल्पसख्यक वोट के सहित सदा सत्तारूढ बना रहेगा।"

ज्यो ज्यो काग्रेसी शासन मे भ्रष्टाचार एव तानाशाही प्रवृत्तियाँ बढती गयी त्यो त्यो डा० करणीसिहजी का यह विश्वास दृढ होता गया कि देश म विरोधी दलो का एक राष्ट्रीय जनतान्त्रिक मोर्चा बनाया जाना चाहिए। दिनाक १८ ३-६७ को लोकसभा मे भाषण देते हुए उ होने कहा, 'मैं सोचता हू कि देश की सेवा के लिए केवल एक ही रास्ता है कि हम शक्तिशाली विरोधी दल तथा शक्तिशाली सत्ताधारी दल का निर्माण करें। अब अगला कदम यह है कि वाम पथी एक दल मे मिल जाय तथा दक्षिण पथी दूसरे दल मे।"

दिनाक २७-१-६८ को बीकानेर के रतन बिहारी पाक म भाषण देते हुए डा० करणीसिहजी ने कहा जिस दिन राजस्थान मे राष्ट्रपति शासन लागू करके जनतत्र की हत्या की गयी, उसी दिन से मैं काग्रेस के विरोध म हू। अब अपने को एक होकर राजस्थान के काग्रेसी शासन को हटाना है लेकिन इसके पहले यह जरूरी है कि जो भी विरोधी दल—जनसघ, स्वतत्र, पी एस पी ए एस पी हैं वे आपस म मिल कर एक हो जायें। आज जरूरी है कि जो छोटी

---

१ प्रकाशन सख्या ९७, सत्य-विचार, दिनाक ३१ ८ ६५

२ प्रकाशन सख्या १०७, सत्य विचार, दिनाक ५ ५-६६

छोटी विरोधी पार्टियाँ हैं, उनका आपस मे एकीकरण हो जाय।"

विरोधी दलो को एक करन के लिए डा० करणीसिंहजी ने दिनाक ६-२ ६८ को प्रसोपा के श्री एन०जी० गोरे, ससोपा के श्री एस० एम० जोशी, भारतीय क्रान्ति दल के श्री महामाया प्रसाद सिन्हा, स्वतत्र दल के एन० जी० रगा एव श्री सी० राजगोपालाचारी, जनसघ के श्री दीनदयाल उपाध्याय तथा राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के गुरु गोलवलकर तथा राजस्थान के विभिन्न नेताओ को पत्र लिखे। उन्होने सुझाव दिया कि विरोधी दलो का आपस मे विलय होकर एक नयी पार्टी 'डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट पार्टी" के नाम से गठित की जावे। उन्होने यह भी सुझाव दिया कि क्रियान्विति के रूप मे तमाम विरोधी दलो के केन्द्रीय व प्रान्तीय नेताओ की दिल्ली या जयपुर मे एक मीटिंग की जाय।

जब हरियाणा मे राष्ट्रपति शासन लागू कर दिया गया तो डा० करणी सिंहजी ने हरियाणा जाकर सयुक्त मोर्चा चुनाव अभियान का उद्घाटन किया। हिसार के पास ग्राम भटटू मे दिनाक २५-३ ६८ को भाषण देते हुए उन्होन विरोधी दलो से उनको आपस मे विलय करने की अपील की। उन्होने कहा कि वे स्वय प० जवाहरलाल नेहरू व काग्रेस दल के उसके स्वाधीनता सग्राम के कारण प्रशसक रहे हैं। लेकिन अब वह कुर्सीवादी पार्टी बन गयी। उनका काग्रेस का विरोध रेडियो पर राजस्थान म राष्ट्रपति शासन की घोषणा किये जाने के बाद से है।

दिनाक ४ ५ ६८ को एक प्रेस वक्तव्य मे उन्होने राजस्थान के २ उपचुनावो में विरोधी दल की असफलता के कारणो का विश्लेषण करते हुए कहा, 'हमे यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि जनता विरोधी दल को वोट तभी देगी जब उसको यह विश्वास हो जायेगा कि सब विरोधी पार्टियाँ मिल कर एक हागयी हैं और हमें स्थायी प्रशासन दे सकेंगी।"

दिनाक २५-२ ७० को डा० करणीसिंहजी ने लोकसभा मे भाषण दते हुए कहा "मेरे ख्याल से हम विरोधी पक्ष के लोग हमारी एकता की कमी के कारण देश के प्रति अपना कर्त्तव्य ठीक तौर पर नही निभा पाये हैं। काग्रेस पार्टी अल्पमत म है और उसे सत्तारूढ बन रहने दन के लिए विरोधी पक्ष जिम्मेवार है। अब वह समय आ गया, है जब विरोधी दलो का सयुक्त होना व दश को दो दलीय पद्धति प्रदान करना आवश्यक है।

दिनाक २९-७ ७० को लोकसभा म अविश्वास प्रस्ताव की बहस के समय

भाषण देते हुए डा० करणीसिंहजी ने कहा, "मैं उनमें से हूं, जिनका दृढ़ विश्वास है कि देश को साम्यवाद से मुक्त रखने के लिए जनतांत्रिक राष्ट्रीय दलों का एकीकरण होना आवश्यक है। अब जब कि श्री मोरारजी देसाई, आचार्य रंगा, श्री राजाजी, श्री मसानी, श्री वाजपेयी जैसे नेताओं ने देश के विपक्षी दलों में एक हो जाने के लिए आवाज उठायी है तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि इससे देश को एक नयी चेतना प्राप्त होगी। मैं उनमें से एक हूं जो जवाहरलाल नेहरू, लालबहादुर शास्त्री व गांधीजी के भक्त रहे हैं। मैं अपना देश को सदा सर्वदा स्वतंत्र देखना चाहता हूं—एक ऐसा प्रजातन्त्र, जिसमें संविधान सुरक्षित रहता है। मैं अपनी स्वतन्त्रता छोड़ने की अपेक्षा भूखों मरना पसंद करूंगा।'

दिनांक २६.६.७० को एक विशाल सभा में भाषण देते हुए डा० करणीसिंह जी ने कहा, "नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट ही वर्तमान सरकार के साम्यवादी झुकाव को सफलतापूर्वक रोक सकता है। नेशनल डेमोक्रेटिक फ्रन्ट जिसे ग्रान्ड एलायंस भी कहा जाता है, जिसमें इस समय संगठन कांग्रेस, जनसंघ, स्वतंत्र व भाक्रान्द पार्टियाँ शामिल हैं, देश की वर्तमान अव्यवस्था के अन्धकार में एक प्रकाश-स्तम्भ है।" अतः डा० करणीसिंह जी ने ससोपा व प्रसोपा से अपनी शक्ति फ्रन्ट के साथ सम्मिलित करने के लिए आह्वान किया।

विरोधी दलों के एकीकरण के बारे में दो बैठकें की गयीं। इनमें एक डा० करणीसिंह जी के दिल्ली स्थित बंगले—१०, पृथ्वीराज रोड—पर हुई तथा दूसरी आचार्य जे० बी० कृपलानी के निवास स्थान पर हुई। यद्यपि विरोधी दल एक होने पर सहमत न हुए, पर डा० करणीसिंह जी ने अपने प्रयत्न जारी रखे। यदि विरोधी दल एक हो जाते तो सन् १९७१ के चुनावों तथा उत्तर प्रदेश विधान सभा के चुनावों के परिणाम कुछ और ही होते।

जून १९७५ में भारत में आपातकालीन स्थिति की घोषणा हुई। डा० करणीसिंह जी ने इससे पूर्व ही यह आशंका व्यक्त की थी कि भारत में हिटलर की तरह तानाशाही प्रवृत्ति बढ़ती गयी तो जेलें भर जायेंगी और फिर जर्मनी की तरह हमारे यहाँ भी गैस चैम्बर्स बन जायेंगे। आपातकालीन स्थिति की घोषणा होते ही विरोधी दलों के बड़े बड़े नेताओं को पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया गया। बड़े नेताओं के अतिरिक्त अन्य अनेक व्यक्तियों को भी जेल में ठूंस दिया गया। सारा देश एक कारागृह की तरह बन गया। जेल में लोगों पर जो अमानुषिक अत्याचार हुए, उनकी कहानी सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। प्रेस पर सेंसर लगा दी गयी।

मौलिक अधिकार नाम की कोई चीज न रही। डा० करणीसिंह जी ने आपातकालीन स्थिति का समर्थन नहीं किया। जब संसद् में संविधान का ४२ वां संशोधन प्रस्तुत किया गया तो वे इसके पक्ष में न थे अतः उन्होंने मतदान में भाग नहीं लिया और अनुपस्थित रहे।

विरोधी पक्ष के नेताओं ने संभवतः जेल में ही यह निर्णय कर लिया था कि कांग्रेस के निरंकुश शासन को हटाने के लिए वे एक होकर काम करेंगे। अतः सन् १९७७ में जब आम चुनावों की घोषणा हुई और विरोधी पक्ष के नेता जेल से रिहा किये गये तो उन्होंने 'जनता पार्टी' के नाम से अपना एक नवीन संगठन बना लिया। वे सब एक हो गये। वाम पंथी, दक्षिण पंथी सभी दलों का एकीकरण हो गया। फलस्वरूप कांग्रेस की बहुत करारी हार हुई। कांग्रेस के बड़े बड़े दिग्गज बुरी तरह से चुनाव में पिट गये। और तो और कांग्रेस की एक छत्र नेता श्रीमती इन्दिरा गांधी भी चित्त हो गयी। उत्तरी भारत के कई राज्यों में कांग्रेस का या तो बिलकुल ही सफाया हो गया या उसे बहुत कम सीटें मिलीं। देश में आजादी के बाद प्रथम बार विरोधी पक्ष सत्तारूढ हुआ। यदि ये विरोधी दल पहले ही एक हो जाते, जैसा कि विगत वर्षों में डा० करणीसिंह जी आन्दोलन कर रहे थे, तो देश में द्विदलीय पद्धति कायम हो जाती और विरोधी दल काफी पहले सत्ता में आ जाते।

प्रिवी पर्स

१५ अगस्त १९४७ को हमारा देश सदियों की गुलामी के बाद स्वतंत्र हुआ। लेकिन अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान छोड़ने से पूर्व उसके दो टुकड़े—भारत और पाकिस्तान कर दिये। रियासतों को यह छूट दी गयी कि वे भारत या पाकिस्तान किसी में भी सम्मिलित हो सकती हैं, पर ऐसा करते समय वे अपनी भौगोलिक स्थिति का ध्यान रखें। अधिकांश रियासतें भारतीय संघ में सम्मिलित हो गयीं। बीकानेर के महाराजा स्व० श्री सादूलसिंहजी प्रथम भारतीय नरेश थे, जिन्होंने अपनी रियासत को भारतीय संघ में सम्मिलित करने की घोषणा की और संघ प्रवेश के समझौते पर हस्ताक्षर किये। इस प्रकार बीकानेर भारतीय संघ में सम्मिलित होनेवाली प्रथम रियासत थी। बाद में अन्य रियासतें भारत में मिलीं। स्वर्गीय महाराजा सादूलसिंहजी की इस देशभक्ति और त्याग की प्रशंसा भारत के बड़े बड़े नेताओं ने की।[1]

---

१ प्रकाशन संख्या—भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसाद का भाषण

बाद मे या तो देशी रियासतो को मिलाकर नये सघ बना दिये गये अथवा उन्हें पास के प्रान्त म मिला दिया गया। इन रियासतो के शासको के साथ भारत सरकार ने अलग-अलग समझौते किये, जिनके अनुसार उन्हें और उनके वशजो को एक निश्चित वार्षिक धनराशि भत्ते के रूप मे दी जानी स्वीकार की गयी। ये भत्ते ही प्रिवी पस कहलाये। देश की विभिन्न रियासतो की आमदनी आबादी, आकार आदि को ध्यान मे रखकर उनके शासको का प्रिवी पस अलग-अलग निर्धारित किया गया। प्रिवी पस के स्थायित्व की गारटी दी गयी और इसका उल्लेख भारतीय सविधान में किया गया।

आजादी के बाद काग्रेस की लोकप्रियता उत्तरोत्तर कम होने लगी। चुनावो म कई जगह अपने दल क उम्मीदवारो की पराजय तथा कई भूतपूव राजाओ को चुनाव म विजय होत देख काग्रेस के कुछ नेता बौखला उठे। सन् १९६७ के मई मास में *काग्रेस कायकारिणी मे रखे गय प्रिवी पस सम्बधी प्रस्ताव* के बारे में समाचार पढकर डा० करणीसिहजी न दिनाक १४-५-६७ को एक वक्तव्य प्रकाशित किया।[1] इसमे उन्होने कहा, "मैंने समाचार पत्रो मे काग्रेस वर्किंग कमेटी की भूतपूव नरेशो को आम चुनाव न लडने दिये जाने अथवा उनके प्रिवीपस को 'ऑफिस ऑफ प्रोफिट' घोषित किये जाने की माग को पढा। नरेशो के प्रिवीपस को 'ऑफिस ऑफ प्रोफिट' घोषित करने का समय सन् १९५२ मे था, *जब कि आम चुनाव प्रथम बार हुए थे, न कि आज चार आम चुनाव हो जाने के* बाद। मेरी समझ मे नही आता कि भूतपूव नरेश के प्रिवीपस व उनके प्रिवीपस से आम चुनाव में कोई अन्तर पड सकता है। हो सकता है कि कुछ भूतपूव नरेशो के पास धन हो लेकिन अधिकतर उनकी स्थिति ऐसी नही है, जसी कि लोगो की धारणा है। जो तथ्य अधिकतर लोगो को नही मालूम है वह यह है कि प्रत्येक वष के आरम्भ मे ही पूण प्रिवीपस का बजट बन जाता है और ऐसे बहुत ही कम नरेश होगे, जिनके बचत होती होगी। जिस तथ्य की अवहेलना की जाती है, वह यह है कि एकीकरण के समय से, जब यह निजी राशि निश्चित की गयी थी, आज उनकी क्रय-क्षमता (परचेजिग पावर) बढती हुई कीमतो के कारण १/४ (चौथाई) से भी कम रह गयी है।।"

डा० करणीसिह जी ने एक पुस्तिका सन् १९६७ मे प्रकाशित की।[1] इसमें उन्होने राजाओं के प्रिवी पस व विशेषाधिकारो की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि बताते हुए

---

१ प्रकाशन सख्या १२९— प्रिवीपस तथा अधिकार कानूनी एव नतिक पक्ष

निम्नलिखित बिन्दुओं पर प्रकाश डाला —

(१) सन् १९४७ मे विभाजन के समय भारत की स्थिति गम्भीर थी। बिना रियासतों के भारत बिलकुल सामजस्य-रहित हो जाता।

(२) सरदार पटेल न सविधान सभा मे भारत सरकार द्वारा राजाओं को कर मुक्त प्रिवीपस तथा विशेषाधिकारों की गारटी को दी गयी सवधानिक मान्यता का समथन किया।

(३) सरदार पटेल द्वारा प्रिवी पस की राशि क्षेत्रीय नेताओं के परामश अथवा उनकी सिफारिश पर निर्धारित की गयी।

(४) महात्मा गाँधी ने भी प्रिवी पस देने का समथन किया था।

(५) नरेशों का प्रिवी पस हमेशा के लिए निर्धारित किया गया था।

(६) प्रिवी पर्स आय-कर सम्बन्धी समस्त करो से मुक्त है।

(७) प्रिवी पस की राशि के सम्ब ध म आलोचना आधारहीन है। राज्यो से जो सम्पति नकद धन व दूसरी शक्ल मे मिली, प्रिवीपस की कुल राशि इन सबके सामने नगण्य है।

डा० करणीसिंह जी ने अपनी इस पुस्तिका मे देश के विभिन्न नेताओं तथा श्री वी पी मनन के उद्धरण देकर स्पष्ट किया है कि राजाओं के द्वारा अपनी प्रजा व देश के लिए खुशी खुशी अपनी सत्ता तथा सम्पत्ति का जो त्याग किया गया उसे देखते हुए राजाओं को स्थायी रूप से प्रिवीपस दिया जाना उचित है।[1]

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि सिद्धान्त रूप से डा० करणीसिंह जी का प्रिवी पस से कभी लगाव नही रहा और उन्होंने पैसो स मोह नही रखा। लेकिन क्योंकि पाच सौ वष का इतिहास और पूवजो की जायदाद तथा पुराने मुलाजिमो के भविष्य का भी भार उन्ही के कधो पर रहा है इसलिए प्रिवी पस जितने दिन मिली उसका समझदारी से खर्चा किया। जब बन्द हुई उस दिन उन्हें कुछ खेद नही हुआ लेकिन सिद्धान्त रूप से औपचारिक कोट केसेज में तथा लोकसभा में उन्होंने पूरा समथन किया।

यह स्मरणीय है कि राजाओं के प्रिवी पस त्याग की महत्ता का अनुमान बाद के भारत के चुने हुए शासको के व्यवहार से तुलना करके लगाया जा सकता है। बाद के वर्षों म नेता लोग जिस किसी तरह सत्ता से चिपके रहना चाहते थे, जिसका प्रबल प्रमाण श्रीमती इन्दिरा गाँधी की आपातकालीन स्थिति की घोषणा है।

---

१ श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र—भारतीय नरेश और राष्ट्रीयता

दिनाक २७ १ ६८ को बीकानेर के रतनबिहारी पार्क मे भाषण देते हुए डा० करणीसिंहजी ने कहा, "चौथे आम चुनाव के बाद अखिल भारतीय काग्रेस ने एक प्रस्ताव प्रिवी पस को समाप्त करन का उठाया। भूतपूर्व राजा लोग काग्रेस की दृष्टि मे साप हैं, जिन्हें शीघ्र समाप्त करने मे वे लगे हैं। लकिन वास्तव मे जनता के लिए कुर्सीवादी काग्रेस साप है। प्रिवी पस रहे या न रहे मेरा काय तो आप लोगो की सेवा करना है, जो अन्त तक करता रहूगा। मैं अपने भाइयो के चेहरे पर मुस्कान दखना चाहता हू।"

जब भारतीय ससद् म नरेशो के प्रिवी पस एव विशेपाधिकार समाप्ति का विधेयक रखा गया तो लोक सभा मे इस पर बहस के समय दिनाक २-६ ७० को डा० करणीसिंह जी न कहा 'मैं यह कहना चाहूगा कि प्रिवी पस के मसले को सदर्भ से पृथक् कर दिया गया है। प्रिवी पस के मसले के पीछे राजनतिक चाल है। सन् १६६७ के चुनाव के बाद से मध्य प्रदेश और राजस्थान मे प्रिवीपस को लाभ का पद' घोषित किये जाने की माग उठी। इस माग का कारण यह था कि कुर्सीवादी सत्तारूढ रहना चाहते थे। मैं समझता हू कि प्रिवी पस के मसले को उठाने और उसे इतना अधिक महत्व दने के भी कारण हैं क्योकि मैं समझता हू कि यह ध्यान हटाने वाली चाल है। आज देश के सामने नरेशो को मिटाने के सवाल से कही ज्यादा अधिक महत्त्वपूण मसले है। राजा लोग देश भक्त नागरिक हैं। यदि आप राजा लोगो को नष्ट कर देंगे तो आप देश भक्त भारतीयों को नष्ट करेंगे।"

डा० करणीसिंह जी ने अपने भाषण मे भारत के एकीकरण में स्वर्गीय महाराजा सादूलसिंह जी के महत्त्वपूण योगदान का उल्लेख किया। उन्होने भारत के प्रथम राष्ट्रपति ड० राजेन्द्र प्रसाद को उद्धृत करते हुए बताया कि किस प्रकार महाराजा सादूलसिंह जी ने देश को टुकड़ टुकडे होने से बचाया। सरकार की वादा खिलाफी की चर्चा करते हुए डा० करणीसिंह जी ने कहा, नरेशो को तो दण्ड पाने वाले लडकों की तरह समझ लिया गया है। सरकार से कोई गलती होती है तो उसके बदले नरेशो की ताडना की जाती है।'

राजस्थान के मुख्य मन्त्री श्री मोहन लाल सुखाडिया ने जयपुर मे दिनाक २६ १२ ७० को भाषण देते हुए कहा, 'यदि राजा महाराजा व और लोग यह सोचते हो कि वे प्रिवीपस व राजसी विशेपाधिकारों का बन्द किया जाना रोक

देंगे तो भारी धोखे में हैं।" इसका उत्तर देते हुए डा० करणीसिंह जी ने दिनांक ३१-१२-७० को एक वक्तव्य प्रसारित कर कहा, "राजाओं को सामने लाकर 'भेड़िया आया भेड़िया आया' के ग्रामोफोन के पुराने रिकार्डों को बजाना अब सत्तारूढ कांग्रेस के लिए निरर्थक साबित होगा।"

दिनांक ३१-१२-७० को उदयपुर के महाराणा साहब ने एक भेंट में बताया 'नरेशों के साथ जो समझौते केन्द्र द्वारा किये गये थे, व जिम्मेदारी के साथ किये गये थे। जो कुछ इस प्रकार तय किया गया था यदि उससे अब पीछे हटा जा रहा है तो इसमें कोई सन्देह नहीं कि हमारी ही मातृभूमि में हमारे साथ विदेशी की तरह व्यवहार किया जायेगा।"

जब राजस्थान में कांग्रेस सत्तारूढ थी तो उसके कुछ नेताओं ने यह प्रचारित किया कि डा० करणीसिंह जी की निःशुल्क बिजली और पानी सरकार द्वारा बन्द किये जाने पर वे कांग्रेस विरोधी बन गये। इस सम्बन्ध में यह बात ध्यान देने योग्य है कि डा० करणीसिंहजी ने कांग्रेस का विरोध तभी आरम्भ कर दिया था जब राजस्थान में संयुक्त विरोधी दल का बहुमत होते हुए भी उसकी सरकार नहीं बनने दी गयी, कांग्रेस को जोड़ तोड़ करके अपनी सरकार बनाने हेतु राजस्थान में राष्ट्रपति शासन लागू किया गया और जयपुर में नागरिकों पर गोलियां चलाई गई। यह सब मार्च १९६७ में हुआ जबकि राजाओं की निःशुल्क बिजली-पानी बाद के महीनों में बन्द हुए। अतः यह कहना मिथ्या और आधारहीन है कि डा०करणीसिंहजी का कांग्रेस विरोध उनके निःशुल्क बिजली पानी के बन्द होने से सम्बन्धित है।

इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि राजाओं के प्रिवीपर्स तथा विशेषाधिकारों को समाप्त करने सम्बन्धी इन्दिरा सरकार का विधेयक जब संसद् में पारित नहीं हुआ तो संसद का अधिवेशन समाप्त होते ही राष्ट्रपति ने एक अध्यादेश जारी कर के राजाओं का प्रिवीपर्स एवं उनकी मान्यता समाप्त कर दी। राष्ट्रपति के इस अध्यादेश को कुछ राजाओं ने उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी। उच्चतम न्यायालय ने यह निर्णय दिया कि राष्ट्रपति का नरेशों के प्रिवीपर्स व मान्यता समाप्त करने सम्बन्धी अध्यादेश अवैध था।

जिस दिन यह निर्णय सुनाया गया डा० करणीसिंहजी उच्चतम न्यायालय

में थे। जब वे बाहर निकले तो अखबार वालों ने व भीड के कुछ लोगो ने इस निर्णय पर उनकी प्रतिक्रिया पूछी। डा० करणीसिहजी का उत्तर लोकतान्त्रिक विचारधारा के अनुरूप था। उन्होने कहा, "यह राजाओ की जीत नही बल्कि तथ्य की विजय है कि न्याय सर्वोच्च है। भारत का सबसे निर्धन व्यक्ति भी न्यायालय से न्याय पाने की आशा रख सकता है, चाहे वह सरकार के विरुद्ध ही क्यो न हो।"

इन्दिरा गांधी के चुनाव के सम्बन्ध मे इलाहाबाद उच्च न्यायालय के निर्णय को देखने से डा० करणीसिहजी की उपयुक्त बात कितनी सत्य लगती है। प्रतिबद्ध न्यायपालिका के सिद्धान्त को समाप्त कर जनता पार्टी ने डा० करणी-सिहजी के उक्त कथन की सार्थकता सिद्ध कर दी है।

एक सर्वथा अनूठा प्रयोग

"अनौपचारिक विकास कान्फ्रेंस"

अपने ससद् के कार्यकाल मे डा० करणीसिहजी ने अनुभव किया कि अधिकतर जनता की मांगो का सम्बन्ध विधान सभा व पचायतो के अन्तर्गत आता है। चूकि विधान सभा का चुनाव प्रति पांचवें वर्ष होता है और एक चुनाव के बाद अगले चुनाव मे अनेक नये सदस्य एसे आते है जिनका अनुभव कम होता है। अत विकास की गति धीमी पड जाती है। सदस्यो की भिन्न विचारधारा तथा आपसी मतभेद के कारण भी जनता की बहुत सी समस्याएँ बिना सुलझी ही रह जाती हैं। डा० करणीसिहजी स्वय निर्दलीय थे अत उन्होने एक नया प्रयोग किया कि क्षेत्र के सभी सासद विधान सभा सदस्य पार्टी की सीमा को भूलते हुए सामूहिक उद्योग और समझ से काम करें ताकि दुखी मानवता की सेवा की जा सके। इसी भावना का परिणाम 'अनौपचारिक विकास कान्फ्रेंस" के रूप मे प्रकट हुआ। इस हेतु गठित समिति मे बीकानेर डिवीजन के जन-प्रतिनिधियों, जिनमे ससद सदस्य विधान-सभा सदस्य व जिला प्रमुख को सम्मिलित किया गया। यद्यपि डा० करणीसिह जी बीकानेर चुरू क्षेत्र से लोक सभा के सदस्य चुने गये थे, पर उन्होने हमेशा अपना यह कर्तव्य समझा कि वे भूतपूर्व बीकानेर रियासत के सभी लोगो की सेवा करेंगे। इसलिए वे सारे बीकानेर डिवीजन मे जाते थे और उन्होने तीनो जिला मुख्यालयो-बीकानेर, गगानगर और चुरू में अपने तीन जन सम्पर्क अधिकारी नियुक्त किये। इनको डा० करणीसिह जी ने

अपनी तरफ से जीपें दी। ये जिले मे घूमते और पब्लिक की रिपोट डा० करणी सिंह जी को भेजते, जिन पर विकास बैठको में विचार-विमर्श होता।

'अनौपचारिक विकास कार्फ्रेंस'' न केवल राजस्थान में बल्कि भारत में भी अपने ढग का एक अनूठा प्रयोग था। डा० करणीसिंह जी ने यह अनुभव किया कि यथाथ मे जनता की समस्याए ऐसी हैं, जिनका हल निकालने के लिए सभी दलों के प्रतिनिधियों को आपस मे बठकर विचार-विमश करने के मार्ग मे उनकी दलीय सदस्यता बाधक नही होगी। यह प्रयोग बहुत सफल हुआ और विभिन्न भागो के जन-प्रतिनिधियो को एक दूसरे की सलाह एव राय का लाभ मिला जिससे कि वे मतदाताओ की अधिक सेवा करने व जनतत्र को अधिक मजबूत बनाने मे ज्यादा सफल हुए।

अनौपचारिक विकास कार्फ्रेंस की बठकें इस प्रकार हुई —

(१)	प्रथम	बैठक	ता	७-४-६२	को	बीकानेर मे
(२)	दूसरी	,,	,,	१३-१-६३	को	श्रीगगानगर में
(३)	तीसरी	,	,	४-२-६५	को	चूरू मे
(४)	चौथी	,,	,	१६-४-६५	को	लूणकरणसर मे
(५)	विशेष	,,	,	१६-११-६५	को	बीकानेर में

(६) अन्तिम बैठक डा० करणीसिंह जी की अध्यक्षता मे रामबाग पैलेस जयपुर मे

इन अनौपचारिक कार्फ्रेंसो मे जन-प्रतिनिधियो ने बीकानेर डिवीजन की विभिन्न समस्याओ पर विचार-विमश कर उनके सम्बन्ध मे प्रस्ताव पारित किये और उन्हें राज्य व केन्द्रीय सरकार के पास भेज कर यह अनुरोध किया कि इनके सम्बन्ध मे यथासभव शीघ्र कारवाई की जाय और इन समस्याओ को हल किया जाय। इन कार्फ्रेंसो मे जिन विषयो पर चर्चा हुई एव प्रस्ताव पारित किये गये, उन में स महत्त्वपूण निम्नलिखित है —

१ राजस्थान के अकालग्रस्त ग्रामीण व शहरी क्षेत्रो में नियमित खाद्यान्न उपलब्ध कराने के लिए सरकार का ध्यान आकर्षित करना

२ अकालग्रस्त लोगो को शीघ्र काम दिलाने हेतु सहायता काय चालू करने के लिए सरकार को कहना

३ सन् १९६३-६४ के अकाल मे चालू किये गये अधूरे राहत कार्यों को पूरा करना

४ गगनहर मे निर्धारित जल–मात्रा देने के लिए राज्य सरकार से अनुरोध करना, क्योंकि इसके बिना न तो दोनो फसलें बोई जा सकती हैं और न पक सकती है, अधिक उत्पादन का तो सवाल ही दूर रहा।

५ लूणकरणसर के खारे पानी वाले क्षेत्र मे पीने के लिए तथा सिंचाई के लिए पानी हेतु लिफ्ट चैनल का काम जल्दी करने पर जोर दना।

६ राजगढ और नोहर को खेती के लिए नहरी पानी पूरा देने का प्रब ध करना

७ बीकानेर व चूरू जिलो मे नल के कुएँ खुदवाना (सिंचाई हेतु भी)

८ राजगढ मे पीने के पानी का प्रब ध करने हेतु सीधमुख से नहर की नालिया बनाना

९ गगानगर जिले म गेहूँ के अच्छे बीज देने की व्यवस्था करना

१० निम्न नगरो म जल प्रदाय का प्रब ध करना —

(क) विजय नगर (ख) भादरा (ग) डूगरगढ (घ) राजलदेसर

(ड) सुजानगढ (च) अनूपगढ (छ) पूगल (ज) छापर

(झ) गजसिहपुर (ए) बीदासर

११ अनूपगढ तक बिजली का विस्तार

१२ कृषि मे उपयोग हेतु सस्ती बिजली

१३ बीकानेर के पास प्रस्तावित गोलाबारी क्षेत्र को अ यत्र रेगिस्तानी क्षेत्र मे स्थापित कराना

१४ इ द्रपुरा से दूधवाखारा को पीने का पानी पहुँचाने का प्रब ध

१५ राज्य के रेगिस्तानी व अद्ध रेगिस्तानी क्षेत्रो म ग्रामीणो द्वारा प्रारभिक पाठशालाओ के लिए धन दने सम्ब धी शत से छूट क लिए सरकार से लिखा पढी

१६ चूरू मे लडकियो का डिग्री कालेज खोलना

१७ महारानी सुदशना कालेज के लिए छात्रावास

१८ गगानगर कॉलेज मे स्नातकोत्तर व कानून तथा डूगर कालेज में विज्ञान की स्नातकोतर कक्षाएँ खोलना

१९ महारानी सुदशना कॉलेज में बी ए (आनस) पाठ्यक्रम चालू करना

२० रतनगढ या बीकानेर मे सस्कृत विश्वविद्यालय की स्थापना

२१ गगानगर म कालेज छात्रावास का निर्माण

२२ गगानगर के कॉलेजो म विज्ञान के छात्रो के स्थान बढाने तथा डिग्री कक्षाओ में बोटनी व जुलोजी की कक्षाएँ चालू करना

२३ गगानगर या सूरतगढ म एक कृषि कॉलेज आरम्भ करना

२४ विजयनगर म उच्च माध्यमिक विद्यालय के भवन का निर्माण

२५ गर्जसिंहपुर की स्कूल म विज्ञान की पढाई की सुविधा

२६ नोहर मे लडकियो के लिए उच्च माध्यमिक विद्यालय

२७ तारानगर की माध्यमिक स्कूल को उच्च माध्यमिक बनाना

२८ पलाना की खान को ग्रोपेन सिस्टम स चलाना ग्रौर वहाँ थमल पावर स्टेशन लगाना

२९ बीकानेर को पयटक केन्द्र बनाने के लिए ग्रधिक ग्राकषक बनाना

३० बीकानेर म सरकारी क्षेत्र मे ऊनी मिल स्थापित करने की सरकारी घोषणा को लागू करवाना

३१ गर्जसिंहपुर म चीनी का कारखाना खोलने हेतु

३२ गर्जसिंहपुर व केसरीसिंहपुर मे ग्रस्पताल खोलने व सूरतगढ म ग्रस्पताल का निर्माण

३३ निम्नलिखित स्थानो पर ग्रायुर्वेदिक ग्रोषधालय खोलना

(क) गाव लाछडसर तहसील रतनगढ (ख) गाव लोहसण तहसील चूरू

(ग) गाव मोकण तहसील सूरतगढ (घ) गाव परसनऊ तहसील डूगरगढ

३४ रतनगढ म टी० बी० क्लीनिक खोलना

३५ दिल्ली—बीकानेर के बीच एक ग्रौर एक्सप्रेस रेलगाडी चलाना

३६ गगानगर से हिन्दूमल कोट तक बडी लाइन बनाना

३७ रतनगढ रेल्वे स्टेशन पर ऊपरी पुल बनाना

३८ राजगढ व भादरा के बीच पहाडसर म एक नया रेल स्टेशन खोलना

३९ हनुमानगढ से जयपुर व दिल्ली के लिए सीधा डिब्बा लगाना

४० उत्तरी रेल्वे क बीकानेर डिवीजन मे रेल्वे क्रासिंग पर ग्रादमी रखने हेतु रेल्वे को लिखना

४१ रायसिंहनगर की मडी ग्रौर स्टेशन के बीच ऊपरी पुल बनाना

४२ रायसिंहनगर रेल्वे पर माल गोदाम की रोड बनाना

४३ सीमा त सडकें बनाने पर बल देना

४४ बीकानेर मे सडको की मरम्मत

४५ बीकानेर व चुरू जिले मे ग्रकाल क समय ग्रारम्भ की गयी सडको के काय की पूर्ति

४६ निम्नलिखित सडकें बनाना —

(क) विजयनगर से रायसिंह नगर

(ख) कानीनपुरा हैड स केसरीसिंहपुर

(ग) मिरजावाला से केसरीसिहपुर

(घ) डूगरगढ से बीदासर

(ङ) मोमासर से राजलदेसर

(च) चुरू से तारानगर

(छ) चुरू से राजगढ

(ज) सरदारशहर से रतनगढ

(झ) साहवा से भादरा

४७ पदमपुर व रायसिह नगर में पक्की मडी का निर्माण

४८ पदमपुर मे टेलीफोन एक्सचेंज

४९ जेतसर मे नाम्वा डाकघर खोलना

५० चुरू को गगानगर, झुझनू व फतेहपुर से टेलीफोन से जोडना

५१ गगानगर में खेलो का एक स्टेडियम बनाना

५२ नहरी क्षेत्र में पडती जमीन को आरजी रूप में काश्त के लिए देना ताकि कृषि का उत्पादन बढ़े। प्राथमिकता भूमिहीनो व भूतपूर्व सैनिको को दी जाय

५३ जेसलमेर इलाके के कालायत तहसील में मिलाये गये गोड, बज्जू आदि गावो के लिए विभिन्न काम

मातृ-भाषा-प्रेम

डा० करणीसिह जी की मातृभाषा राजस्थानी है अत वह आपको बचपन से ही प्रिय है। अखिल भारतीय राजस्थानी साहित्य सम्मेलन के दीनाजपुर अधिवेशन के अवसर पर सभापति पद से भाषण देते हुए ठा० रामसिह जी तवर ने कहा[1] 'घणें हरख री बात है कै बीकानेर युवराज श्री करणीसिह जी बहादुर न भी मातृभाषा सू बडो प्रेम है।" बीकानेर राजघराने के प्राय सभी सदस्य आपसी बातचीत मे तथा राजस्थान के लोगो मे बात करते समय सदा राजस्थानी भाषा का ही प्रयोग करते हैं। दिनाक ७ २-५७ को लक्ष्मीनाथ जी के मन्दिर मे स्थानीय जनता के सामने उन्होंने अपना भाषण राजस्थानी मे दिया। भारत पर चीनी आक्रमण के समय दिनांक ६-१२-६२ को रतन बिहारी जी पार्क मे एक

१ अखिल भारतीय राजस्थानी साहित्य सम्मेलन दीनाजपुर म अध्यक्ष पद से ठा रामसिह जी तवर का भाषण राजस्थानी दिवस समारोह जोधपुर के अवसर पर पुन मुद्रित पृ ४९

विशाल जनसमूह के सामने उ होने अपने उद्गार राजस्थानी मे ही प्रकट किये

राजस्थानी भाषा के प्रति गहरा प्रेम और गौरव का भाव होते हुए उन्होंने ससद् मे राजस्थानी भाषा के प्रश्न को काफी समय तक इसलिए उठाया कि विभिन्न भाषाओ के समथको ने भाषा के सवाल को लेकर कई ज उग्र और हिंसात्मक आन्दोलन करके देश के वातावरण को काफी विषाक्त बना दि था तथा राष्ट्रीय एकता को काफी क्षति पहुँचाई थी। डा० करणीसिंह जी आशका थी कि ऐसी स्थिति मे उनकी राजस्थानी भाषा सम्ब धी सही माँग भी लोग कही गलत अथ मे न लेले। जब पजाबी भाषा के आधार पर पज सूबे का निर्माण प्राय निश्चित सा हो गया तो दिनाक १४-३ ६६ डा० करणीसिंह जी ने लोकसभा मे भाषण देते हुए अपनी मातृभाषा की माग इस प्रकार प्रस्तुत किया,[2] 'अब मैं एक ऐसे विषय पर कुछ कहना चाहूँगा जि पर अब तक बहुत नहीं कहा गया है—वह है राजस्थानी भाषा, जो कि दो कर जनता की भाषा है, को मान्यता देना व सविधान के आठवें परिशिष्ट में स्थ दिया जाना। क्योंकि हमने भाषाई राज्य सिद्धा त रूप मे स्वीकृत लिया है, हम यह महसूस करते हैं कि पहला कदम यह होना चाहिए कि राजस्था भाषा को मान्यता दी जाय और सविधान मे इसे पन्द्रहवीं भाषा का स्थान दि जाय और राजस्थान के जो सदस्य अथवा अन्य कोई भी जो इस भाषा मे सदन बोलना चाहें उन्हे इस बात की स्वतन्त्रता हो। मेरे विचार से यह उचित न था कि जब सविधान बन रहा था तब राजस्थान सरकार ने यह कह दिया उनकी भाषा हिन्दी है। मैं हिन्दी का पूर्ण समथक हूँ और मेरे विचार से हि ही एक ऐसी भाषा है जो देश को एक सूत्र मे बांध सकती है, लेकिन इसका अथ नही कि दो करोड जनता की भाषा को सवथा भुला दिया जाय डा० करणीसिंह जी ने हिन्दी और राजस्थानी का अन्तर बताते हुए अपनी मा को सवैधानिक कहा और सरकार से इस पर सहानुभूति से विचार करने अनुरोध किया।

दिनाक १ ५ ६६ को साले की होली, बीकानेर मे आयोजित एक सावजनि सभा मे डा० करणीसिंहजी ने राजस्थानी भाषा सम्बन्धी अपनी मांग को इ प्रकार दोहराया, —

---

१ प्रकाशन सख्या ७१

२ प्रकाशन सख्या १०५ सत्य विचार दिनाक १७-३-६६

"जब से पंजाबी सूबा प्रश्न राष्ट्रव्यापी महत्त्व का प्रश्न बन गया है तब से मुझे यह विचार आया कि राजस्थानी भाषा के साथ बड़ा अन्याय किया गया है। इस भाषा को दो करोड़ व्यक्ति बोलते हैं। इतने महत्त्वपूर्ण तथ्य के होते हुए इस भाषा को भाषा ही नहीं माना गया है जबकि पंजाबी, गुजराती, मराठी जैसी भाषाओं को संविधान में शासकीय भाषा मान लिया गया है। मेरा विचार है कि इसे संविधान की आठवीं तालिका में १५ वीं भाषा के रूप में सरकारी तौर पर माना जाय।"

उन्होंने राजस्थानी को संविधान के आठवें परिशिष्ट में मान्यता दिये जाने के विषय में लोकसभा में एक बिल प्रस्तुत किया। दिनांक १ ६ ६७ को एक वक्तव्य[1] प्रकाशित कर उन्होंने संसद् के सदस्यों से अपील की कि वे राजस्थानी को संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए सहयोग दें। उन्होंने कहा, 'यद्यपि राजस्थानी करीब २ करोड़ राजस्थानियों की भाषा है पर यह दुर्भाग्य का विषय है कि इस प्राचीन भाषा को संविधान में अभी तक मान्यता नहीं मिली है। मेरा आपसे अनुरोध है कि आप मेरे बिल को पूर्ण समर्थन और एक उचित कार्य के लिए अपना सहयोग देंगे।"

डा० करणीसिंह जी ने अपने द्वारा प्रस्तुत बिल में राजस्थानी के समृद्ध एवं उच्च कोटि के साहित्य पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न विद्वानों के राजस्थानी के सम्बन्ध में मत उद्धृत किये। उन्होंने राजस्थानी को कुछ लोगों द्वारा स्वीकार न करने के कारणों का विश्लेषण किया और पुष्ट तर्कों द्वारा सिद्ध किया कि राजस्थानी सदियों पुरानी एवं सब प्रकार से सक्षम भाषा है। उन्होंने १६-२-६८ को राजस्थानी भाषा विधेयक पर लोकसभा में भाषण देते हुए निम्नलिखित विचार प्रकट किये —

(१) राजस्थान की भावात्मक एकता के लिए राजस्थानी को मान्यता देनी आवश्यक है।
(२) मैं यहां लगभग २ करोड़ राजस्थानी नागरिकों की भावनाएँ व्यक्त कर रहा हूँ।
(३) राजस्थानी हमारी मातृभाषा है, इसे संविधान में स्थान दिया जाए।
(४) जिस राज्य ने लड़ाकू योद्धा दिए उसकी भाषा को मान्यता न देना अन्याय है।
(५) भाषा शास्त्रियों की दृष्टि से राजस्थानी एक भाषा है।
(६) जनता की भावनाओं और परिस्थितियों को समझना राजनीतिज्ञता है।

(७) राजस्थान का एकीकरण होते ही भाषा की माग पदा हुई है ।

(८) भाषा विधेयक रखने से राष्ट्रीय एकता को कोई क्षति नहीं ।

यद्यपि राजनीतिज्ञो की कूटनीति के कारण डा० करणीसिंह जी द्वारा लोकसभा में प्रस्तुत उपयुक्त विधेयक पारित नही हो सका लेकिन वे इससे निराशा नही हुए हैं और राजस्थानी को उचित गौरवपूर्ण स्थान दिलाने के लिए बराबर प्रयत्नशील हैं ।

राजस्थानी भाषा को सवैधानिक मान्यता देने के औचित्य के बारे मे डा करणीसिंह जी के विचार

राजस्थानी दो करोड से भी अधिक राजस्थानियो की भाषा है फिर भी दुर्भाग्य से इस भाषा को क्षेत्रिय भाषा के आधार पर सविधान के ८ वें परिशिष्ट मे मान्यता प्राप्त नही हुई है । स्वाभाविक रूप से प्रश्न उठता है क्यो ?

इसके स्वीकार न करने के केवल दो कारण हो सकते हैं—

(१) बहुत अधिक क्षेत्रिय भाषाओ को मान्यता देने से राष्ट्रीय एकता म गतिरोध होने की सम्भावना और

(२) यह भ्रम कि राजस्थानी एक बोली है, भाषा नही ।

जहा तक पहली बात का सवाल है मैं यह कहना चाहूगा और वह भी प० जवाहरलाल नेहरू जसे व्यक्ति की मान्यता क आधार पर कि यह धारणा नितात भ्रमपूर्ण है । दिनाजपुर म अखिल भारतीय साहित्य सम्मलन म पडित नेहरू ने कहा था कि 'हमे यह बात साफ साफ समझ लेनी चाहिए कि हम बगला मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगू कन्नड, मलयालम और राजस्थानी आदि अन्य प्रान्तीय भाषाओं की तरक्की चाहते हैं । हर प्रात मे वहा की भाषा ही प्रथम है । हिन्दी या हिन्दुस्तानी राष्ट्रभाषा अवश्य है और होनी चाहिए, लेकिन प्रान्तीय भाषाओ के पीछे ही आ सक्ती है ।"

उन्होने नवल नगर के कांग्रेस अधिवेशन मे पुन अपना मन्तव्य इस प्रकार प्रकट किया—

कुछ व्यक्ति एक देश, एक सस्कृति, एक भाषा की बात करते है। यह विलाप मुझे कुछ Facist और पुराने नाजियों के सिंहनाद की याद दिलाता है। हमारा राष्ट्र एक अवश्य है, लेकिन इसके शासन तत्र को एक रूप देने का प्रयास करने का अर्थ होगा फूट, झगडे व वैमनस्य। इससे भारत की समृद्धि तथा विविधता का अन्त होगा और लोगो की रचनात्मक क्षमता व आनन्द और जीवन को सकुचित कर देगा। हमे महान प्रान्तीय भाषाओ को प्रोत्साहन देना ही होगा।

यह ठीक भी है, क्योकि जस व्यक्तिगत रूप से वैस ही समाज के अथवा एक देश के लिए भी, एक वस्तु का समग्र विकास, उसके भागो के विकास पर ही निभर करता है वास्तव मे समुचित विकास अलग अलग अगो के विकास के बिना स्थिर नही रह सकता और इससे असन्तोष ईर्ष्या, वैमनस्य उत्पन्न होता है जिससे आपसी मतभेद झगडे व रंजिश को प्रोत्साहन मिलता है और जो कि किसी भी सूरत मे निरन्तर प्रगति के लिए हितकर नही है।

जैसे मनुष्य का शारीरिक मानसिक और नतिक विकास साथ साथ होना चाहिए उसी प्रकार एक देश की आर्थिक एव राजनैतिक प्रगति भी साथ साथ ही होना आवश्यक है। और व्यक्ति की सास्कृतिक प्रगति शीघ्रता एव उत्तम ढग से उसकी मातभाषा के माध्यम से ही हो सकती है। बालक सवप्रथम अपनी मातभाषा ही सुनता है समझता है और बोलता है। अत वह अपनी मातभाषा मे ही विचारो को भलीभाति समझने, ग्रहण करने व व्यक्त करन मे समथ होता है बजाय किसी दूसरी भाषा क जो उसने बाद म सीखी हो।

डा० राधाकृष्णन न इस विषय मे बहुत ही उचित टिप्पणी दी है। उन्होने कहा है कि इसमे कोई सन्देह नही है कि कुछ ऐसे हिन्दी समथक है जो यह चाहते है कि हिन्दी का उपयोग ऐसे मौको पर भी किया जाय जहां कि क्षेत्रीय भाषाए सवथा उपयोग की जा सकती हैं और जिनके विचार से सारे देश द्वारा एक ही भाषा को मान्यता देन से ही राष्ट्रीय एकता स्थापित हो सकती है। लेकिन एसे प्रस्ताव केवल व ही लोग कर सकते हैं जो कि क्षेत्रीय भाषाओ की समृद्धता के विषय में बिल्कुल अनभिज्ञ है और जो यह नही समझते कि ऐसा होन स देश के साहित्य को भारी नुक्सान होगा। हमारी कुछ क्षेत्रीय भाषायें करोडों देशवासियों द्वारा बोली जाती है जिनकी सास्कृतिक प्रगति केवल उन भाषाओ द्वारा ही हो सकती है न कि हिन्दी के द्वारा।

भारत बहुत बडा देश है, बल्कि एक उपमहाद्वीप है और इसकी एकता इसकी असमानता मे ही है। पजाबी, बगाली, गुजराती मराठी, और सिन्धी आदि सभी क्षेत्रीय भाषा के रूप में स्वीकृत हो चुकी है और इनकी मान्यता से निश्चित रूप से राष्ट्रीय एकता की प्रगति में अवरोध पैदा नही हुआ है, तब राजस्थानी का ही मान्यता देने से कैसे राष्ट्रीय एकता को आघात पहुच सकता है? वास्तव मे इस बात का प्रश्न ही नही है लेकिन तथ्य यह है कि हिन्दी भाषी लोगो को जो सयोग से आज राष्ट्र के कर्णधार बने हुए हैं यह डर है कि राजस्थानी का क्षेत्रीय भाषा के रूप मे मान्यता देने से न केवल हिन्दी भाषी लोगो की सख्या मे कमी हो जायगी अपितु राजस्थानी (डिंगल) साहित्य को अपना स्वय का स्थान मिलने स हिन्दी साहित्य को भी बहुत धक्का पहुचेगा। लेकिन, हमारे हिन्दी और हिन्दी भाषी लोगो की भले की कामना करत पर भी क्या यह न्याय सगत है कि एक भाषा या जनता का एक वग दूसरी भाषा व दूसरे वग की हानी से पनपे।

समाज के विकास मे शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है और एक कल्याणकारी राज्य के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह देशवासियो मे विद्या का प्रसार अधिकतम करे। और ऐसा तब ही हो सकता है जब कि बच्चे की मातभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया जाय। सी० डब्लू वाडलर (C W Waddler) ग्रे और परमने (Gray and Permen) जैसे विशिष्ट शिक्षा मनोवैज्ञानिको ने प्रयोगों के आधार पर यह साबित कर दिया है कि बच्चे की पाच वष की आयु मे जब वह स्कूल म प्रवेश करता है उसे अपनी मातभाषा के कम स कम २००० शब्दो का ज्ञान होता है। अत शिक्षा का माध्यम बच्चे की मातभाषा हो तो वह अपनी शिक्षा इन २००० शब्दो जिनके अथ वह समझता है, से प्रारम्भ करता है। परिप्रेक्ष्य मे, यदि मातृभाषा शिक्षा का माध्यम नही होती है तो इन २००० शब्दो का ज्ञान जिसे बालक न स्कूल प्रवेश से पूव ग्रहण कर लिया था वह उसके काम नहीं आता और उसे प्रारम्भ से शुरूआत करनी पडती है। दूसरे शब्दो में यद्यपि वह अपनी शिक्षा ५ वष की उम्र से प्रारम्भ करता है वास्तव मे उसकी दशा नव जात शिशु की सी होती है और इस प्रकार उसकी आयु के पाच वष निरथक हो जाते हैं।

इसके अतिरिक्त Fimeon Potter ने भी कहा है कि किसी भी नई भाषा को सीखने वाले पर उसकी मातृभाषा का असर रहता है और केवल अज्ञात ही उन भाषाओ का जो उसके बाद मे सीखी हों।

इसके प्रभाव से बचना मुश्किल है । अत जहा मातभाषा शिक्षा का माध्यम नही हैं, वहा विलक्षणता का शुरू मे ही अ त हो जाता है ।

इतना ही नही, असाधारण मनोविज्ञान के अध्ययन से यह सिद्ध किया जा चुका है कि बहुत से भय से सम्बन्ध रखने वाले जितने भी उन्माद व मानसिक दुरावस्था होती है और जिनसे व्यक्तित्व पर बहुत गहरा प्रभाव पडता है उन सब का मूल कारण बच्चे को मा से और मातृभाषा से पृथक रखना होता है । बच्चे की हालत वैसी ही हो जाती है जैसी कि लगडे आदमी की बिना बसाखी के सहारे से ।

अत पूर्ण विकसित मातृभाषा का महत्व केवल इसम ही नही है कि मनुष्य द्वारा उसका प्रयोग किया जा सके, बल्कि इसलिए भी है कि वह मनुष्य क बनाने मे सहायता करती है । और इसी तथ्य को स्वीकार करते हुए सद्धांतिक रूप स निश्चित किया गया था कि बालक को अपनी शिक्षा की प्रारम्भिक अवस्था मे उसे अपनी मातभाषा मे ही पढाया जाय और साथ ही अखिल भारतीय भाषाओ को प्रोत्साहन भी दिया जाय । इसलिए यदि हम यह चाहते है कि राजस्थानी भी अपने दूसरे प्रान्तीय भाइयो जसे पजाबी, गुजराती, महाराष्ट्रीय आदि की भाति प्रगतिशील हो तो यह आवश्यक है कि राजस्थानी भाषा को सवैधानिक मा यता दी जाय । यह जानकर आश्चय होगा कि कुछ लोकसेवी शिक्षा शास्त्रियो ने प्राथमिक कक्षाओ के पाठ्यक्रम के लिए कुछ राजस्थानी की पुस्तक तैयार की थी लेकिन उनके प्रयास भाषा की मान्यता के अभाव में बेकार गए ।

इसके अतिरिक्त, न केवल व्यक्तिक विकास अपितु समाज का सास्कृतिक विकास जिसका कि वह एक अ ग हैं बहुत कुछ मातृभाषा पर निभर है क्योकि व्यक्ति अपनी मातृभाषा म ही नई वैज्ञानिक खोजो को और मानव की प्रगति के लिए उनके उपयोगो को ज्यादा अच्छी तरह समझ सकता है और उनको अपने कार्य क्षेत्र म उपयोग मे ला सकता है । सरकार के विचारो के प्रसार के लिए भी यह बहुत लाभप्रद सिद्ध होगा कि वह क्षेत्रिय भाषा का उपयोग करे जिसके माध्यम से, दूसरी भाषाओ की अपेक्षा अधिक से अधिक लोगों तक सरकार के विचार पहुचाये सकते हैं । क्षेत्रिय भाषा के माध्यम से कृषि के उत्तम तरीको का प्रचार, कृत्रिम खाद का प्रयोग उत्तम किस्म के बीज का उपयोग, कृमिनाशक औषधि का उपयोग इत्यादि के प्रचार से हमारी खाद्य समस्या हल करने में भी सहायता मिलेगी । इसी प्रकार परिवार नियोजन की उपयोगिता के प्रसार अथवा और कोई भी

विषय के प्रसार में भी यह बहुत लाभकारी होगा। इस दृष्टिकोण से भी राजस्थानी राजस्थान के लोगो के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

तब प्रश्न यह है कि राजस्थानी की उपेक्षा क्यों की जा रही है। और उसे सवधानिक मान्यता क्यो नहीं दी जा रही है। जसा कि हम सब जानते हैं कि वतमान राजस्थान तीन खण्डो मे इस क्षेत्र की 'तत्कालीन भारतीय रियासतो' को मिलाकर राजनतिक दृष्टिकोण से बनाया गया था उस समय एक तरफ जहा हमारा प्रतिनिधित्व कमजोर था दूसरी तरफ कुछ विशेष तत्व काय कर रहे थे। आचाय नरोत्तमदास स्वामी के अनुसार श्री के एम मुशी क्षेत्रिय भाषाओ को मान्यता देने के समय अग्रणी नेताओ मे से थे और वे गुजरात और राजस्थान का सम्मिलित राज्य और गुजराती उसकी सवधानिक भाषा देखना चाहते थे। दूसरी ओर जैसा कि पहले कहा जा चुका है हिंदी के समथक यह बर्दाश्त नही कर सक रहे थे कि राजस्थानी का अपना कोई स्थान हो और इसलिये इस बात का पूरा प्रचार कर रहे थे कि राजस्थानी एक बोली है न कि भाषा।

जहा तक राजस्थानी भाषा का प्रश्न है मैं सवप्रथम एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका से उदाहरण देना चाहूगा—

राजस्थानी भाषा इन्डो-आयन उपभाषाओं का ग्रुप है जो कि एक ओर पश्चिमी हिंदी म मिल जाती है व दूसरी ओर गुजराती व सिंधी से और लगभग राजस्थान और उससे लगे हुये मध्य भारत के भाग म प्रचलित है।

राजस्थानी की कई उप भाषाये है जो कि चार भागो म विभक्त की जा सकती है-उत्तर-पूर्वी दक्षिण पश्चिमी और मध्यपूर्वी।

विशिष्ठ भाषाविद भी यह कहते है कि राजस्थानी एक भाषा है। मैं कुछ एक उदाहरण रखू गा—

डा० एल० पी० तेसित्तोरी-एक विशिष्ठ इटालियन विद्वान जिन्होने ऐशियेटिक सोसाइटी आफ बगाल के अन्तरगत महत्वपूण शोध काय किया था, ने कहा है कि भारत में शौरसेनी अपभ्रंश के पश्चात उस भाषा ने जन्म लिया जिसे मैंने पश्चिमी राजस्थानी और प्राचीन गुजराती का नाम दिया है। यह समस्त गुजरात व पश्चिमी राजपुताना मे प्रचलित थी और १६ वीं शताब्दी के अन्त तक रही जबकि उससे दो विभिन्न भाषाओं, आधुनिक गुजराती और

आधुनिक मारवाडी का विकास हुआ। डा० तेसत्तोरी ने अपनी प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी, विशेषकर अपभ्रंश गुजराती और मारवाडी की व्याकरण के प्रस्तावना में कहा है कि जिस भाषा को मैंने प्राचीन राजस्थानी नाम दिया है और इन पष्ठो मे जिसका विवरण देने जा रहा हू वह शौरसेन अपभ्रंश की पहली सन्तान है और साथ ही उन आधुनिक बोलियो की मा है जिसे गुजराती तथा मारवाड़ी के नाम स जाना जाता है।'

"तथ्य यह है कि जिस भाषा को मैं प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी के नाम स पुकारता हूँ उसम व सभी तत्व हैं, जो गुजराती के साथ साथ मारवाडी के उदभव के सूचक है और इस तरह वह भाषा स्पष्टत इन दोनो की सम्मिलित मा है।"

अबुलफजल-ए-अलामी लिखते हैं कि —

विशाल हिन्दुस्तान मे बहुत सी उप भाषायें बोली जाती है और उनमे म बहुत सी ऐसी है जिनमे असमानताए होने पर भी व आपस मे एक समझी जा सकती हैं। लेकिन ऐसी भाषायें जो आपस मे एक नही है, वे दिल्ली, बगाल, मुल्तान मारवाड़, गुजरात, तेलगाना, मराठा, करनाटक, सिध शाल के अफगान (सिध काबुल और कधार के बीच मे), बलूचिस्तान और काश्मीर की भाषायें है।

डा० ग्रियसन राजस्थानी के बारे म लिखते है —

यह राजस्थानी भाषा राजपूताना मध्यभारत क पश्चिमी हिस्से और मध्यप्रात क लगते हुए भागो मे, सिध और पजाब मे बोली जाती है। पूरब की तरफ ग्वालियर राज्य मे यह भाषा पश्चिमी हिन्दी बगाली उप भाषा मे बदल जाती है। इसके उत्तर की तरफ यह करोली और भरतपुर राज्यो तथा गुडगाव के अग्रेजी जिले म ब्रज भाषा मे मिल जाती है। और पश्चिम की ओर यह भाषा भारतीय मरूभूमि की मिलीजुली भाषाओ के कारण पजाबी लहदा और सिन्धी भाषा का रूप धारण कर लेती है और पालनपुर राज्य म गुजराती हो जाती है। दक्षिण मे यह भाषा मराठी के सपक मे आती है, पर बाहरी भाषा होन के कारण उसमें नही मिलती।"

स्कूल आफ ओरियन्टल एन्ड अफिकन स्टडीज युनिवर्सिटी आफ लन्दन मे डा० डबल्यु० एस० एलन ने एक बार राजस्थानी साहित्य सभा जोधपुर क श्री उदयराज उज्ज्वल को लिखा था कि आप एक भाषा (राजस्थानी) की बडी

सेवा कर रहे है अन्यथा उसके आधुनिक स्तरीकरण की बाढ मे बह जाने की सभावना थी।

डा० सुनीति कुमार चटर्जी, श्री चन्द्रसिंह बीका द्वारा रचित कविता बादली की आलोचना करते हुए लिखते हैं —

"कवि चन्द्रसिंह ने इन कविताओ म नई सष्टि की है, जिसमे भाषा के साथ साथ भाषा का वैशिष्टय भी लक्षणीय है। करीब डेढ करोड राजस्थानियो की साहित्यिक भाषा डिंगल ने इनकी कविताओं मे नवीन रूप से आत्म प्रकाश पाया है।"

डा० बेकमफील्ड एक प्रसिद्ध अमेरिकन विद्वान् ने भी अपनी पुस्तक Language' मे 'राजस्थानी' को ससार की प्रधान भाषाओ मे से एक भाषा स्वीकार किया है, और भाषा-भाषियो की सख्या के हिसाब से (तब १ ३० ००००० और अब राजस्थान में २ करोड १४ लाख व राजस्थान के बाहर एक करोड) ससार की भाषाओ मे २५ वा स्थान दिया है।

डा० बाबूराम सक्सेना न राजस्थानी भाषा को भारतीय आय शाखा की भाषाओ मे से एक माना है और यही राय डा० भोलानाथ तिवारी की है। डा० तिवारी लिखते है शोरसेनी के नागर अपभ्रश के पूर्वोत्तरी रूप से इसका (राजस्थानी) विकास हुआ है।'

स्वर्गीय सर आशुतोष मुकर्जी के राजस्थानी के सम्बन्ध मे ये विचार थे लेकिन भाट लोगो की (राजस्थानी) कविताए भी साहित्य की दृष्टि से महत्त्वपूरण है। *उनका साहित्यिक मूल्य है और सम्मिलित रूप मे एक ऐसा साहित्य बनाती* है जो अच्छी तरह प्रकाश मे आने पर नई भारतीय भाषाओ के साहित्य मे बहुत श्रेष्ठ स्थान ग्रहण करेगा।

शिक्षा आयोग ने भी अपने ज्ञापन में यह स्वीकार किया है कि वस्तुत भाषा शास्त्र की दृष्टि से विचार किया जाये तो राजस्थानी कोसली या अवधी, भोजपुरी या मैथिली आदि बोलिया नही, भाषायें हैं।"

इसके अलावा राजस्थानी भाषा म वे सब तत्त्व मौजूद है जो भाषा का सृजन करते हैं जसे व्याकरण, साहित्य और कोश। डा० ग्रियसन पहले लेखक थे, जिन्होने राजस्थानी के व्याकरण की रचना की। उनके बाद डा० तसित्तोरी ने पुरानी राजस्थानी' नाम से ग्रथ लिखा। व्याकरण की महत्त्वपूरण रचनाओं

मे से कुछ हैं–श्री रामकरण आसोपा की "मारवाडी व्याकरण," श्री सीताराम लालस की, "राजस्थानी व्याकरण," श्री नरोत्तमदास स्वामी की" सक्षिप्त राजस्थानी व्याकरण," डा० के० लाल की ' राजस्थानी बोलियो का व्याकरण" ।

राजस्थानी भाषा मे गद्य और पद्य दोनो ही प्रकार का बहुत उच्चकोटि का साहित्य वर्त्तमान है । प० मदनमोहन मालवीय ने कहा है–"राजस्थानी वीरो की भाषा है । राजस्थानी साहित्य वीरो का साहित्य है । ससार के साहित्य मे इसका निराला स्थान है । वतमान काल के भारतीय नवयुवको के लिए इसका अध्ययन होना अनिवाय होना चाहिये । इस प्राण भरे साहित्य और उसकी भाषा के उद्धार का काय होना अत्य त आवश्यक है । मैं उस दिन की उत्सुक प्रतीक्षा मे हूँ जब हि दु विश्वविद्यालय म राजस्थानी का सर्वांगपूर्ण विभाग स्थापित हो जायगा ।"

राजस्थानी साहित्य की उत्तमता को रवी द्रनाथ टगोर न भी स्वीकार किया है । उन्होंने कहा है —

"भक्तिरस का काव्य तो भारतवष के प्रत्येक साहित्य मे किसी न किसी कोटि का पाया जाता है परन्तु राजस्थान न अपने रक्त से जो साहित्य निर्माण किया है उसकी जोड का साहित्य और कही नही पाया जाता । राजस्थानी भाषा के साहित्य मे जो एक भाव है सारे भारतवष के लिए गौरव की वस्तु है ।"

एक दूसरे स्थान पर वे लिखते है —

'राजस्थानी भाषा के प्रत्येक दोहे मे जो वीरत्व की भावना और उमग है वह राजस्थान की मौलिक निधि है और समस्त भारतवष के गौरव का विषय है ।"

एक मौके का उल्लेख करते हुए, जब उनको मित्रो द्वारा पाठ किये गये राजस्थानी वीररस पूर्ण गीतो को सुनन का अवसर मिला, उ होन कहा था —

"वे गीत ससार के किसी भी साहित्य और भाषा का गौरव बढा सकते हैं। ' बीकानेर के राठौड पृथ्वीराज द्वारा रचित "कृष्ण रुक्मिणी री बेली" की समालोचना करते हुए डा० तेसित्तोरी ने लिखा है —

बीकानेर के राठौड पृथ्वीराज द्वारा रचित कृष्णरुक्मिणी री वेलो

राजस्थानी साहित्य के अमूल्य भडार मे अत्यन्त प्रकाशमान रत्नों मे स एक है।

डा० ग्रियसन क साक्ष्य के अनुसार राजस्थानी भाषा मे अनेक विभिन्न रूपो म ऐतिहासिक महत्त्व की बहुत ज्यादा साहित्यिक सामग्री है।

मुझे विश्वास है कि उपयुक्त दी गई विद्वानों की सम्मतियों स राजस्थानी भाषा के समृद्ध होने के विषय मे किसी का कोई भ्रम नही रहगा। राजस्थानी भाषा का साहित्य सभी विधाओ म प्राप्य है, जैसे कि —

(१) भाट सम्बन्धी
(२) लोकवार्ता
(३) एतिहासिक स्यातें और बातें
(४) धार्मिक
(५) नाटक–स्यातें और रम्मत
(६) उपन्यास
(७) जीवन चरित्र
(८) कहानिया
(९) कविताए
(१०) अनुवाद

बीकानर स्थित प्रसिद्ध अनूप सस्कृत लाइब्रेरी म इनकी हजारो पाडुलिपिया है और इसके अलावा लागो के पास अज्ञात रूप से पडे हुए साहित्य को छोडकर भी सारे राजस्थान में जैन ग्रथालयो तथा उपासरो मे बहुत ज्यादा साहित्य मौजूद है। ये उन सकडो ग्रथो के अलावा है, जा प्रकाशित हो चुके हैं।

इस सम्ब ध मे एक महत्त्वपूण तथा ध्यान देने की बात यह है कि इस राजस्थान साहित्य का समय १४ वी शताब्दी से कुछ थोडे पूव से लेकर आज तक है। इन पाच या छ शताब्दियो मे हमे इधर उधर बिखरे हुए लाखो छद गीत तथा इतिहास सम्ब धी रचनायें प्राप्त होती है। लेकिन श्री राहुल सांकृत्यायन को कुछ ऐसी फुटकर रचनायें प्राप्त हुई थी, जो ७वी या ६वी शताब्दी की थी और बीसलदेरासो' ११वी शताब्दी का है।

राजस्थानी भाषा का अपना विशाल शब्द भडार तथा कोश है। आधुनिक तमकोश श्री सीताराम लालस तथा श्री उदयराज उज्ज्वल द्वारा रचित चार खडो म है, जिन मे से दो प्रकाशित हो चुके हैं और उनमे दो लाख शब्द हैं।

इस प्रकार स यह स्पष्ट है कि राजस्थानी मे व सब तत्त्व मौजूद है जो ए
भाषा के लिए आवश्यक होते हैं और यह किसी प्रकार नही कहा जा सकता कि
राजस्थानी एक बोली है, भाषा नही। इस पर भी मैं अपने मन्तव्य की पुष्टि
राजस्थानी भाषा का वश वृक्ष देता हू जो डा० मोती लाल मनारिया सरी
महान विद्वानो द्वारा मान्य किया गया है।
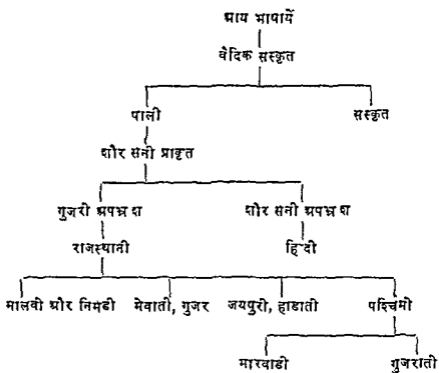
राजस्थानी की उत्पत्ति गुजरी अपभ्रश से हुई है, इसका समर्थ
रिचार्ड पिशल, डा नामवरसिंह, डा उदयनारायण तिवारी और डा वी दोवाटि
जैसे विद्वानो न भी किया है।

इसलिय राजस्थानी एक भाषा है, इस तथ्य को किसी भी प्रकार अस्वीक
नही किया जा सकता। वास्तविक तथ्य यह है कि राजस्थानी भाषा हिन्दी औ
गुजराती दोना स प्राचीन है और गुजराती तो १६वी शताब्दी मे राजस्थानी
निकलने वाली एक शाखा मात्र है।

अत जबकि बगाली, पजाबी, मराठी, गुजराती, सिंधी इत्यादि प्रांती
भाषायें सविधान के आठवें परिशिष्ट म पहले ही स्वीकृत हो चुकी हैं

राजस्थानी भाषा को सविधान क ग्राठवें परिशिष्ट मे शामिल न करके मान्यता न दिया जाना न्याय सगत नहीं।

यह सचमुच बडे दुर्भाग्य की बात है कि राजस्थानी भाषा को मा यता देने की राजस्थानी लोगो की सन् १६५२ स लगातार की गई माग ग्राज तक पूरी नही की गई है। इसलिए मैं सरकार से निवेदन करूँगा कि वह भारत की ग्राबादी के दो करोड से ग्रधिक लोगो की माग यानि राजस्थानी भाषा को सविधान के ग्राठवें परिशिष्ट मे ग्रधिकृत भाषा स्वीकार कर, उनके उन्नति के माग को प्रशस्त करे व उनकी कृतज्ञता हासिल करें। मैं राजस्थानी भाषा के सिवाय दूसरी भाषायें बोलने वाले ग्रपने नागरिक भाइयो से भी इस न्यायोचित माग का पूरा पूरा समथन करने की ग्रपील करूगा।

ट्रस्ट

बीकानेर का राजघराना ग्रपनी उदारता, दानशीलता तथा प्रजाहित के लिए सदियो से विख्यात रहा है। डा० करणीसिंहजी भी ग्रपन पूवजों के कदमों पर चल रहे हैं ग्रौर जन–कल्याण की दृष्टि से उन्होने कई ट्रस्ट स्थापित किय हैं। उनमे मुख्य निम्नलिखित है —

(१) करणी चैरिटेबल ट्रस्ट (Karni charitable trust) इस ट्रस्ट की स्थापना १२ ५ ५८ को की गयी थी। डा० करणीसिंहजी ने इसके लिए १५,०००/- रुपये की धनराशि प्रदान की। इसके उद्देश्य निम्नलिखित है —

१ स्कूल ग्रौर कालेज म पढने वाले छात्र–छात्राग्रो को छात्रवृत्ति देना
२ धार्मिक स्थानो शिक्षण सस्थाग्रो ग्रौर सावजनिक महत्त्व क भवनो की मरम्मत के लिए दान देना
३ किसी प्राकृतिक प्रकोप के समय सहायता देना
४ विधवाग्रों, ग्रपाहिजो एव ग्रनाथो की सहायता करना
५ ग्रस्पतालो, ग्रौषधालयो ग्रादि को मासिक या वार्षिक सहायता देना ग्रथवा दान देना
६ खेल कूद की सस्थाग्रो को सहायता देना
७ धार्मिक एव राष्ट्रीय त्यौहारो के ग्रवसर पर मला का ग्रायोजन करना

८ बीमारो एव बीमार पशुओ के लिए सहायता देना
९ कुओ, तालाबो, कुड, बावडियो आदि के खोदने और ठीक रखने के लिए सहायता देना

यहाँ पर उल्लेख करना अनुचित न होगा कि डा० करणीसिह जी व महारानी साहिबा सुशीला कुमारी जी के विवाह की रजत जयन्ती के शुभ अवसर पर आपने बीकानेर के प्रिंस विजयसिहजी मेमोरियल अस्पताल मे एक पोस्ट आपरेटिव व रिकवरी वाड के निर्माणाथ ५०,०००/- रुपये दिये। यह बात स्मरणीय है कि इससे एक वप पूव महारानी साहिबा सुशीला कुमारीजी ने आठ कमरो का एक वाड बनवाकर अस्पताल को प्रदान किया था। इसके अलावा आपने अस्पताल म चल रहे रक्त बैंक के लिए भी एक हजार रुपये की धनराशि प्रदान की।

डा० करणीसिहजी ने लोक सभा के लिए प्रथम बार चुने जाने के समय ही यह घोषणा कर दी थी कि वे ससद से मिलने वाला अपना समस्त तनख्वाह व भत्ता निधन एव प्रतिभाशाली छात्र-छात्राओ को छात्रवृत्ति के रूप मे देंगे। अब तक उन्होंने छात्रवत्ति के रूप म इस तनख्वाह व भत्ते के निम्न प्रकार से रुपये दिये हैं –

सन् १९५२ ५३	३, ९३३
, ५३ ५४	३ ४७९
, ५४ ५५	४, ६५१
५५ ५६	६, ७९८
५६ ५७	५, ६४४
, ५७ ५८	१, ५३५
,, ५८ ५९	५ ३८८
५९-६०	५, ९३६
६० ६१	६, ४२५
,, ६१ ६२	५, ०२३
' ६२-६३	५, २६७
६३ ६४	५ ९२५
६४ ६५	१८, ७८२
६५-६६	१८ ३४१
६६ ६७	१४, ४७०
, ६७ ६८	१०, ४३३

" ६८ ६६ १०, २४६

" ६६ ७० ६, ६५८

महाराजा श्री रायसिंहजी ट्रस्ट (Maharaja Sri Raysinghji trust)

इस ट्रस्ट की स्थापना १६-१०-६१ को की गयी। यह टस्ट राजमाता श्री सुदर्शना कुमारीजी की राय से बनाया गया था। इसके उददेश्य निम्नलिखित है —

१ शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति देना
२ शिक्षा के विकास और राष्ट्रीय एव ऐतिहासिक महत्त्व की वस्तुओं के सरक्षण हेतु कला एव पुरालेख की वस्तुओ का सग्रह
३ शोध-काय करना और शोध-सस्थाओ को सहायता देना
४ शिक्षा देना
५ शारीरिक शिक्षा प्रशिक्षण क लिए सुविधाएँ व सहायता देना
६ खेलो का आयोजन करना
७ नाटय, नृत्य तथा अन्य सांस्कृतिक प्रवत्तियो की समितियाँ बनाना या उन्हें सहायता देना
८ राष्ट्रीय स्वास्थ्य बढाने वाली और शारीरिक शिक्षा का प्रशिक्षण देने वाली सस्था को सहायता देना
६ पुस्तकालयो की स्थापना और सहायता देना
१० प्राचीन और महत्त्वपूण वस्तुओ का सरक्षण और सग्रहालयो की स्थापना करना (म्यूजियम का स्थापित करना विख्यात हो चुका है)

डा० करणीसिंह जी ने आरम्भ मे ५,०००/- पाँच हजार रुपये तथा विभिन्न प्रकार की सामग्री इस ट्रस्ट को प्रदान की।

(३) महारानी श्री सुशीला कुमा — एड ट्रस्ट Maharani Sri Sushila Ku ous le trust)

इस ट्रस्ट २७-८-७०
श्री गगासिंह जी
पलेस के धार्मिक
इस ट्रस्ट के उद्देश

१ इस ट्रस्ट को दी गयी सूची के धार्मिक स्थानो, मंदिरो की सेवा पूजा और भेंट का प्रबन्ध करना
२ धार्मिक स्थानो की देख भाल
३ मन्दिरो और दूसरे धार्मिक स्थानो का निर्माण, मरम्मत एव विस्तार
४ मन्दिरो के पुजारियो, चौकीदारो आदि को वेतन देना
५ मन्दिरो की मूर्तियो के आरोगण पूजन, पोशाक आदि का प्रबन्ध करना
६ मंदिरो के लिए बरतन, नगारे व अन्य सामान खरीदना
७ नवरात्रि, गणगौर, राम–नवमी, जन्माष्टमी, बडी तीज, दशहरा, दीपावली होली, आदि त्यौहारो के मनाने की आयोजना करना
८ झील, कुएँ, तालाब आदि बनवाना
९ छात्रों को छात्रवृत्ति देना व छात्रावासो का निर्माण, मरम्मत आदि

यह ट्रस्ट हर एक धर्म के पवित्र स्थान मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर आदि को सहायता देता है।

(४) महाराजा श्री सादुलसिंह जी पब्लिक चरिटेबल ट्रस्ट (Maharaja Sri Sadul Singhji Public charitable trust)

इस ट्रस्ट की स्थापना ५-११ ७० को की गयी । इसके अन्तगत बीकानेर जिले की कोलायत तहसील के बहुधा अकाल पीडित क्षेत्र मे गायें और दूसरे पशु चराने के लिए चारागाह का प्रबन्ध जरूरी माना गया है। डा० करणीसिंह जी ने इसके लिए ६३६ बीघा जमीन अपनी निजी गजनेर स्टेट मे से प्रदान की है । ट्रस्ट का उद्देश्य पशुओ के चरन के लिए चारागाह भूमि का प्रबन्ध करना है। यह ट्रस्ट डा० करणीसिंह जी ने अपने श्रद्धेय स्वर्गीय पिताजी की स्मृति मे कायम किया है ।

(५) करणीसिंह फाउन्डेशन ट्रस्ट (Karnisingh Foundation trust)

इस ट्रस्ट की स्थापना १४-१ ७१ को की गयी। इसका उददेश्य भूतपूर्व बीकानेर रियासत के निम्नलिखित श्रेणी के लोगो की सहायता करना है —

१ गरीब व जरूरतमन्द छात्रो की सहायता करना
२ पढे लिखे जरूरतमन्द बेरोजगारो की सहायता करना
३ जरूरतमद व गरीब महिलाओ की सहायता करना
४ गरीब विधवाओं की सहायता करना
५ ऐसे गरीब प्रतिभावान छात्रो की सहायता करना जो कि बिना मदद के उच्च स्तरीय व तकनीकी शिक्षा प्राप्त नही कर सकते

६ अपाहिजो की सहायता करना
७ गरीब खिलाडियो की सहायता करना

डा० करणीसिहजी ने इस ट्रस्ट हेतु ५,००,००० पाच लाख रुपये प्रदान किये। प्रिवीपस बन्द होने के बाद सुप्रीम कोट मे इस सम्बन्ध में केस जीतने पर जो रुकी हुई रकम प्रिवीपस की मिली, उसे देकर यह ट्रस्ट बनाया गया। डा० करणीसिहजी समझते हैं कि प्रिवीपर्स बन्द होने के बाद बीकानेर के राजघराने की चैरिटी करने की क्षमता कम हो गयी। उनके दिल मे यह भी इच्छा है कि येन केन प्रकारेण प्रिवीपस बन्द होने बावजूद भी बीकानर डिवीजन के गरीब नागरिको को को उनके घराने से मदद मिलती रहे। इस हेतु ट्रस्ट स्थापित करना एक बहुत उत्तम रास्ता है।

अचूक निशानेबाज

अस्त्र शस्त्र सचालन बीकानेर महाराजा डा करणीसिंह जी के वश मे सदियो से होता आया है। विज्ञान के विकास के साथ जब नये हथियारो का निर्माण हुआ तो बीकानर का राजघराना उनके कुशल उपयोग म पीछे न रहा। स्व० महाराजा गगासिह जी व स्व० महाराजा सादुलसिह जी विश्व-विख्यात निशाने बाज थे और दोनों ने इसका परिचय सैकडों शेरो बाघो, चीतो आदि के शिकार मे दिया। डा० करणीसिह जी ने यद्यपि किशोरावस्था मे शिकार मे राइफल का निशाना साधा पर उत्तरोत्तर उनका यह शौक टारगेट शूटिंग की तरफ बनता गया।

सन् १९५२ से लेकर सन् १९६० तक उन्होंने राइफल शूटिंग मे अधिक ध्यान दिया। उस समय क्लेपीजन शूटिंग मे, जिसमे १२ बोर बन्दूक का प्रयोग होता है, वे कोई विशेष सफलता नही पा सके। सन् १९५९ मे जब वे अमेरिका गये तो उन्हें अमेरिका के प्रसिद्ध कैम्प फायर राइफल क्लब मे जाने का मौका मिला। वहाँ उनकी मुलाकात मिस्टर वारेन पेज से हुई। वारेन पेज ने उन्हें अपनी ट्रेपगन चलाने का मौका दिया। डा० करणीसिह जी इस दिन को क्लेपीजन शूटिंग का अपना प्रथम चरण मानते हैं। उन्होने वारेन पेज जसी ट्रेपगन खरीदी। भारत में यह पहली ट्रेपगन थी। इसी समय के बाद क्लेपीजन स्पोट उत्तरोत्तर बढता गया। यद्यपि आठ साल मे डा० करणीसिंह जी २५ म से १४ से ज्यादा सही निशाने नही लगा सके, लेकिन इस बन्दूक के साथ और महीनो की साधना के बाद उन्होंने क्लेपीजन स्पोट को समझने की कोशिश की। उन्होने बीकानेर मे

क्लेपीजन रेंज की बुनियाद लगायी । जनवरी सन् १९६० मे उ होने पहली बार इस ब दूक के साथ क्लेपीजन नेशनल चैम्पियनशिप मे भाग लिया और ४३/५० स्कोर से चैम्पियनशिप को जीता एव नया नेशनल रिकाड स्थापित किया । कुछ ही दिन बाद रोम ओलम्पिक के सलेक्शन ट्रायल्स मे उ होने क्लेपीजन मे पहली बार भाग लिया तथा ९३/१०० का स्कोर लिया जो, कि भारत का नेशनल रिकाड बना । इस स्कोर के कारण वे रोम ओलम्पिक की टीम मे भारत का प्रतिनिधित्व करने हेतु चुने गये । रोम मे उ होने ससार मे आठवा स्थान लिया । इसके बाद तत्कालीन वित्त मत्री एव बाद मे प्रधानमत्री श्री मोरारजी देसाई ने उ हें खुला प्रोत्साहन दिया । आज बीकानेर मे जो इ टरनेशनल ट्रैप रेंज है, वह उ ही के आशीर्वाद से मिल सकी । सन् १९६० से लेकर सन् १९७९ तक डा करणीसिंहजी निर तर ओलम्पिक ट्रेप्स मे नशनल चैम्पियन रहे हैं । उनके स्कोर का विवरण इस प्रकार है —

Trap Shooting Scores of Maharaja Dr Karni Singhji

VI	NSCC	1959	Guru Govind Singh Cup	43/50
VII	NSCC November	1960	Guru Govind Singh Cup	94/100
VIII	NSCC November	1961	Prime Minister Trophy	198/200
IX	NSCC April	1963	, , ,,	99/100
X	NSCC February	1964	(Calcutta) ,,	186/200
XI	NSCC March	1965	(Bhubeneshwar/Trap Championship at Bikaner August 1965	194/200
XII	NSCC February	1966	Delhi/Trap Championship at Delhi May 66 shot concurrently with selection trials for Wicsbanden	195/200
XIII	NSCC January	1968	(Madras)/Trap Champ- ionship at Delhi Feb 1968	184/200
XIV	NSCC February	1969	Bhopal	194/200
XV	NSCC April	1970	Delhi	192/200
XVI	NSCC Ahmeda bad	1971	Trap and Skeet at Delhi, Prize taken by Princess Madhulika Kumarji on behalf of her father	191/200
XVII	NSCC Delhi April	1972		181/200
XVIII	NSCC	1973	Lucknow	190/200
XIX	NSCC Ahmeda bad	1974	Trap & Skeet at Delhi March 1974	190/200
XX	NSCC Chandi- garh	1975		191/200
XXI	NSCC Madras February	1676	/Trap & Skeet at Bikaner January 1976	192/200
XXII	NSCC Delhi	1979	(March 79)	177/200

सन् १६६० मे राष्ट्रीय चैम्पियन बनने के बाद डा० करणीसिंह जी ने अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं मे भाग लेना आरम्भ किया। इसका पूर्व विवरण तो 'विदेशयात्रा' शीर्षक के अन्तगत दिया जा चुका है। सन् १६६० म उन्होंने रोम ओलम्पिक में निशानेबाजी प्रतियोगिता मे भाग लिया। सन् १६६१ म ओसलो तथा सन् १६६२ म काहिरा मे विश्व निशानेबाजी म सम्मिलित हुए। शूटिंग की दृष्टि से सन् १६६२ की काहिरा यात्रा को डा करणीसिंहजी महत्त्वपूर्ण मानते हैं। यहाँ आपका प्रदशन काफी अच्छा रहा। सन् १६६३ मे टोकियो म प्रि-ओलम्पिक म डा करणीसिंह जी भारतीय टीम के कप्तान बा कर गये। सन् १६६६ में स्पेन के सैन सैबेस्टियन नामक कस्बे मे विश्व निशानेबाजी प्रतियोगिता म भी भारतीय टीम के कप्तान वे ही थे। सन् १६७१ म दक्षिणी कोरिया की राजधानी सियोल में एशिया की द्वितीय निशानेबाजी प्रतियोगिता मे डा० करणीसिंह जी ने क्लेपीजन मे अपनी अचूक निशानेबाजी के बल पर स्वण पदक प्राप्त किया और भारत का गौरव बढाया।

डा० करणीसिंह जी ने भारतीय प्रतिनिधि के रूप मे निशानबाजी की विश्व की अनेक प्रतियोगिताओ मे भाग लिया है। सन् १६६६ मे जब आप विश्व शूटिंग चम्पियनशिप मे भाग लेने स्पेन गये तो वहाँ से आपने दिनाक २७ १० ६६ को भारत की तत्कालीन प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को एक पत्र लिखकर भारतीय निशानेबाजी के स्तर को और ऊँचा उठाने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किये —

१ भारत की महिला प्रतियोगियो की ओर अधिक ध्यान दिया जाय क्योंकि विश्व निशानेबाजी प्रतियोगिताओ मे महिला प्रतिद्वन्दी अधिक नहीं होती। [यहाँ यह उल्लेखनीय है कि बडा बाई साहिब राज्य श्रीकुमारी जी मे स्पेन के सैन सैबेस्टियन मे हुई विश्व निशानेबाजी प्रतियोगिताओं मे महिलाओ मे आठवाँ स्थान प्राप्त किया, जबकि आपकी आयु केवल १६ वष थी। यह वास्तव मे एक गौरव की बात है]

२ निशानेबाजी की टीम का प्रशिक्षण राज्य द्वारा किया जाता चाहिए। सर्वोच्च खिलाडियो के लिए बन्दूकें व कारतूस सवथा नि शुल्क होने चाहिए। इस प्रतियोगिता के लिए हमे नई प्रतिभा की तलाश मे रहना चाहिए।

३ हमे प्रशिक्षण-विशेषत युवको की टीम के सख्त जरूरत है।

रूसियों व रोमानियनों ने भारत आकर प्रशिक्षण देना स्वीकार किया इस पर व्यय होने वाली धन-राशि का भारतीय मुद्रा मे भुगतान कि जा सकता है। भारतीय निशाने बाजो को यह सूचना दी जाये।

४ प्रतियोगिताओ मे भाग लेने वाली टीम का निर्णय चार मास पहले जाना चाहिए। कई बार यह निर्णय केवल एक सप्ताह पूर्व लिया जाता है
५ आप स्वयं खेल-मन्त्रालय को सँभालें और अपनी सहायता के लिए एक मन्त्री को रखें, जो स्वयं खिलाडी हो। प्रतियोगियो का चयन एक च समिति करे, जिसके सदस्य संसद के ऐसे सदस्य हो जो स्वयं खिलाडी हो। सरकार द्वारा उच्चतम निशानेबाजो को निःशुल्क कारतूस दिये जा
६ देश मे ऐसे कारखाने-अगर आवश्यक हो तो सरकारी क्षेत्र म-स्थापि किये जाय, जो कि उच्चकोटि का शूटिंग (निशानेबाजी) का साम तयार कर सकें।
७ विभिन्न स्थानो पर रेंज स्थापित किये जाय, जो खेल मन्त्रालय (जिस सुझाव दिया गया है) द्वारा या वर्तमान शिक्षा-मन्त्रालय द्वारा संचालि होने चाहिए। इन रेंजो का संचालन सेना द्वारा भी संभव है, जसा मि और अमेरिका मे होता है।

इस पत्र के अन्त मे डा० करणीसिंहजी ने लिखा -

"मेरी केवल एक ही कामना है-अखिल विश्व प्रतियोगिताओ मे तिरंगे विजय पताका रूप मे फहराते हुए देखने की।"

भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने दिनांक ६ ११ ६ को उपर्युक्त पत्र का उत्तर इस प्रकार दिया -

"आपका दिनांक २७ अक्टूबर १९६९ का पत्र प्राप्त हुआ। आप को अं टीम के अन्य सदस्यो को शानदार प्रदर्शन के लिए मेरी बधाई। मैं मानती हू होनहार निशानबाजो को जहाँ तक हो सके ऐसी सुविधाएँ दी जानी चाहिए आपके प्रस्तावो के ऊपर विचार करने के पश्चात आपको फिर लिखूंगी।"

अर्जुन अवार्ड (पुरस्कार) सन् १९६१ से प्रारम्भ हुए थे। उस वर्ष जि २१व्यक्तियो को ये पुरस्कार मिले, उनमे विश्व विख्यात निशानेबाज डा० करण सिंहजी भी थे। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि डा० करणीसिंहजी की बडी पु राजकुमारी राज्यश्री कुमारी को भी श्रेष्ठ निशानबाजी के लिए सन् १९६

के लिए अर्जुन अवार्ड मिला। यह एक रिकार्ड है कि पिता और पुत्री दोनों ने ही शूटिंग में यह पुरस्कार प्राप्त किया है। यों तो बड़ा बाई साहिब राज्य कुमारी भारत में विभिन्न स्थानों पर सम्पन्न राष्ट्रीय निशानेबाजी प्रतियोगिता में भाग ले चुकी हैं पर वे अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी अपनी निशाने बाजी का कमाल दिखा चुकी हैं। सन् १९६७ में जापान में आयोजित प्रथम एशियन निशाने बाजी प्रतियोगिता में उन्होंने भाग लिया और सन् १९६९ में स्पेन के सैन सैबेस्टिन स्थान पर सम्पन्न विश्व निशानेबाजी प्रतियोगिता में उन्होंने १६ वर्ष की छोटी आयु में महिलाओं में आठवां स्थान प्राप्त किया। दक्षिण कोरिया की राजधानी सियोल में भी इनका प्रदर्शन शानदार रहा।

अर्जुन पुरस्कार प्रदान करते समय भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी० वी० गिरि ने विशेष रूप से राजकुमारी राज्यश्री कुमारी को बधाई देते हुए कहा –"आपको आपके माता पिता को बधाई। आपने जो सफलता प्राप्त की है, उससे देश के युवक व युवतियों को प्रेरणा मिलेगी।" यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि अर्जुन पुरस्कार प्राप्त करने वालों में राज्यश्री कुमारी सबसे छोटी उम्र की थीं।

यद्यपि डा० करणीसिंहजी ने १४ अन्तर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में भाग लिया, पर ५ ऐसी बड़ी प्रतियोगिताओं में चयन होने के बावजूद भी उन्होंने अपना नाम वापस ले लिया। ये ५ बड़ी प्रतियोगिताएँ निम्नलिखित थी –

(१) सन् १९६५ में सैंटियागो, चिली में आयोजित विश्व शूटिंग चैम्पियनशिप में भारत की ओर से एक मात्र डा० करणीसिंहजी का चयन किया गया, पर भारत पाक युद्ध के कारण वे नहीं गए।
(२) सन् १९७१ में राष्ट्र मण्डलीय प्रतियोगिताओं में भारत की ओर से केवल उन्हीं का चयन किया गया, पर वे एक आदमी की टीम बन कर नहीं जाना चाहते थे, अतः वे नहीं गये।
(३) सन् १९७६ में मॉन्ट्रियल में आयोजित ओलम्पिक खेलों में भाग लेने हेतु डा० करणीसिंहजी का चयन किया गया।
(४) सन् १९७८ में एडमोंटन में होने वाले राष्ट्रमंडलीय खेलों में उनका चयन किया गया।
(५) सन् १९७८ में बैंकाक में आयोजित [illegible] खेलों में भा[illegible] चयन किया गया। अतः [illegible] का [illegible]

डा करणीसिंहजी का चयन होने के बावजूद भी वे इसलिए हट गये क्योंकि वे चाहते थे कि युवा निशानेबाजो को मौका दिया जाय ।

यह बात बहुत कम लोगो को मालूम है कि बीकानेर मे क्लेपीजन शूटिंग की सब मशीनें व व्यवस्था नियमानुसार है। हमारे देश मे निशानेबाजी के अधिक उन्नति न करने का कारण यह है कि न तो प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था है है और न प्रतियोगिता मे काम आने वाले कारतूसो का यहाँ निर्माण किया जाता है। आयात पर प्रतिबन्ध है। सरकारी प्रोत्साहन भी नही है। जीतने पर दो दिन तालियाँ बजती हैं। फिर कोई नही पूछता। साधारण काम के लिए भी निशानेबाज को जयपुर व दिल्ली के कई चक्कर लगाने पडते है। फिर भी काम नही होता।

डा० करणीसिंहजी का कहना है कि निशानेबाजी एक मँहगी प्रतियोगिता है। १० १५ वर्षों के अभ्यास के बाद ही इसमे सफलता मिल सकती है। क्लेपीजन शूटिंग एक टैक्नीकल विषय है । क्लेपीजन व राइफल शूटिंग को अलग किया जाना चाहिए। जैसा साम्यवादी देशो ने किया यहाँ भी क्रीडा परिषद् खत्म किया जाये और एक प्रथम श्रेणी के खिलाडी को खेल मत्री बनाकर तथा खेलों से राजनीति को हटाकर इनमे सुधार किया जा सकता है। तब क्रीडा-जगत् मे भारत का भी नाम गौरव-पूर्ण बन जायेगा।

सन् १९७४ मे तेहरान के एशियाई खेलो व सन् १९७५ मे कुआलालम्पर म एशियाई निशानबाजी चम्पियनशिप के बाद डा० करणीसिंहजी ने स्वेच्छा से निशानेबाजी से हटने का निर्णय किया था, ताकि अन्य युवा निशानेबाजो को आगे आने का अवसर मिल सके। पर मास्को ओलम्पिक की चुनौती को वे अस्वीकार नही कर सके। भारतीय निशानेबाजी टीम म उनका नाम बहुत विलम्ब से शामिल किया गया, इसलिए वे पूरा अभ्यास नही कर सके। ३० जून सन् १९८० को उनके नाम की स्वीकृति हुई। वे उस समय इग्लैंड मे बाई सा० राज्यश्री कुमारीजी के पास थे। उन्होने लन्दन से २०० मील दूर उत्तरी वेल्स में ५ दिन तक गहरा अभ्यास किया। लगभग एक सप्ताह बाद वे मास्को चले गये। वहाँ भी उन्होने ३ ४ दिन तक अभ्यास किया और वर्षा मे भीगने की भी परवाह न की।

ओलम्पिक उद्घाटन के समय राष्ट्रीय ध्वज लेकर भारतीय टीम का नेतृत्व डा० करणीसिंहजी ही करते, क्योंकि ओलम्पिक खेलों मे भाग लेने वाले वे सबसे

प्रतियोगिताओं मे भारत का प्रतिनिधित्व कर चुके हैं। काहिरा में निशानबाजी प्रतियोगिता में विश्व में द्वितीय स्थान प्राप्त कर आपने विश्व ख्याति प्राप्त की और भारत का गौरव बढाया। आप नेशनल राइफल एसोसियेशन आफ इडिया के चुने हुए उप-प्रधान (उपाध्यक्ष) हैं।

आपकी हवाई जहाज उडाने व मोटरगाडी चलाने मे गहरी रुचि है। वे पहले बीकानेरी हैं, जिन्होने निजी वायुयान चालक का लाइसेंस प्राप्त किया। आपके पास 'बानाजा' नामक विमान था। इसी से आपने हवाई उडान सीखी और दो वायुयान चालको–मि० कोनेली व मि० कोक्स को काफी समय तक अपने यहाँ नोकर रखा। बाद में तो वे अन्य विमानो—अरोका, 'डव' आदि को भी उडाने लगे थे। एक बार सरदारशहर में आप वायुयान से गये। विमान वहाँ दुघटना ग्रस्त हो गया। यह अरोका वायुयान उदयपुर महाराणा साहब का था। डा करणीसिहजी ने उस विमान का पूरा मूल्य महाराणा साहब को चुकाया। मोटर गाडियो का शौक तो इस हद तक रहा कि नये माडल और डिजाइन की गाडियाँ आप प्रयोग करते रहे हैं। ब्यूक, डोज, शेवरलेट, थडरबड, कैडिलक आदि विभिन्न प्रकार की आयातित गाडियाँ आपके पास रही हैं। आज भी आप बीकानेर से जयपुर या दिल्ली तक का सफर मोटरगाडी से ही करते हैं और इन मार्गों पर रेल का उपयोग उनकी यात्रा से होने वाली असुविधा को ध्यान में रख कर कम ही करते हैं।

आपकी कला आपके द्वारा बनाये गये चित्रो में मुखर हो उठी है। नई कला के इन चित्रो में रगो की जादूगरी के साथ साथ आपकी मौलिक कल्पना के भी दशन होते हैं, नई दिल्ली मे आपके चित्रो की प्रदशनी का उद्घाटन लोकसभा के तत्कालीन अध्यक्ष सरदार हुकमसिंह ने किया था तथा अन्य दशको ने इन चित्रो की प्रशसा की थी। फोटोग्राफी का शौक आपको आरम्भ से ही है। आपने अपनी कुछ विदेश यात्राओ की फिल्म भी तैयार की है जो काफी रोचक और ज्ञानवद्धक है।

आप भ्रमणशील हैं। आपने काफी यात्राएँ की हैं। आप कई बार यूरोप जा चुके हैं तथा ७२ दिन में विश्व का भ्रमण किया है। (आपकी विदेशयात्राओं के सम्बन्ध मे इसी ग्रन्थ म अन्यत्र विस्तार स लिखा गया है।) भारत के तो प्राय सभी बडे नगरों और महत्त्वपूर्ण स्थानों की आप यात्रा कर चुके हैं।

आप एक अच्छे लेखक हैं। आपका पी० एच० डी की उपाधि के लिए

स्वीकृत शोध प्रबन्ध "बीकानेर के राजघराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध" एक महत्त्वपूर्ण कृति है। इसके अलावा "सत्य-विचार" साप्ताहिक मे आपके कई लेख प्रकाशित हुए, जिनमे से निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं –

(१) हम किधर जा रहे है ?
(२) पीने के पानी के लिए तरसें
(३) खाद्यान्नो की समस्या
(४) युद्ध और सुरक्षा चिन्तन की आवश्यकता
(५) क्या बढती हुई जनसख्या में रोक लगाने से युद्ध-प्रसार में सहायता मिल सकती है ?

यह उल्लेखनीय है कि आप प्राय अग्रेजी में ही लिखते हैं और बाद मे उसका हिन्दी अनुवाद कराते हैं।

सगीत और नृत्य-विशेषत पाश्चात्य-में आपकी गहरी रुचि रही है। सिम्फनी आर्केस्ट्रा की मधुर, कर्णप्रिय सगीत लहरी आपको प्रिय रही है।

प्रकृति के प्रति आपका गहरा लगाव है। प्रकृति के सुरम्य दृश्यो के लिए आपने देश और विदेश के विभिन्न स्थानो की यात्रा की है। आपके निजी प्रासाद के उद्यान का सौन्दय भी वसन्त में दर्शनीय होता है। यद्यपि राजाओ के निजी भत्ते के बन्द होने तथा अन्य कई प्रकार की सुविधाओ की समाप्ति के कारण लालगढ प्रासाद का विस्तृत उद्यान आज उजड सा गया है, फिर भी एक सीमित क्षेत्र में आपकी सौन्दय-चेतना विभिन्न पुष्पो की निर्मिति के दर्शन कराती रहती है। यह उल्लेखनीय है कि कुछ वर्ष पूर्व जब बीकानेर में पुष्प उद्यान प्रदर्शनी प्रतियोगिता होती थी तो कई वर्षों तक निजी उद्यान सौन्दय प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार सर्वदा लालगढ प्रासाद के उद्यान को ही प्राप्त होता रहा।

जीवन-सिद्धान्त

डा० करणीसिहजी ने राजनीति म प्रवेश के समय अपने मार्ग-दर्शन के लिए कुछ ऐसे सिद्धान्त स्थिर कर लिये थे, जिनका जन कल्याण से गहरा सम्बन्ध है। ये सिद्धान्त, जिन पर व अब भी कायम हैं, मुख्यत निम्नलिखित हैं –

१ देश हित को सर्वोपरि स्थान देना
२ जन कल्याणकारी प्रत्येक काय और कानून का समर्थन करना

हमारे जैसे गणतन्त्र देश मे यह आवश्यक है कि नागरिक केवल अपने
अधिकारो को ही नही बल्कि देश के प्रति अपने कर्त्तव्य को भी समझें।
भारत ससार का सबसे बडा जनतन्त्र है। यहाँ स्त्रियो को भी पुरुष के समान
ो अधिकार दिये गये हैं। अत इस जनतन्त्र की सफलता के लिए लडकियो
की शिक्षा उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी लडको की।
ज अपने देश को बहुत आवश्यकता है ऐसे निडर, ईमानदार और निष्पक्ष
कारो , जो पत्रो की मदद से देश सेवा कर सकें।
निया में रहते हैं,उसमे केवल ताकतवर आदमी ही जिन्दा

के लिए हमे गतिशील दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।
है कि लोकतन्त्र को सफल बनाने के लिए जनसाधारण
से अधिक भाग लेना चाहिए।
दुश्मन हू और मैं हर हिन्दुस्तानी को अपना भाई

लोगों की सेवा मैं हर हालत मे ईमानदारी से करुगा।
ोगो का कभी भी कोई नुकसान नही होगा।
हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे इसाई हो, चाहे
ाहे राजपूत हो, या चाहे कोई भी हो, भाई के से
आगे भी रहेंगे।
रे देश के पत्रकार किसी भी प्रकार के राजनीतिक
ो होंगे और हमेशा समाज एव राष्ट्र के हित को

उपलब्धियाँ

ने एक निदलीय व्यक्ति क रूप में राजनीति मे प्रवेश
या और न सत्ता। पर उनमे अपने क्षेत्र, राज्य और
ो दूर करने की तीव्र लगन और उत्साह था। जनता
ा के कारण वे प्रति बार अपने विरोधियो को पराजित
रहे। सन् १९५२ से सन् १९७७ तक ससद् सदस्य
अनेक कार्यों की ओर राज्य व केन्द्रीय सरकार का
उसकी क्रियान्विति के लिए चेष्टा करते रहे और

३ नागरिको मे परस्पर प्रेम की भावना उत्पन्न करना
४ भारत की इकाई की समुचित प्रगति का ध्यान रखना
५ शासन के ढाँचे को पूर्णत जनतान्त्रिक बनाना
६ जातिवाद, सम्प्रदायवाद भाषावाद, प्रान्तीयता आदि का तीव्र विरोध करना
७ राष्ट्र निर्माणकारी शक्तियो का समर्थन और राष्ट्रविरोधी तत्त्वो का खण्डन करना
८ राष्ट्रीय एकता का समर्थन करना
९ सब जातियो मे एकता की भावना उत्पन्न करना
१० सब नागरिकों को समान समझना
११ राजस्थान के सभी क्षेत्रो को समान रूप से लाभान्वित करना
१२ अस्पृश्यता को समाप्त करना—

इन सिद्धान्तो को डा० करणीसिंहजी ने समय समय पर ससद और ससद् के बाहर दिये गये अपने भाषणो व वक्तव्यो आदि मे स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है। कुछ प्रमुख उद्धरण इस प्रकार हैं –

१ आज हमें सबसे अधिक इस बात की आवश्यकता है कि भारत एक शक्ति–शाली सगठित और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण वाला राष्ट्र बने, ताकि हम सब मिलकर देशवासिया की गरीबी को दूर कर सकें।
२ मैं जनता का प्रतिनिधि हू, राजाओ और महाराजाओ का नही।
३ कल्याणकारी राज्य मे प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके योग्य काम उसका जन्मसिद्ध अधिकार होता है।
४ हम भारतवासियों को आठ घण्टे ईमानदारी स काय करने के लिए तयार रहना चाहिए और सभी बातो म देश और अपने ब धुओ नागरिको का हित ही सवप्रथम रखना चाहिये।
५ हमारे देश का प्रत्येक नगर, चाहे वह राजस्थान के रेगिस्तान मे हो या गगा के उपजाऊ मदान मे, बढ़े और ज्यादा से ज्यादा तरक्की करे।
६ हमारा फर्ज सबसे पहले यही है कि अपने स्वाथ से पहले अपने देश के हित का ध्यान रखें।
७ हमारे जसे लोकतन्त्रीय देश ही हमारी तरह सोच सकते हैं। हमें अपने चारो ओर देखकर उन राष्ट्रो म से मित्र चुनने हैं जिनसे हम अब तक अलग रहे हैं और जो हमारी तरह शान्तिप्रिय देश हैं।
८ एक सगठित राष्ट्र ही विदेशी आक्रमण के खतरे का मुकाबला कर सकता है।

९ हमारे जैसे गणतन्त्र देश मे यह आवश्यक है कि नागरिक केवल अपने अधिकारो को ही नही वल्कि देश के प्रति अपने कर्त्तव्य को भी समझें।

१० भारत ससार का सबसे बड़ा जनतन्त्र है। यहाँ स्त्रियो को भी पुरुष के समान ही अधिकार दिये गये हैं। अत इस जनतन्त्र की सफलता के लिए लड़कियो की भी शिक्षा उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी लड़का की।

११ आज अपने देश को बहुत आवश्यक्ता है ऐसे निडर ईमानदार और निष्पक्ष पत्रकारों की, जो पत्रो की मदद से देश सेवा कर सकें।

१२ हम जिस कठोर दुनिया में रहते हैं,उसमे कवल ताकतवर आदमी ही जिन्दा रह सकते हैं।

१३ देश के नव–निर्माण के लिए हमे गतिशील दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

१४ मरा यह दृढ विश्वास है कि लोकतन्त्र को सफल बनाने के लिए जनसाधारण को राजनीति मे अधिक से अधिक भाग लेना चाहिए।

१५ मैं जातिवाद का कट्टर दुश्मन हू और मैं हर हिन्दुस्तानी को अपना भाई समझता हूँ।

१६ चाहे कुछ भी हो आप लोगों की सेवा मैं हर हालत मे ईमानदारी से करुगा। मेरे कारण से आप लोगा का कभी भी कोई नुक्सान नही होगा।

१७ मेरे सब के साथ, चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे इसाई हो, चाहे सिख हो, जाट हो, चाहे राजपूत हो, या चाहे कोई भी हो, भाई के से ताल्लुकात रहे हैं और आगे भी रहेंगे।

१८ मुझे विश्वास है कि हमारे देश के पत्रकार किसी भी प्रकार के राजनीतिक दबाव से प्रभावित नही होंगे और हमेशा समाज एव राष्ट्र के हित को प्रधानता देंगे।

उपलब्धियाँ

डा० करणीसिंह जी ने एक निदलीय व्यक्ति क रूप में राजनीति मे प्रवेश किया। न उनके पास दल था और न सत्ता। पर उनमे अपने क्षेत्र, राज्य और देश के लोगो की कठिनाइयाँ दूर करने की तीव्र लगन और उत्साह था। जनता के अगाध प्रेम और विश्वास के कारण वे प्रति बार अपने विरोधियो को पराजित कर ससद के लिए चुने जाते रहे। सन् १९५२ से सन् १९७७ तक ससद् सदस्य के रूप मे उन्होने जन हित के अनेक कार्यों की ओर राज्य व केन्द्रीय सरकार का ध्यान आकर्षित किया, बार बार उसकी क्रियान्विति के लिए चेष्टा करत रहे और

३ नागरिको मे परस्पर प्रेम की भावना उत्पन्न करना
४ भारत की इकाई की समुचित प्रगति का ध्यान रखना
५ शासन के ढाँचे को पूर्णत जनतान्त्रिक बनाना
६ जातिवाद, सम्प्रदायवाद भाषावाद, प्रान्तीयता आदि का तीव्र विरोध करना
७ राष्ट्र निर्माणकारी शक्तियो का समर्थन और राष्ट्रविरोधी तत्त्वो का खण्डन करना
८ राष्ट्रीय एकता का समर्थन करना
९ सब जातियो मे एकता की भावना उत्पन्न करना
१० सब नागरिकों को समान समझना
११ राजस्थान के सभी क्षेत्रो को समान रूप से लाभान्वित करना
१२ अस्पृश्यता को समाप्त करना—

इन सिद्धान्तो को डा० करणीसिहजी ने समय समय पर ससद और ससद् के बाहर दिये गए अपने भाषणों व वक्तव्यो आदि में स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त किया है। कुछ प्रमुख उद्धरण इस प्रकार हैं –

१ आज हमें सबसे अधिक इस बात की आवश्यकता है कि भारत एक शक्तिशाली सगठित और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण वाला राष्ट्र बने, ताकि हम सब मिलकर देशवासिया की गरीबी को दूर कर सकें।
२ *मैं जनता का प्रतिनिधि हू, राजाओ और महाराजाका का नही।*
३ कल्याणकारी राज्य मे प्रत्येक व्यक्ति के लिए उसके योग्य काम उसका जन्मसिद्ध अधिकार होता है।
४ *हम भारतवासियो को आठ घण्टे ईमानदारी से काय करने के लिए तैयार रहना चाहिए और सभी बातो मे देश और अपने बधुओ नागरिको का हित ही सवप्रथम रखना चाहिय।*
५ हमारे देश का प्रत्यक नगर, चाहे वह राजस्थान के रेगिस्तान मे हो या गगा के उपजाऊ मदान मे, बढ़े और ज्यादा से ज्यादा तरक्की करे।
६ हमारा फज सबसे पहले यही है कि अपने स्वाथ से पहले अपने देश के हित का ध्यान रखें।
७ हमारे जैसे लोकतन्त्रीय देश ही हमारी तरह सोच सकते हैं। हमें अपने चारो ओर देखकर उन राष्ट्रों मे से मित्र चुनने हैं, जिनसे हम अब तक अलग रहे हैं और जो हमारी तरह शान्तिप्रिय देश हैं।
८ एक सगठित राष्ट्र ही विदेशी आक्रमण के खतरे का मुकाबला कर सकता है।

९ हमारे जैसे गणतत्र देश मे यह आवश्यक है कि नागरिक केवल अपने अधिकारो को ही नही बल्कि देश के प्रति अपने कर्त्तव्य को भी समझें।

१० *भारत ससार का सबसे बडा जनतत्र है। यहाँ स्त्रियो को भी पुरुष के समान* ही अधिकार दिये गये हैं। अत इस जनतत्र की सफलता के लिए लडकियो की भी शिक्षा उतनी ही महत्त्वपूर्ण है जितनी लडको की।

११ आज अपने देश को बहुत आवश्यकता है ऐसे निडर, ईमानदार और निष्पक्ष पत्रकारों की, जो पत्रो की मदद से देश सेवा कर सकें।

१२ हम जिस कठोर दुनिया में रहते हैं,उसमे केवल ताकतवर आदमी ही जिन्दा रह सकते हैं।

१३ देश के नव–निर्माण के लिए हमे गतिशील दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

१४ मेरा यह दृढ विश्वास है कि लोकतत्र को सफल बनाने के लिए जनसाधारण को राजनीति मे अधिक से अधिक भाग लेना चाहिए।

१५ मैं जातिवाद का कट्टर दुश्मन हू और मैं हर हिन्दुस्तानी को अपना भाई समझता हूँ।

१६ चाहे कुछ भी हो आप लोगों की सेवा मैं हर हालत मे ईमानदारी से करुगा। मेरे कारण से आप लोगो का कभी भी कोई नुकसान नही होगा।

१७ मेरे सब के साथ, चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो, चाहे इसाई हो, चाहे सिख हो जाट हो, चाहे राजपूत हो, या चाहे कोई भी हो, भाई के से ताल्लुकात रहे हैं और आगे भी रहेंगे।

१८ मुझे विश्वास है कि हमारे देश के पत्रकार किसी भी प्रकार के राजनीतिक दबाव से प्रभावित नही होगे और हमेशा समाज एव राष्ट्र के हित को प्रधानता देंगे।

उपलब्धियाँ

डा० करणीसिंह जी ने एक निदलीय व्यक्ति के रूप में राजनीति मे प्रवेश किया। न उनके पास दल था और न सत्ता। पर उनमे अपने क्षेत्र, राज्य और देश के लोगो की कठिनाइयाँ दूर करन की तीव्र लगन और उत्साह था। जनता क अगाध प्रेम और विश्वास के कारण वे प्रति बार अपने विरोधियो को पराजित कर ससद के लिए चुने जाते रहे। सन् १९५२ से सन् १९७७ तक ससद् सदस्य के रूप मे उन्होंने जन-हित के अनेक कार्यों की ओर राज्य व केन्द्रीय सरकार का ध्यान आकर्पित किया, बार बार उसकी क्रियान्विति के लिए चेष्टा करते रहे और

ध्यान मे उसके सम्पन्न होने पर ही सन्तोष का सास लिया । यहाँ पर ऐसे ही कुछ महत्वपूर्ण कार्यों का अत्यन्त सक्षेप में परिचय दिया जा रहा है —

(1) बीकानेर मे मेडिकल कालेज —

बीकानेर मे प्रिंस विजयसिंह ममोरियल जनरल अस्पताल केवल राजस्थान का ही नही बल्कि भारत के सवश्रेष्ठ अस्पतालों में से एक है । भूतपूर्व बीकानेर रियासत के समय यहाँ योग्यतम डाक्टर व आधुनिकतम साधन मौजूद थे और सरकार की नीति यहाँ से मेडिकल कालेज बनाने की थी । इस बात को ध्यान मे रख कर डा० करणीसिंह जी ने जुलाई १६५३ मे गाडगिल कमेटी को एक विस्तृत स्मरण पत्र देकर बीकानेर म मेडिकल कालेज खोलने का अनुरोध किया । इसके बाद इस काय हेतु उन्होंने समय समय पर, केन्द्रीय स्वास्थ्य-मन्त्री तथा राजस्थान के मुख्यमन्त्री को भी पत्र लिखे । राजस्थान में द्वितीय मेडिकल कालेज की स्थापना के लिए स्थान की जाँच हेतु नियुक्त समिति जब नवम्बर १६५७ में बीकानेर आयी तो आपने इसे एक स्मरण-पत्र देकर बीकानेर का औचित्य सिद्ध किया । आपके सतत प्रयत्नो के फलस्वरूप बीकानेर मे मेडिकल कालेज आरम्भ हो गया और उसका नया भवन तैयार हो गया ।

(II) बीकानेर अस्पताल मे कोबाल्ट प्लान्ट —

हिन्दुस्तान मे सिफ बारह अस्पताल ही ऐसे हैं, जहाँ एक ही चहारदीवारी मे १००० चारपाइयो (Beds) की व्यवस्था है । बीकानेर का अस्पताल भारत के ऐसे बारह बडे अस्पतालो मे से एक है । विज्ञान के विकास के साथ उपचार के नये साधन सामने आये । मेडिकल शिक्षा के विस्तार के कारण उपचार सुविधाओं मे भी विस्तार हुआ । बीकानेर अस्पताल मे कैंसर की चिकित्सा के लिए कोबाल्ट प्लाट की आवश्यकता काफी समय से अनुभव की जा रही थी । इधर ध्यान जाने पर डा० करणीसिंह जी ने केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री को इस सम्बन्ध मे एक पत्र दिनाक २८-१२ ६२ को लिखा । इसके उत्तर मे केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री ने उन्हें दिनाक १८ १ ६३ को सूचित किया कि अस्पतालो को कोबाल्ट प्लाट की सहायता राज्य सरकार द्वारा सिफारिश करने पर दी जाती है तथा बीकानेर अस्पताल के लिए इस प्लाट हेतु कोई अर्जी राजस्थान सरकार ने नहीं दी ।

जब डा० करणीसिंह जी को यह विदित हुआ कि कनाडा सरकार द्वारा कोलम्बो योजना के अन्तगत भारत को ३ के० बी० यूनिट प्रदत्त किये गये हैं तो उन्होंने राजस्थान के मुख्यमन्त्री व केन्द्रीय स्वास्थ्य मन्त्री को पुन पत्र लिखे ।

केन्द्रीय स्वास्थ्य मत्री ने उन्हें अपने पत्र दिनांक १३-१२-६३ मे सूचित किया कि प्रत्येक राज्य मे एक ही यूनिट देना सभव है और राजस्थान को सवाई मानसिह मेडिकल कालेज अस्पताल जयपुर के लिए दी जा चुकी है अत बीकानेर के लिए दूसरी यूनिट देना सभव नही।

पर डा० करणीसिह जी हताश न हुए। उन्होने भारत मे कनाडा के उच्चायुक्त को इस बारे मे पत्र लिखा। उन्होने केन्द्रीय स्वास्थ्य मत्री व राजस्थान के मुख्यमत्री को पुन पत्र लिखे और अपने प्रयत्न चालू रखे। अन्त मे उनके प्रयत्नो के फलस्वरूप सन् १९६४ ६६ की कोलम्बो योजना के अन्तगत बीकानेर का कोबाल्ट प्लाट देना मजूर हुआ। इस पर राजस्थान के तत्कालीन स्वास्थ्य मत्री श्री बरकतुल्ला खा ने उन्हें दिनाक ३ ८ ६४ को लिखा — 'इस सारे मामले मे जो दिलचस्पी आपने ली तथा आपने जो प्रयत्न किये उनके लिए आप बधाई के पात्र हैं। इसकी स्थापना से बीकानेर की जनता पूरा-पूरा लाभ उठा सकेगी।"

कोबाल्ट प्लान्ट की मशीनें तथा अन्य सामान बीकानेर पहुँच गया और यहाँ के अस्पताल मे कैंसर जसे भयानक रोग की चिकित्सा की व्यवस्था हो गई।

(iii) बीकानेर मे आकाशवाणी केन्द्र —

रेडियो आधुनिक युग म प्रचार और मनोरजन का एक महत्त्वपूर्ण साधन बनता जा रहा है। आज हमारे देश का शायद ही कोई ऐसा नगर हो, जहा रेडियो न पहुचा हो। अब तो ट्राजिस्टर न भारत के गाँवो और सुदूर कोनो मे भी अपनी आवाज गु जा दी है। लेकिन ये रेडियो और ट्राजिस्टर तभी अच्छी सेवा दे सकते हैं, जब देश मे स्थान स्थान पर उच्च शक्ति वाले आकाशवाणी के केन्द्र हो। डा० करणीसिह जी ने इसके महत्त्व का ध्यान मे रखते हुए सबसे पहले इस बात की माग की कि बीकानेर मे आकाशवाणी केन्द्र स्थापित किया जाय। दिनाक ३०-७-५३ को गाडगिल कमेटी को दिये गये अपने स्मरण-पत्र म उन्होने लिखा —

'राजस्थान मे बीकानेर डिवीजन ही ऐसा क्षेत्र है जहाँ नहरों का जाल बिछ जायगा। अत बीकानेर का रेडियो स्टेशन, कृषि पर ध्यान रखते हुए राजस्थान के उत्तरी भागो की आवश्यकताओ को पूरी करने मे बहुत सहायक होगा। इससे सगीतज्ञो व कलाकारो की आर्थिक स्थिति म सुधार होगा।"

उन्होंने ससद में भी इसकी माग की। उनकी माग और प्रयत्नों को ध्यान

में रखते हुए दिनाक २८-४-६३ को बीकानेर के आकाशवाणी केन्द्र ने काम करना आरम्भ कर दिया। दिनाक ८-४-६५ को डा० करणीसिंह जी ने लोक-सभा मे मांग की कि राजस्थानी कलाकारों को उचित प्रोत्साहन देने के लिए आकाशवाणी के बीकानेर केन्द्र को रिलेयिंग स्टेशन के स्थान पर ब्राडकास्टिंग स्टेशन बनाया जाये। इस दिशा मे भी प्रयत्न सफल हुआ है।

(iv) राजस्थान नहर –

राजस्थान का उत्तरी भाग खेती के लिए प्रधानत वर्षा पर निभर है। बीकानेर डिवीजन के २३, ३१८ वग मील क्षेत्र म से केवल १००० वग मील क्षेत्र गगनहर जो इस युग क भागीरथ स्व० महाराजा गगासिहजी के प्रथक परिश्रम व प्रयासो से सन् १९२७ में लायी गयी थी, से सिंचित होता है। इस नहर के अतिरिक्त यहाँ भाखरा नहर द्वारा भी सिंचाई की व्यवस्था है। भाखरा नहर के निर्माण मे स्व० महाराजा श्रीगगासिहजी व स्व० महाराजा सादुर्लसिहजी का विशेष योगदान रहा था। इससे भी उत्तरीय क्षेत्र के भागो मे सिंचाई हाती है।

इस क्षेत्र के शेष भागो मे खेती वर्षा पर निभर करती है। यदि वर्षा समय पर और उचित मात्रा मे न हो तो अकाल पड जाता हैं। अत डा० करणीसिहजी का सदा से यह प्रयत्न रहा है कि यह बजर व रेतीली भूमि एक लहलहाते हुए हरे भरे भू भाग मे परिवर्तित हो जाय। सन् १९५२ मे आकाशवाणी से एक भाषण प्रसारित करते हुए उन्होने पजाब की नदियो का उल्लेख करते हुए कहा —

"राजस्थान के बजर भागों को सीचने के लिए इन नदियो के पानी का सुचारु रूप से उपयोग करना चाहिए।"

सन् १९५३ मे गाडगिल कमटी को दिये गये स्मरण पत्र मे उन्होने इस क्षेत्र से दुर्भिक्ष को सदा के लिए मिटाने हेतु सिंचाई के विकास को प्राथमिकता देने की आवश्यकता बतायी। दिनाक १०-११-५४ को श्रीगगानगर के नागरिको द्वारा किये गये अभिनन्दन का उत्तर देते हुए उन्होने राजस्थान नहर के लिए अपने प्रयत्नो का उल्लेख किया। दिनांक २२-१२-५४ को प्रथम पचवर्षीय योजना की प्रगति पर विचार प्रकट करते हुए डा० करणीसिह जी न राजस्थान नहर से होने वाले लाभों पर प्रकाश डाला और इसके शीघ्र निर्माण पर जोर दिया। राजस्थान नहर के निर्माण मे राज्य सरकार की शिथिलता दख कर दिनांक २५ ३ ५८ को उन्होने केन्द्र सरकार से इस काय को अपने हाथ म लेने का अनुरोध किया।

लूणकरणसर क्षेत्र के लोगो के लिए पीने का पानी उपलब्ध कराने हेतु आपने सुझाव दिया कि बिरदवाल से लूणकरणसर तक लिफ्ट चैनल बनायी जाय। दिनांक १-५-६६ को साले की होली, बीकानेर मे सावजनिक सभा मे भाषण देते हुए आपने लिफ्ट चैनल के तीन भागो (१) बिरदवाल से लूणकरणसर (२) लूणकरणसर से बीकानेर तथा (३) बीकानेर से नागौर–पर प्रकाश डाला और भारत सरकार से इसे तीन भागो मे स्वीकार करने का अनुरोध किया। ससद् में और बाहर आपने प्रयत्न जारी रखे। आपने राजस्थान के मुख्यमत्री, केन्द्रीय सिचाई मत्री, प्रधानमत्री आदि को इस बारे में अनेक पत्र लिखे। ससद् में डा० करणीसिंह जी द्वारा लिफ्ट चनल की आवश्यकता और महत्ता बताई गई तो तत्कालीन सिंचाईमत्री डा० के एल राव ने लोकसभा मे उनकी माग का उत्तर देते हुए अपने मत्रालय की मागो की बहस का जवाब देते समय सन् १९६५ मे कहा "I enterly agree with the Hon Member from Bikaner that we should give high pronts to this project I know that the Hon member has been pleading for this project for quite a long time Now that the Rajasthan Canal has come to the 48th miles, it is no longer necessary for us to half back' फलस्वरूप ५ जुलाई १९६८ को राजस्थान नहर परियोजना के अ तगत 'लूणकरणसर बीकानेर लिफ्ट सिचाई योजना काय शुरु हुआ। देश की यह सबसे बडी लिफ्ट योजना है और इस पर लगभग सात करोड रुपये व्यय होंगे।

राजस्थान सरकार की ओर से आवश्यक धनराशि का अभाव बनाकर जब लिफ्ट चैनल के काय को ढीला छोड दिया गया तो डा० करणीसिंह जी ने इस प्रश्न को पुन ससद् मे उठाया। ३-५-६९ को उन्होंने प्रधानमत्री को एक ज्ञापन दिया जिसमे इस योजना को शीघ्रातिशीघ्र पूरी कराने की माग की गयी। राजस्थान नहर योजना की गति मन्द होने पर उन्होंने २१-११-६९ को प्रधानमत्री को पुन पत्र लिखा। इसके उत्तर मे दिनाक ९-१-७० को प्रधानमत्री ने उन्हें लिखा —' मैं स्वय चाहती हु कि इस महत्त्वपूण योजना के काय को तेज किया जाय।" वित्तीय साधनों की कमी की बात करने पर डा० करणीसिंह जी ने सुझाव दिया कि यदि आवश्यक हो तो पी एल ४८० की धनराशि का लिफ्ट चैनल के निर्माण में उपयोग किया जाय। और सचमुच लिफ्ट चैनल का उनका सपना अब साकार हो गया है।

(v) जल–विद्युत —

राजस्थान बनने से पहले भूतपूव बीकानेर रियासत भाखरा-नागल योजना

में साझेदार थी और सिंचाई व सस्ती जल विद्युत् दोनों का ही लाभ उठाने वाली थी, पर राजस्थान सरकार ने जो नयी योजना बनायी उसमे बीकानेर को इससे होने वाले लाभों से वंचित रख दिया था। डा० करणीसिंह जी को इससे भारी दुःख हुआ। लोकसभा में प्रथम पंचवर्षीय योजना की प्रगति पर बहस के समय उन्होंने भारत व राजस्थान सरकार पर जोर डालते हुए कहा —

'बेकार मजदूरों को रोजगार दिलाने के लिए बीकानेर शहर में जहाँ तक हो सके सस्ती बिजली लायी जाय।" दिनांक ३०-७-५३ को गाडगिल कमेटी को दिये गये ज्ञापन में उन्होंने उद्योगों व गावों के लिए सस्ती बिजली की महत्ता बतायी। दिनांक २१-१२ ५३ को लोकसभा में बोलते हुए उन्होंने बीकानेर शहर को सस्ती बिजली देने की आवश्यकता पर पुनः बल दिया। उनके प्रयत्नों के फलस्वरूप राजस्थान सरकार ने बीकानेर शहर को जल विद्युत् देना स्वीकार कर लिया। डा० करणीसिंहजी संसद् में बार-बार यह मांग करते रहे कि राजस्थान को उद्योग धन्धों के लिए अधिक बिजली दी जाय, बीकानेर से थर्मल पावर हाऊस न हटाया जाय तथा पलाना मे १०० मेगावाट का नया पावर प्लांट लगाया जाय।

दिनांक ३०-५ ६६ को हिन्दुस्तान टाइम्स मे एक समाचार प्रकाशित हुआ, जिसके अनुसार केन्द्रीय सरकार ने डा० करणीसिंह जी का पलाना मे ५० मेगावाट का थर्मल पावर स्टेशन स्थापित करने का सुझाव मान लिया। पर यह आज तक स्थापित नहीं हुआ। उन्होंने राजस्थान के मुख्यमंत्री को भी सन् १९६६ मे एक पत्र लिखकर सुझाव दिया कि बीकानेर का थर्मल पावर प्लांट जो पूर्ण रूप से चालू है, परन्तु बेकार पड़ा है उसे चालू कर दिया जाय, ताकि उद्योग धन्धे बन्द न हों और उत्पादन मे कमी न आये। पर इस सुझाव की ओर भी सरकार ने आँखें मूंद ली। फलस्वरूप आज बीकानेर मे बिजली सप्लाई मे भारी अव्यवस्था रहने लगी है। बिजली आती है और चली जाती है। कई बार तो एक दिन मे आठ-दस बार ऐसा होता है। वोल्टेज भी सदा समान नहीं रहता। गर्मी के दिनों मे तो यह अव्यवस्था और बढ़ जाती है। अगर यह स्थिति अधिक समय तक रही तो स्थानीय उद्योग-धन्धों पर इसका बहुत ही बुरा असर पड़ेगा और उत्पादन बन्द या कम होने पर राष्ट्र को हानि उठानी पड़ेगी। काश ! सरकार डा० करणीसिंह जी के सुझावों को मानकर पलाना मे नया थर्मल पावर स्टेशन स्थापित कर देती और बीकानेर के थर्मल पावर हाऊस को चालू रखती।

(vi) बीकानेर के पास गोलाबारी —

बीकानेर जिले में बीकानेर नगर से लगभग १० मील दूर केन्द्रीय रक्षा

मत्रालय द्वारा एक गोलाबारी क्षेत्र स्थापित करने का प्रस्ताव कुछ वष पूव हुआ था। यह स्थान बीकानेर नगर और राजस्थान नहर से सीचे जाने वाले इलाके के बीच मे था। इसका पता चलते ही डा० करणीसिहजी ने तत्कालीन रक्षामत्री श्री वी के मेनन तथा स्व० प्रधानमत्री श्री नेहरू को पत्र लिखकर उनसे अनुरोध किया कि यह गोलाबारी क्षेत्र यहा स्थापित न किया जाय, क्योंकि इस इलाके मे आगामी कुछ ही वर्षों मे राजस्थान नहर आने वाली है।

उन्होने लोकसभा में भी इस सवाल को उठाया और राजस्थान के मुख्य मत्री को कई पत्र लिखे। उन्होने इसके लिए दो अन्य स्थानो का सुझाव दिया। उन्होंने यह आशका भी प्रकट की कि केन्द्रीय सरकार को यहाँ भविष्य मे आणविक शस्त्रों का प्रयोग करना पडा तो यह समस्त इलाका उत्पादन के अयोग्य और वीरान हो जायेगा।

दिनाक १८ २ ६४ को उन्होने तत्कालीन रक्षा मत्री श्री चह्वाण को भी यहाँ से गोलाबारी क्षेत्र हटाने के बारे मे पत्र लिखा। श्री अमृत नाहटा ने अपने एक भाषण मे यह आरोप लगाया कि पहले रक्षा मत्रालय का बीकानेर के निकट ४०० वगमील क्षेत्र मे यह रेंज स्थापित करने का प्रस्ताव था, लेकिन ससद् सदस्य डा० करणीसिहजी इस भूमि को पक्षियो के शिकार के लिए चाहते थे। अखबारो में यह आराप पढ कर उन्होने २५-१२ ७० को रक्षामत्री श्री जगजीवनराम को एक पत्र लिखा। इसमे उक्त आरोप का खण्डन करते हुए गोलाबारी क्षेत्र बीकानेर के पास स्थापित करने के बारे मे जनता के निम्नलिखित तीन ऐतराज भी बताये —

(१) गोलाबारी क्षेत्र बडे नगरो से दूर होना चाहिए। प्रस्तावित क्षेत्र बीकानेर से केवल १० मील की दूरी पर स्थापित होना था।
(२) गोलाबारी क्षेत्र वहा नही होना चाहिए, जहा सिंचाई होने की सभावना हो। प्रस्तावित क्षेत्र लिफ्ट चनल सिंचाई योजना के अन्तगत आ चुका है।
(३) गोलाबारी क्षेत्र से कम से कम ग्रामीण प्रभावित होने चाहिए।

यह सन्तोष का विषय है कि डा करणीसिहजी के इन प्रयत्नो के फलस्वरूप सरकार ने गोलाबारी क्षेत्र बीकानेर के निकट स्थापित न करने का निणय किया।

(vii) सिपाहियो के हितो की रक्षा —

सैनिकों के साथ डा० करणीसिहजी का काफी पुराना सम्बन्ध है। द्वितीय

महायुद्ध के समय उन्होने अपने दादो सा० स्व० महाराजा श्री गगासिहजी के साथ मध्यपूव मे युद्ध के मोर्चों का निरीक्षण किया था। बीकानेर राज्य की सेना में उन्होने लेफ्टिनेंट से मेजर जनरल तक पद क्रमश प्राप्त किया। अत वे सैनिक जीवन की समस्याओ और कठिनाइयो से काफी परिचित हैं।

ससद् सदस्य चुने जाने के बा॰ वे पिछले
सुरक्षा सलाहकार समिति के सदस्य के रूप म
को सम्पत्ति शुल्क से मुक्त रखा जाय। स॰प
असहमति मे उन्होन दिनाक ३१-३ ५३ को लि
से मुक्त रखने के लिए इस कानून में युनाइटेड
धारा ७१ जोडी जाय। साथ ही उन्होने नोट
करते हुए पुलिस कमचारियो की मृत्यु होन
जाय। इस प्रकार का सुझाव दने वाले

जब सन् १९५८ में सम्पत्ति शुल्क
प्रस्तुत हुआ तो डा० करणीसिहजी
दिनाक २८ ८ ५८ में
देने की माग की। ८
रखने के कारण लोकस॰
गया।

शास्त्री को एक ज्ञापन दिया। इसमें यातायात की सुविधाओं के विस्तार हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये --

(क) सडकें

(१) बीकानेर से अबोहर
(२) नेशनल हाइवे न ११
(३) सरदारशहर से हनुमानगढ
(४) बीकानेर से अनूपगढ
(५) बीकानेर से पोकरण

इसके बाद उन्होने निम्नलिखित सडको के शीघ्र निर्माण की सरकार से मांग की --

(१) बीकानेर--गगानगर
(२) डूगरगढ--बीरमसर (नेशनल हाइवे न ११)
(३) बीकानेर--दिल्ली
(४) बीकानेर--फलोदी

इस सम्बन्ध मे उन्होने केन्द्रीय व राज्य सरकार के मन्त्रियो से भी पत्र व्यवहार किया। फलस्वरूप उपर्युक्त अधिकाश सडको का निर्माण हो चुका है।

(ख) रेल

(१) गगानगर से हिन्दूमल कोट
(२) चूरू--फतहपुर रेल लाइन
(३) बीकानेर-जेसलमेर रेल लाइन
(४) चूरू सिरसा रेल लाइन

इनम से प्रथम दो का निर्माण काय हो चुका है।

इनके अतिरिक्त आपने बीकानेर डिवीजन के रेल यातायात में विभिन्न सुविधाए प्रदान करने की सरकार से माग की। इनमें से बहुत सी जनता को उपलब्ध हो चुकी हैं।

(ix) घग्घर की बाढ--

सन् १९६०--६१ मे गगानगर जिले के घग्घर बेड (नाली रकबे) में

महायुद्ध के समय उन्होने अपने दादो सा० स्व० महाराजा श्री गगासिहजी के साथ मध्यपूव मे युद्ध के मोर्चों का निरीक्षण किया था। बीकानेर राज्य की सेना में उन्होने लेफ्टिनेंट से मेजर जनरल तक पद क्रमश प्राप्त किया। अत वे सैनिक जीवन की समस्याओ और कठिनाइयो से काफी परिचित हैं।

ससद् सदस्य चुने जाने के बाद वे पिछले कई वर्षों से केन्द्रीय सरकार की सुरक्षा सलाहकार समिति के सदस्य के रूप मे यह प्रयत्न करते रहे हैं कि सैनिको को सम्पत्ति शुल्क से मुक्त रखा जाय। सम्पत्ति शुल्क कानून १९५२ मे अपनी असहमति मे उन्होने दिनांक ३१-३ ५३ को लिखा कि सनिको को सम्पत्ति शुल्क से मुक्त रखने के लिए इस कानून मे युनाइटेड किंगडम फाइनेंस एक्ट १९५२ की धारा ७१ जोडी जाय। साथ ही उन्होंने नोट दिया कि अपना कत्तव्य पालन करते हुए पुलिस कमचारियो की मत्यु होने पर उन्हें भी ऐसी ही सुविधाए दी जाय। इस प्रकार का सुझाव देने वाले समस्त ससद् मे वे अकेले थे।

जब सन् १९५८ मे सम्पत्ति शुल्क कानून (सशोधित) पुन लोकसभा मे प्रस्तुत हुआ तो डा० करणीसिंहजी ने फिर इस सवाल को उठाया। दिनांक २८ ८ ५८ को उन्होने लोकसभा में अपने भाषण मे सैनिको को यह छूट देन की माग की। उनके प्रयत्नो के फलस्वरूप तथा सम्पत्ति शुल्क कानून सशोधन रखने के कारण लोकसभा मे इस सुझाव को सरकार द्वारा स्वीकार कर लिया गया।

इसके बाद पुलिस वालों को भी सम्पत्ति शुल्क से मुक्ति दिलाने के लिए उन्होने प्रयत्न किये। इस सम्बन्ध म उन्होंने मुख्यमन्त्रियो, ससद् सदस्यो व कई केन्द्रीय मन्त्रियो को पत्र लिखे। अत वित्त-विधेयक (सख्या २) पर हुए वाद विवाद के अवसर पर जब डा० करणीसिंहजी ने पुलिस कमचारियो को यह छूट देने के बारे मे अपना सशोधन लोकसभा में पेश किया तो सदन के समस्त दलो द्वारा उसका समथन हुआ। अन्तत पुलिस कमचारियो को भी सेना के समान ही सम्पत्ति-शुल्क से छूट मिल गयी।

(viii) यातायात –

राजस्थान मे यातायात सम्बन्धी कठिनाइयाँ बहुत हैं। कई क्षेत्रों मे सडकों का पूण विकास नही हुआ है और कई नगरों को रेल से जोडना जरुरी है। अगस्त १९५५ में डा० करणीसिंहजी ने तत्कालीन रेल मत्री स्व० श्री लालबहादुर

शास्त्री को एक ज्ञापन दिया। इसमे यातायात की सुविधाम्रो के विस्तार हेतु निम्नलिखित सुझाव दिय –

(क) सडकें

(१) बीकानेर से प्रबोहर
(२) नेशनल हाइवे न ११
(३) सरदारशहर से हनुमानगढ
(४) बीकानेर से अनूपगढ
(५) बीकानेर से पोकरण

इसके बाद उन्होने निम्नलिखित सडको के शीघ्र निर्माण की सरकार से मांग की –

(१) बीकानेर–गगानगर
(२) डूगरगढ–बीरमसर (नेशनल हाइवे न ११)
(३) बीकानेर–दिल्ली
(४) बीकानेर–फलोदी

इस सम्बन्ध मे उन्होने केन्द्रीय व राज्य सरकार के मत्रियों से भी पत्र व्यवहार किया। फलस्वरूप उपर्युक्त अधिकाश सडको का निर्माण हो चुका है।

(ख) रेल

(१) गगानगर से हिन्दूमल कोट
(२) चूरू–फतहपुर रेल लाइन
(३) बीकानेर–जैसलमेर रेल लाइन
(४) चूरू सिरसा रेल लाइन

इनमे से प्रथम दो का निर्माण काय हो चुका है।

इनके अतिरिक्त आपने बीकानेर डिवीजन के रेल यातायात में विभिन्न सुविधाए प्रदान करने की सरकार से मांग की। इनमें से बहुत सी जनता को उपलब्ध हो चुकी हैं।

(IX) घग्घर की बाढ–

सन् १९६०–६१ मे गगानगर जिले के घग्घर बेड (नाली रकबे) में

जबरदस्त बाढ आयी। इस बाढ से सूरतगढ फाम और आसपास के क्षेत्र की खडी फसल नष्ट हो गयी। वैसे तो पिछले वर्षों मे भी बाढ से काफी हानि हुई थी, पर सरकारी अनुमान के अनुसार सन् १९६० की बाढ से ३० ५ 'लाख रुपयों की हानि हुई। फरवरी सन् १९६१ म खडो रबी फसलें फिर नष्ट हो गयी। हिन्दुस्तान टाइम्स के एक समाचार के अनुसार वर्षा और शरद्-ऋतु में आयी बाढ से लगभग ३ करोड रुपयो की हानि हुई। बीकानेर महाराजा करणीसिहजी ने लोकसभा मे एक ध्यानाकपरण प्रश्न द्वारा सरकार का ध्यान इसकी ओर आकर्षित किया।

महाराजा साहब ने दिनाक ३०-३ ६१ को लोकसभा मे पुन घग्घर की बाढ की चर्चा की और यह सुझाव दिया कि सूरतगढ पहुँचने से पहले घग्घर की धारा को बदलकर रेगिस्तानी इलाके मे पहुँचाया जाय ताकि इस जल का सदुपयोग हो। इस धारा परिवतन पर लगभग २ करोड रुपये खच होंगे, जो इसकी बाढ स होने वाली हानि को देखते हुए साधारण है। महाराजा साहब के प्रयत्नो के फलस्वरूप घग्घर बाढ नियन्त्रण के लिए केन्द्रीय सरकार द्वारा एक मीटिंग बुलायी गयी, जिसमे पजाब व राजस्थान के सम्बन्धित अधिकारियों ने भाग लिया। दिनाक ७ १०-६१ को महाराजा साहब ने राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमन्त्री को एक पत्र लिखकर उनसे भी इस समस्या को स्थायी रूप से हल करने का अनुरोध किया।

सन् १९६३ में पुन बाढ आयी और काफी नुकसान हुआ। इस पर महाराजा साहब ने लोकसभा में पुन सुझाव दिया-"नाली की बाढ सूरतगढ फाम की खडी फसलें बरबाद कर देती हैं। अत उचित तो यह हो कि बाढ के पानी को धोरो (Sand dunes) की ओर मोड दिया जाय। ऐसा कर के हम फाम को तो तबाही से बचा लेंगे, इसके अलावा जिस क्षेत्र में बाढ का पानी हानिकारक है उसको बचा सकेंगे और जहाँ उपयोगी है, वहाँ उससे लाभ उठा सकेंगे।" महाराजा साहब के बराबर के सुझावो के बावजूद इस ओर सरकार ने कोई ठोस कदम नही उठाया है।

(x) बीकानर बैंक को स्टेट बैंक का सहायक बैंक बनाने हेतु प्रयत्न

सन् १९५८ में ससद् मे एक बिल प्रस्तुत किया जाने वाला था जिसके अनुसार निम्नलिखित राज्य सम्बन्धित बैंकों को सरकार द्वारा स्टेट बैंक के सहायक बैंको के रूप में ग्रहण किया जाना था —

१ बैंक आफ हैदराबाद

२ बैंक ग्राफ सौराष्ट्र
३ बैंक ग्राफ पटियाला
४ बैंक ग्राफ इन्दौर
५ बैंक ग्राफ त्रावनकोर
६ बैंक ग्राफ जयपुर

महाराजा बीकानेर डा० करणीसिंह जी को जब यह पता चला कि इस बिल मे बैंक ग्राफ बीकानेर को शामिल नही किया है और उनको यह विश्वास होने पर कि बीकानेर बैंक के स्टेट बैंक के सहायक बैंक बनने मे ही बैंक और उसके कर्मचारियों का हित है, तो उन्होने केन्द्रीय वित्त मंत्री तथा उपमंत्री को निजी पत्र लिखे और साथ मे बीकानेर बैंक के गठन, स्वरूप और कार्य के सम्बन्ध मे एक विस्तृत नोट लिखकर यह माग की कि बीकानेर बैंक को भी उक्त बिल मे शामिल करके स्टेट बैंक का सहायक बैंक बनाया जाय। उन्होंने राजस्थान के वित्तमंत्री को पत्र लिखकर सुझाव दिया कि राजस्थान सरकार की ओर से भी इसके लिए प्रयत्न किया जाय। फलस्वरूप केन्द्रीय सरकार ने बीकानेर बैंक को भी जनवरी १९६० से स्टेट बैंक के एक सहायक बैंक के रूप मे स्वीकार (ग्रहण) कर लिया।

(xi) बीकानेर रेंज के डी आई जी पी के पद को रखने के प्रयास

राज्य सरकार राजस्व व्यय में कटौती के ध्येय से बीकानेर रेंज के डी ग्राई जी पी के पद को भग करने पर विचार कर रही थी। अन्य जन-प्रतिनिधियों के साथ महाराजा साहब ने इस पद को कायम रखने पर जोर दिया। उन्होने राज्य सरकार, केन्द्रीय गृह मन्त्रालय तथा तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी को पत्र लिखे। फलस्वरूप यह पद भग नही किया गया और इसे यही कायम रखा गया।

(xii) भारत माता दिवस

अंग्रेजों के समय मे भारत मे बडे दिन का त्यौहार (Christmas day) बडे उल्लास के साथ मनाया जाता था और बच्चो को मिठाई व खिलौने बाटे जाते थे। भारत के स्वतन्त्र हो जाने और गणतन्त्र बनने के बाद यह परम्परा समाप्त हो गयी, यद्यपि इसाईयो का समुदाय इसे अब भी मनाता है। महाराजा साहब ने बताया कि इस त्यौहार के न मनाये जाने से बीकानेर के बच्चों ने एक प्रकार का

प्रभाव सा अनुभव किया, क्योंकि उन्हें मिठाई और खिलौने नहीं मिलते। डा० करणीसिंह जी ने सुझाव दिया कि देश की नयी पीढ़ी में उमंग और उल्लास लाने के लिए नवीन स्वस्थ परम्पराएँ प्रारम्भ की जाय और गणतन्त्र दिवस पर बच्चों के लिए एक ऐसा उत्सव मनाया जाय, जिसमें भारत माता के द्वारा उन्हें मिठाई और खिलौने बांटे जाये। अब स्वतन्त्रता-दिवस एवं गणतन्त्र-दिवस के अवसर पर स्टेडियम में बच्चों को मिठाई बाँटी जाती है।

(xiii) गगानगर मे ट्रैक्टर का कारखाना —

देश के किसी भी जिले की तुलना मे गगानगर जिले म सबसे अधिक सख्या मे ट्रैक्टर और जीपें हैं। यांत्रिक खेती बढ रही है और राजस्थान व भाखरा नहरों के तैयार होने पर ट्रैक्टरों और उनके पुर्जों की जो अभी भी कम पडते हैं, मांग अधिक बढ जायेगी। दिनांक ३ ५ ६६ को डा० करणीसिंहजी ने तत्कालीन प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी को एक स्मृति पत्र देकर मांग की कि श्री गगानगर मे एक ट्रैक्टर फैक्टरी की स्थापना, चाहे वह सार्वजनिक क्षेत्र मे हो, चाहे निजी, होना बहुत जरूरी है।

(xiv) बीकानेर में रेल्वे लाइन पर पुल —बीकानेर शहर मे रेल्वे लाइन पर अविलम्ब पुल बनाने की आवश्यकता को ध्यान मे रख कर महाराजा साहब ने केन्द्रीय रेलमन्त्रालय से पत्र-व्यवहार किया, ससद् म प्रश्न पूछे और केन्द्रीय रेल उपमत्री श्री रामास्वामी को साथ ले जाकर मौका दिखाया। उन्होंने तत्कालीन मुख्यमत्री श्री सुखाडिया को भी पत्र लिखे और एक शिष्टमडल लेकर तत्कालीन रेल-मत्री डा० रामसुभगसिंह से मिले। इस दिशा मे प्रयत्न चालू हैं।

(xv) अन्य —

डा० करणीसिंहजी ने उपयुक्त कार्यों के अलावा निम्नलिखित कार्य भी उठाये सरकार का उनकी ओर ध्यान आकर्षित किया और उन्हें पूरा करवाया —

(१) बीकानेर रेल्वे वर्कशाप का विस्तार तथा कुछ शॉप्स को बाहर भेजने से रोका गया
(२) बीकानेर पोलिटेकनिक
(३) वाटर वर्क्स
(४) बैंक आफ बीकानेर और बैंक आफ जयपुर का स्टेट बैंक किया जाना

कोसो दूर रहने के कारण ही सामान्य जनता इन्हें अपना सच्चा प्रतिनिधि मानती है, इनका विश्वास करती है और अपना हितैषी व अपने अधिकारा का प्रहरी समझती है। पद का लोभ आपको नही। यही त्याग इन्हे राजनीति में लोकप्रिय रख सका। वह राजनीति, जिसके चक्रव्यूह मे न जाने कितने निरीह अभिमन्यु मौत के शिकार हो जाते हैं, न जाने कितने भोले लोग इस छायाग्राहिणी राक्षसी के द्वारा निगल लिये जाते हैं—ऐसी बहुरूपिणी राजनीति मे डा० करणीसिंहजी के जनहितैषी कार्यों ने, निस्वार्थ सेवा भावना ने, सरलता और स्पष्टता ने इनकी लोकप्रियता को कायम रखा। जब कभी और जहा कही वे गये हैं, जनता ने उनका दिल खोलकर पूरे उत्साह के साथ स्वागत किया है।

उन्हें जन-सपर्क अत्यन्त प्रिय है। देश के नेताओ से मिलेंगे, विदेशो की महान् हस्तियों से मिलेंगे साधारण लोगो से मिलेंगे मजदूरो से मिलेंगे किसानो से मिलेंगे व्यापारी वर्ग से मिलेंगे, क्लर्कों और अध्यापको व विद्यार्थियो से मिलेंगे। लोगो से मिलने मे आप सुख का अनुभव करते हैं। अपने सासद काल मे बीकानेर मे रहते समय प्रति सोमवार को ११ बजे से १।। बजे तक का समय इन्होने अपने क्षेत्र के लोगो से मिलने के लिए ही निर्धारित कर रखा था। इसके अतिरिक्त जन सम्पर्क का एक अलग कार्यालय खोल रखा था, जिसने जनता की जानकारी के लिए आपके कार्यों के सम्बन्ध मे अनेक विज्ञप्तियाँ समय समय पर प्रकाशित की।

मिलने मे किसी प्रकार का सकोच नही झिझक नही। प्रथम भेंट मे ही इनके निश्छल व सरल व्यक्तित्व की छाप मिलने वाले व्यक्ति के हृदय पर गहरी जम जाती है। सुनने वाले के हृदय मे शब्दो की सत्यता पर पूरा विश्वास हो जाता है। इनकी बातों को सुनकर कोई भी व्यक्ति उनकी सच्चाई पर शका नही कर सकता। उस व्यक्ति के साथ इनका ऐसा मधुर व्यवहार होता है कि आने वाला इनके प्रति सम्मान का भाव लिये अपने घर लौटता है। जाति, सम्प्रदाय और धर्म के किसी प्रकार के भेद भाव के बिना आपका सबके प्रति गहन लगाव है।

आपकी चारित्रिक सम्पदा मे खरापन एक प्रधान गुण है। आप खरे हैं, एक दम खरे। वे सिद्धान्तो के सौदे व समझौते मे विश्वास नही रखते। किसी व्यापारी की तरह हानि-लाभ के तराजू के पलडो मे सिद्धान्तो को तोलकर, बदल कर व अपने जीवन को चलाना नही चाहते। जो सत्य है, वह त्रिकाल सत्य है।

एक लोकप्रिय व्यक्तित्व

गौर वर्ण, सुगठित शरीर विशाल भुजाएँ, भव्य ललाट, चेहरे पर तेज, प्याले सी बडी बडी आँखें मुख पर स्मिति और सौम्य भाव-यह आकर्षक व्यक्तित्व है डा० करणीसिंहजी का।

राजमहलो मे जन्म लेकर भी जो झोपडियो तक गये जिन्होने जन-हित को सर्वोपरि स्थान देकर अपने वश की उज्ज्वल एव महान् परम्परा को निभाया, बीकानेर डिवीजन के नगर-नगर और गाँव गाँव मे जो कष्ट पीडितो की दारुण गाथा सुनने पहुँचे कभी अकाल पीडित ग्रामीणो के बीच तो कभी अतिवृष्टि के शिकार नागरिको के मध्य कभी पुलिस के गोली काड से घायलो से मिलन तो कभी अन्न-जल के अभावग्रस्त व्यक्तियो को सान्त्वना और मदद देने। अपने २५ वर्ष के सासद-काल मे उन्होने बीकानेर डिवीजन का कोना कोना छान मारा सिर्फ एक ही लक्ष्य लेकर—किसी प्रकार इस विराट जनता का दुःख दूर किया जाय। सचमुच वे ससद् मे राजाओ महाराजाओ के प्रतिनिधि नही, बल्कि जनता के प्रतिनिधि रहे।

वे धर्म-निरपेक्ष है। आप उन्हें सनातन धर्म के यज्ञ मे पायेंगे, जैन धर्मानुयायी अणुव्रत आन्दोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी के समारोह मे पायेंगे, एमना पीर भुट्टो पीर के मेले में पायेंगे सिक्खो और ईसाइयों के धार्मिक उत्सवो मे सम्मिलित पायेंगे अखिल भारतीय सेवा सघ में पायेंगे। यह सब इस बात का पुष्ट प्रमाण है कि उनमे हमारी महान् भारतीय सस्कृति की सहिष्णुता और उदारता है। यह बात नही कि वे किसी धर्म को नही मानते। श्री करणीमाता और श्री लक्ष्मीनाथ जी उनके इष्ट हैं। रुणेचा के श्री रामदेव जी तथा कोडमदेसर के श्री भरुजी के दर्शनार्थ भी वे जाते हैं। पर इसका यह तात्पर्य नही कि अन्य धर्मावलम्बियो के प्रति उनमे कोई उपेक्षा या अनादर की भावना है। वे तो यह मानकर चलते हैं कि सर्वदेव नमस्कार केशव प्रति गच्छति'

उनमें विनम्रता है। न उच्च कुल का अभिमान और न सम्पत्ति का घमण्ड। वे सभी को—यहाँ तक कि पुराने नोकरो को भी—'जी' कारा देकर पुकारते हैं। जब उत्तराधिकार मिलने के समय आपका राजतिलक होने लगा तो आपने कहा कि जब 'राज्य' ही नहीं तो किस बात का राजतिलक। झूठी शान के दम्भ से

कोसो दूर रहने के कारण ही सामान्य जनता इन्हें अपना सच्चा प्रतिनिधि मानती है, इनका विश्वास करती है और अपना हितैषी व अपने अधिकारो का प्रहरी समझती है। पद का लोभ आपको नही। यही त्याग इन्हे राजनीति मे लोकप्रिय रख सका। वह राजनीति, जिसके चक्रव्यूह म न जाने कितने निरीह अभिमन्यु मौत के शिकार हो जाते हैं, न जाने कितने भोले लोग इस छायाग्राहिणी राक्षसी के द्वारा निगल लिये जाते हैं—ऐसी बहुरुपिणी राजनीति म डा० करणीसिहजो के जनहितैषी कार्यों ने, निस्वार्थ सेवा भावना न, सरलता और स्पष्टता न इनकी लोकप्रियता को कायम रखा। जब कभी और जहा कही वे गय हैं, जनता ने उनका दिल खोलकर पूरे उत्साह के साथ स्वागत किया है।

उन्हे जन-सपर्क अत्यन्त प्रिय है। देश के नेताओ से मिलेंगे, विदेशो की महान् हस्तियों से मिलेंगे साधारण लोगो से मिलेंगे, मजदूरो से मिलेंगे किसानो से मिलेंगे व्यापारी वग स मिलेंगे, क्लर्कों और अध्यापको व विद्यार्थियो स मिलेंगे। लोगो से मिलने मे आप सुख का अनुभव करते है। अपने सासद काल मे बीकानर मे रहते समय प्रति सोमवार को ११ बजे से १।। बजे तक का समय इ होने अपने क्षेत्र के लोगो स मिलन के लिए ही निर्धारित कर रखा था। इसके अतिरिक्त जन सम्पक का एक अलग कार्यालय खोल रखा था, जिसन जनता की जानकारी के लिए आपक कार्यों के सम्बन्ध मे अनेक विज्ञप्तियां समय समय पर प्रकाशित की।

मिलने म किसी प्रकार का सकोच नही झिझक नही। प्रथम भेंट मे ही इनके निश्छल व सरल व्यक्तित्व की छाप मिलन वाले व्यक्ति के हृदय पर गहरी जम जाती है। सुनने वाले क हृदय मे शब्दो की सत्यता पर पूरा विश्वास हो जाता है। इनकी बातो को सुनकर कोई भी व्यक्ति उनकी सच्चाई पर शका नही कर सकता। उस व्यक्ति के साथ इनका ऐसा मधुर व्यवहार होता है कि आने वाला इनके प्रति सम्मान का भाव लिये अपने घर लौटता है। जाति, सम्प्रदाय और धम के किसी प्रकार क भेद भाव के बिना आपका सबक प्रति गहन लगाव है।

आपकी चारित्रिक सम्पदा मे खरापन एक प्रधान गुण है। आप खरे हैं, एक दम खरे। वे सिद्धा तो के सौदे व समझौते मे विश्वास नही रखते। किसी व्यापारी की तरह हानि-लाभ के तराजू क पलडो म सिद्धान्तो को तोलकर, बदल कर ये अपने जीवन को चलाना नही चाहते। जो सत्य है, वह त्रिकाल सत्य है।

आप धीरज कभी नही खोते। विश्वास के कदमों से आगे बढ़ते हैं, ढाढस के साथ दृढ़ता मजबूती व मुस्तैदी के साथ।

इनका निश्चय अटल होता है। संकल्प के साथ जब ये कोई निर्णय लेते हैं तो फिर उससे पीछे हटना झिझकना, फिसलना, दिशा बदलना या विलम्ब करना, ये बातें आपके स्वभाव में नही।

जिन्दगी की राह में चलते जो भी महान् व्यक्तित्व आते हैं, उनकी ओर आकर्षित होना उनसे कुछ ग्रहण करना और फिर आगे चल पड़ना–यही इनके जीवन का क्रम रहा है। किसी एक व्यक्ति के प्रति सदैव सम्पूर्ण श्रद्धा व निष्ठा के साथ समर्पित होकर जड़ बनकर बैठ जाना आपको अभीष्ट नही। 'चरवेति चरवेति' (चलते रहो चलते रहो, चलना ही जीवन है), उपनिषद् का यह मन्त्र आपकी जीवन–रागिनी का मूल स्वर है।

आपकी उदारता अनुकरणीय है। आपने कई ट्रस्टों की स्थापना की है ताकि जरूरतमन्द लोगों की आर्थिक सहायता की जा सके। अस्पताल में आपने पोस्ट आपरेशन वार्ड बनवाया। सांसद–काल में आपको जो भत्ता मिलता वह सारा का सारा जरूरतमन्द विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के रूप में बांट देते। यद्यपि अब आप सांसद नही हैं तथा राजाओं को मिलने वाला निजी भत्ता बन्द हुए अनेक वर्ष हो गये पर विभिन्न ट्रस्टों से अब भी विद्यार्थियों तथा आर्थिक दृष्टि से विपन्न लोगों की सहायता करते हैं।

ये हृदय से सरल हैं, सहज विश्वासशील हैं। कुछ ऐसे भी लोग हैं जो सोचते कुछ है, कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं। पर ये चाहकर भी ऐसा नही कर सकते। इनकी दुर्बलता नही बल्कि राजपूती स्वभाव की सबलता है। यह इनकी प्रमुख चारित्रिक विशेषता है।

आप न शराब पीते हैं न मांस भक्षण करते है और न धूम्रपान करते हैं। ये ऐसी विरल विशेषताएं हैं, जो सामान्यतः आज के युग में अन्य क्षत्रिय नरेशों में नहीं पायी जाती।

यद्यपि इनका निर्वाचन क्षेत्र बार बार बदला गया, पर जनता ने इन्ही को चुना और इन्ही में अपना दृढ़ विश्वास प्रकट किया। निरंतर २५ वर्षों तक लोक

सभा के लिए चुना जाना—और वह भी बिना किसी दल के सहयोग के— अपने आप मे एक चमत्कारिक घटना है। इनकी इस लोकप्रियता का कारण यह है कि इन्होंने जनता की भावना को ठीक प्रकार से समझ कर उसका सही और ईमानदारी से संसद् मे प्रतिनिधित्व किया। राष्ट्र निर्माण के कार्यों के लिए, जहा इन्होंने सरकार का पूर्ण समर्थन किया वहा सरकार की गलत नीति की आलोचना करने से भी वे नहीं हिचकिचाये। उनकी मान्यता रही कि किसी व्यक्ति या दल विशेष की निन्दा करना छिछली राजनीति का चिन्ह है। हमे तो राष्ट्र के हितो के विरोधी सिद्धान्तों का विरोध करना चाहिए। इसी का परिणाम था कि अपने सांसद काल मे इन्होंने सभी दलो के प्रसिद्ध नेताओ से मधुर सम्बन्ध कायम करने मे सफलता प्राप्त की।

जीवन मे उन्हे अनुशासन बहुत प्रिय है। अपने पितामह स्व० महाराजा गगासिंह जी व पिता स्व० महाराजा सादुलसिंह जी के शासन मे उन्होंने स्वयं कडे अनुशासन का पालन किया और दूसरो को भी ऐसा ही करते देखा। फलस्वरूप अनुशासन-प्रियता इनके जीवन का अविभाज्य अंग बन गयी। विभिन्न अवसरो पर ये सेना के जवानो, स्काउटो छात्र छात्राओ तथा खिलाड़ियो के मध्य सादर आमन्त्रित किये गये और इन सबके बीच अन्य बातो के अलावा आपने अनुशासन अपनाने व कायम रखने पर पूरा जोर दिया। यह मानो इनका जीवन मंत्र हैं।

आज विज्ञान के तीव्रगामी विकास ने लोगो की अध्यात्म भावना को मिटाना आरम्भ कर दिया है। धर्म के प्रति आस्तिकता दाँव पर है। लेकिन डा करणी सिंह जी पर इनकी माता की आस्तिकता के संस्कार इतने गहरे पडे हैं कि अनेक बार पूर्व और पश्चिम की (विश्व के अनेक देशो की) यात्रा करने के बाद भी उनकी अपने धर्म मे गहन आस्था बनी हुई है। पश्चिम का भौतिकवाद उन्हे वश मे नहीं कर पाया। पूर्व का अन्धविश्वास भी उन्हें जकड नहीं पाया। सच तो यह है कि उनके व्यक्तित्व मे चाहे पश्चिमी पोशाक की प्रधानता रही हो, पर उनकी आत्मा मे सदा पूर्वीय चेतना का गौरव पूर्ण भाव रहा है।

डा करणी सिंह जी जीवन को एक खेल की भाँति देखते हैं। वे स्वयं एक अच्छे खिलाडी रहे हैं। टेनिस, गोल्फ, क्रिकेट, शूटिंग आदि उन्हे बहुत प्रिय हैं। पर वे खेल मे हार-जीत को ज्यादा महत्व नहीं देते। वे बराबर यही कहते हैं कि खेल को सदा एक खिलाडी की भावना से खेलना चाहिए। यदि कभी सफलता न भी मिले तो निराश नहीं होना चाहिए। यही सच्चे खिलाडी का मूल-मंत्र है।

डा करणीसिंह जी को खुशामद पसन्द नही। वे तो स्वय स्पष्ट वक्ता हैं और चाहते हैं कि दूसरे भी उनसे बिना किसी लाग-लपेट क बात करें। आज राजनीति मे भाग लेन वाले बहुत से व्यक्ति कहने लगे हैं कि छल-छद्म के बिना काम नही चलता। पर डा करणीसिंह जी का समस्त राजनीतिक जीवन एक खुली पुस्तक की तरह रहा है जिसमे कही कुछ भी गोपनीय नही।

• • •

श्री डा करणीसिंहजी का आदरणीय व्यक्तित्व

(श्री विद्याधर शास्त्री)

डा० करणीसिंहजी की समस्त शिक्षा-दीक्षा शैशव से स्नातकोत्तर शिक्षा-पय त मेरे अनुज डा० दशरथ शमा की देखरेख मे ही सम्पन्न हुई है। श्री करणीसिंहजी की परम आस्तिक विदुषी परमादरणीय माताजी श्री सुदर्शन कुमारीजी से समय समय पर आध्यात्मिक एव साहित्यिक चर्चा के प्रसग म मैं वर्षो से लालगढ की राजकीय जीवन-चर्या से पूण रूप से अवगत होता रहा।

इसलिए स्वभावत श्री करणीसिंहजी के समस्त जीवन विकास क्रम से मैं केवल सुपरिचित ही नही अपितु उनके सर्वांगीण अभ्युदय का सदव सूक्ष्मता के साथ निरीक्षक और उनके अभ्युदय की कामना करता रहा हू। श्री करणीसिंहजी की जन्मकुण्डली के अनुसार ये जन्मसिद्ध एक महान पुरुष के गुणो से सम्पन्न व्यक्ति हैं। इनका समस्त शशव अपने काल के महामहिम असाधारण शासकीय गुणो से सम्पन्न परम कत्तव्यनिष्ठ एक आदर्श नरपति पूज्य पितामह महाराजा श्री गगासिंहजी के सरक्षण मे निर तर एक परम अनुशासित सनिक योग्य जीवन चर्या के अनुसरण के साथ एक सुगठित यौवन की ओर अग्रसर होकर व्यतीत हुआ। शिक्षा मे प्रगति के साथ साथ आपने पितामह एव पूज्य पिता महाराजा श्री सादुलसिंहजी के चित्ताह्लादक लक्ष्यवेध मे भी असाधारण सफलता प्राप्त की। इस तरह एक ओर यदि सनिक अनुशासन था तो दूसरी ओर माता की परम आस्तिक प्रवृत्ति का प्रभाव। फलस्वरूप श्री करणीसिंहजी तत्कालवर्ती राजकुमारो के जीवन की उन प्रवत्तियो की ओर नही झुके जो मांस मदिरा प्रधान राजघरो मे प्रचलित थी। शिक्षका मे उनको डा० दशरथ शर्मा के समान स्वाध्यायशील सस्कृत, दशन, इतिहास एव राजनीतिशास्त्र के मनीषी शिक्षक का सहयोग प्राप्त हुआ अत आपका भी स्वाध्याय का क्षेत्र परम व्यापक हो गया। महाराजा श्री सादुलसिंहजी के निजी पुस्तकालय म देश विदश के उच्च कोटि के 'जीवन-चरित' तथा नाना देशो के जगली जानवरो के शिकार से सम्बन्धित साहित्य भी प्रचुर मात्रा म था। परीक्षा ग्रन्थो के अतिरिक्त महाराज कुमार करणीसिंहजी उपर्युक्त साहित्य का भी अनायास ही पारायण कर लेते थे। इसके बाद विश्व-विद्यालय मे भी आपने अपन अध्ययन को विस्तत रखा और जिन छात्रो क सम्पक मे आये, उनसे विभिन्न विषयो पर चर्चा करत रहते थे। इससे सावजनिक सम्पक की प्रवत्ति इनमे स्वाभाविक हो गयी।

रियासतो के एकीकरण के पश्चात् आप राजकीय कार्यों की व्यस्तता से मुक्त हो गये। नवीन भारत के स्वरूप को ध्यान म रख आपने अपने कमक्षेत्र बीकानेर मण्डल को राष्ट्रव्यापी बना लिया। इनका मुख्य उददश्य इस क्षेत्र की यथाशक्ति सेवा कर इसके उपेक्षित स्वरूप मे इसको समुन्नति की ओर अग्रसर करना था। जब बीकानेर रियासत के सामने विलय का प्रश्न आया तो इनके दिमाग म उसका स्पष्ट चित्र आगया था।

आप अपने पितामह के महान भक्त हैं। आप पिता और माता के भी आदश भक्त हैं तथा प्रतिदिन उनका दर्शन-पूजन करते हैं। सब धर्मों क प्रति आपका उदार

दृष्टिकोण है। भगवत कृपा से आपकी धमपत्नी भी परम आस्तिक हैं और निरन्तर पूजा-पाठ, धार्मिक कार्यों आदि म रत रहती है।

अध्ययन के साथ आप अपने व्याख्यान और प्रस्ताव उपस्थित करते है। ससद् मे आपने ही सवप्रथम जनसख्या-वद्धि को रोकने की बात जोरदार शब्दो म कही। इससे आपकी दूरदर्शिता स्वत प्रमाणित हो जाती हैं। इसके अतिरिक्त आपने लोकसभा मे लूणकरणसर क्षेत्र के लिए पीने के पानी, पुलिस एव फौज की वेतन वद्धि बीकानेर म मेडिकल कालेज की स्थापना आदि के लिए भागीरथ प्रयत्न किया और उसम सफलता प्राप्त की।

मज र के समय पाश्चात्य राष्ट्रो के अपने ऐतिहासिक और राजनीति के ज्ञान के कारण इसे अपने समयानुसार अनिवाय मानकर आपने मज र की सूचना सुनकर उसे एक साधारण समाचार के समान ही सुन लिया। प्रश्न था कि अपने समय का सदुपयोग कसे हो। अपनी श्रद्धेया माताजी के निर्देशानुसार आपन सार्वजनिक हित और अपन समय क सदुपयोग के लिए लोकसभा मे अपना समय देना ही सर्वोत्तम समझा। अपनी परदादी दादीजी एव माताजी के सेवको के लिये यथासभव कुछ न कुछ मासिक आर्थिक सहायता का प्रब ध किया है।

आपने कई ट्रस्टो की स्थापना की है। अपने को समस्त जनता का कृतज्ञ मानते हुए आप जो भी सेवा हो सके, उसको करने के लिए तत्पर रहत हैं।

आप खेलो क प्रति अनुरागी है। निशानेबाजी आपको बहुत प्रिय है और सदा इसके विकास मे अग्रसर रहते है। जय पराजय के सम्ब ध म आप खिलाडी की भावना रखते हैं और हार को भी आप खेल का एक स्वाभाविक पक्ष मानते है। आपके समान आपकी दोनो राजकुमारियो न अपन कुलानुसार लक्ष्य वेध मे पूण यश प्राप्त किया है।

आप स्वभाव से शान्त, मधुरभाषी, क्षमा शील एव धयशाली तथा उदार स्वभाव के हैं। ये अपने किसी सेवक पर भयानक रूप स क्रुद्ध नही होते। आपके व्यक्ति आपके प्रति परम आदर का भाव रखते हैं। व्यथ में, दिखावे के लिए आप एक पसा भी बर्बाद करने को तैयार नही हैं पर मन्दिर कूप-बावडी आदि सावजनिक हित क बीकानेर क्षेत्र के कार्यों मे मुक्त हस्त से देते हैं।

आपका भविष्य उज्ज्वल है। भगवत् कृपा स अनक शुभ ग्रहो की महादशा यद्यपि पितामाह क काल म ही समाप्त हो गई पुनरपि अपने ग्रहबल और अपन विद्याबल एव वैयक्तिक गुणों के कारण सदैव नव-नव यश अर्जित करते रहेंगे।

दो मार्मिक श्रद्धांजलियां

दिनांक २७ ५ ६४ को भारत के प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू का आकस्मिक निधन होने पर सारा देश शोक-सागर मे डूब गया। ससार के कोने कोने से उनको श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। लोकसभा मे स्वर्गीय प्रधानमंत्री को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए डा० करणीसिंहजी ने अपने उदगार इस प्रकार प्रकट किये —' दशवासियो के इस महान् दुःख म इन्डिपेन्डेट पार्लियामेन्टरी ग्रुप के सदस्य भी उनके साथ है और उनकी ओर स अपने परमप्रिय दिवगत प्रधानमंत्रीजी को श्रद्धांजलि अर्पित करता हू। हमार प्रिय नता के निधन स देश के इतिहास का एक महान् युग समाप्त हो गया है। वे स्वतत्रता सग्राम के एक चमकते सितारे थे और उन्ही के कारण आज हम स्वतत्र देश के स्वतत्र नागरिक की तरह स्वतत्रता का उपभोग कर रहे हैं। इस तथ्य पर सहज ही विश्वास नही होता कि दिवगत प्रधानमंत्री जसे दृढ, शक्तिशाली और महान् व्यक्ति आज हम अकेला छोड कर इस ससार से विदा होगये। वे एक विश्वनेता थे और ससार के लिए यह गव का विषय है।"

इनके गुणा का चर्चा करते हुए डा० करणीसिंहजी ने कहा —

"हमारे दिवगत प्रधानमंत्रीजी म मेरी राय मे, एक असाधारण एव विलक्षण गुण, जिससे वे अन्य देशवासियो से महान लगते थे, यह था कि वे मानव समानता मे विश्वास रखते थे और जीवन-पयन्त उन्होने इस दशन का प्रतिपादन किया। वे निष्पक्ष एव न्याय प्रिय थे और उन्होने सदा दूसरो के विचारो का आदर किया। उन्होने हमे धम निरपेक्षता का पाठ सिखलाया जिसकी आज देश को सबसे अधिक आवश्यकता है।

हमारे दिवगत प्रधानमंत्रीजी के समक्ष सबसे महान् काय गरीबी को मिटाना था। देशवासियो का जीवन-स्तर ऊँचा उठाने के लिए ही वे जिय और मरे। यह काम अभी पूरा नही हुआ है और हमे दृढता के साथ इस समस्या को हल करना है।"

देश की एकता की अपील करते हुए महाराजा साहब ने कहा—

'हमारे दिवगत प्रधानमंत्रीजी ने हमे एक होना सिखलाया और यह भी सिखलाया कि हम कठिन से कठिन समस्या का सामना एक राष्ट्र के रूप मे किस

प्रकार कर सकत हू । मैं अपने समस्त मित्रो से अपील करता हूँ कि समय आ गया है कि हम एक हो जायें और स्वर्गीय नेहरूजी के आदर्शों पर चल कर उनके अधूरे छोड कामो को पूरा करें ।"

अन्त म महाराजा साहब न कहा—

प्रधानमत्री तो आते हैं और जाते हैं लेकिन जवाहरलाल जी जैसे महान् व्यक्ति को दुबारा आने म शताब्दियाँ लगेंगी । इसी कारण से हम भारतीय वस्तुत गव कर सकते हैं कि जवाहरलाल जी एक भारतीय नागरिक थे । मैं परम पिता परमात्मा से प्राथना करू गा कि वह दिवगत आत्मा को शाति प्रदान करे ।"

भारत की इस अपार क्षति को पूरे दो वष भी नही हुए थे कि देश को एक और वज्राघात सहना पडा । भारत-पाक सघष मे राष्ट्र को विजय की ओर ल जान वाले देश मे एक नया बल साहस, ओज और आत्म-विश्वास पदा करने वाले ताकत की भाषा समझने और समझान वाले तथा शान्ति के लिए सम्मान पूण समझौते पर हस्ताक्षर करने वाले हमारे द्वितीय प्रधान मत्री श्री लालबहादुर शास्त्री का दिनाक १० १ ६६ की रात को ताशकन्द (रूस) मे एकाएक स्वगवास हो गया । दिनाक ११-१-६६ को महाराजा डा० करणीसिहजी ने अपने शोक सन्देश मे कहा —

हमारे प्रिय प्रधानमत्री श्री लालबहादुरजी शास्त्री के आकस्मिक स्वगवास की सूचना दश को एक मार्मिक धक्के क समान मिली । वह कुछ ही क्षण पूव अपन कत्तव्य-पालन के शिखर पर पहुचे थे । ताशकन्द शिखर सम्मेलन मे भारत को सफलता का श्रेय श्री शास्त्रीजी को ही है जिन्होने अपन कत्तव्य और इस महान् जिम्मेदारी को अपने स्वास्थ्य स भी आगे रखकर ताशकन्द वार्ता म भाग लिया और ऐतिहासिक सफलता प्राप्त की ।"

शास्त्री जी की सफलताओ का उल्लेख करते हुए महाराजा साहब ने कहा —

ताशकन्द वार्ता मे भारत पाक सम्बन्धो पर, जो ऐतिहासिक घोषणा सभव हो सकी वह श्री शास्त्री जी की नीति निपुणता का एक अनोखा सबूत है । हाल के भारत-पाक सघष मे श्री शास्त्री जी ने भारत का मस्तक ऊचा करके भारतीय जनता का मन मोह लिया था, परन्तु हमसे जुदा होन के कुछ समय पहले विश्व

शान्ति को बनाये रखने का उनका सकल्प भारत म ही नही, बल्कि ससार म सदा एक अमर सत्य रहेगा।"

स्वर्गीय शास्त्रीजी के गुणा की चर्चा करते हुए स दश म कहा गया है —

शास्त्रीजी एक महान् प्रधानमत्री थे, यद्यपि इस ऊँचे पद पर रहने के लिए भगवान् ने उन्हें केवल १८ महीने ही दिये परन्तु इस थोडे समय मे ही वह अपनी सादगी, कर्म—निष्ठा व दयालुता स न केवल स्वदश के करोडो लागो के प्रिय बन गये बल्कि विदेशा म भी उनके प्रति लोगा की श्रद्धा दिन प्रतिदिन बढती गयी। मेरे प्रति विभिन्न अवसरो पर जो उनका अगाध प्रेम रहा ह वह मेरे लिए चिर-स्मरणीय रहेगा।"

महाराजा साहब न अ त म अपने सन्देश म कहा —

"मैं ईश्वर स प्रार्थना करता हू कि वह दिवगत आत्मा को अमर शांति प्रदान करे तथा उनकी पूज्य माताजी और श्रीमती शास्त्री व उनके समस्त परिवार को शक्ति प्रदान कर, ताकि व इस महान् दु ख को धैर्य क साथ झेलने मे समर्थ हो सकें।

श्रीमती ललिता शास्त्री क नाम एक तार म महाराजा साहब ने अपनी सवेदना इस प्रकार प्रकट की —

हमारे प्रिय प्रधानमत्री श्री लालबहादुरजी शास्त्री के निधन से भारत और विश्व के एक महान् नेता की क्षति हुई है। श्रीमहारानीजी साहिबा बीकानेर व मैं आपकी इस निजी क्षति म, जिसम देश के करोडो लोगा की भी क्षति है अपनी हार्दिक सवेदना अर्पण करते है।"

सदस्यता

महाराजा बीकानेर डा० करणीसिंहजी सन् १६५२ से लेकर सन् १६७७ तक निरन्तर लोकसभा के सदस्य रहे। इस अवधि मे उन्होने विभिन्न केन्द्रीय मत्रालयो की सलाहकार समितियो के सदस्य के रूप में अपनी योग्यता अनुभव और विचारो से महत्त्वपूर्ण योग दिया। नीचे कुछ महत्त्वपूर्ण सलाहकार समितियो तथा अन्य सस्थाओ क नाम दिये जा रहे हैं जिनक डा० करणीसिंहजी सदस्य रहे हैं —

१ प्रधानमत्री को योजना पर सलाह देने वाली समिति

२ सिंचाई एवं विद्युत् मंत्रालय
३ परिवार नियोजन
४ सूचना एवं प्रसारण
५ उत्तरी रेल्वे उपभोक्ता समिति
६ मेडिकल प्रिगनेंसी बिल कमेटी
७ संसदीय अध्ययन संस्थान
८ एन० आर० ए० आई० गवर्निंग बोर्ड
९ राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन
१० जवाहरलाल नेहरू स्मारक ट्रस्ट तथा फंड समिति
११ विक्टोरिया मेमोरियल कलकत्ता
१२ कारखानों में उत्पादित शस्त्र-जांच समिति
१३ गोविन्द-वल्लभ ट्रस्ट
१४ राजस्थान विश्वविद्यालय सिनेट
१५ गांधी विद्या-मंदिर सरदारशहर के लगभग २-३ वर्षों तक कुलपति।